तोहफ़ा-ए-बग़दाद

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: तोहफा-ए-बग़दाद
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवाद व टाईप	: इब्नुल मेहदी लईक मुरब्बी-ए-सिलसिला, एम-ए हिंदी
सेटिंग	: नईम उल हक़ क़ुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) सितम्बर 2020 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Tohfa-e-Baghdad
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator & Type	: Ibnul Mehdi Laeeque, Murabbi-e-Silsila, M.A Hindi
Setting	: Naeem-ul-Haque Qureshi Murabbi Silsila
Edition	: 1st Edition (Hindi) September 2020
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "तोहफा-ए-बग़दाद" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक एम. ए. ने किया है। तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक एम. ए. और आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की

---

* **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

तोहफ़ा-ए-बग़दाद

यह पुस्तक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुहर्रम 1311 हिजरी तदनुसार जुलाई 1893 ई० में लिखी। इसके लेखन का कारण यह हुआ कि एक व्यक्ति सय्यद अब्दुल रज्ज़ाक क़ादरी बग़दादी ने हैदराबाद दक्षिण से एक विज्ञापन और एक पत्र अरबी भाषा में आपको भेजा जिसमें उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे को शरीअत के विरुद्ध और ऐसे मुद्दई को क़त्ल योग्य और "अत्तब्लीग़" को क़ुरआन के विरुद्ध बताया था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके विज्ञापन और पत्र को नेक नीयत पर आधारित समझ कर स्नेहपूर्वक उत्तर दिया और अपने मामूरियत* के दावे और मसीह नासरी की मृत्यु का प्रमाण और उम्मत-ए-मुहम्मदिया में ख़ुदाई इल्हामों का सिलसिला और मुजद्दिदों के आते रहने का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि इस पत्र के लिखने का उद्देश्य यह है कि आप अपने विचारों का सुधार करें और यदि किसी बात की वास्तविकता आप को समझ न आए तो उसके बारे में मुझ से पूछ लें। इसी प्रकार लिखा कि मौलवियों के कुफ्र के फ़तवों से धोखा न खाएं अपितु मेरे पास आएं और स्वयं अपनी आंखों से हालात देखें ताकि वास्तविकता को जान सकें और यदि आप लंबी यात्रा का कष्ट सहन न कर सकें तो अल्लाह तआला से मेरे बारे में एक हफ्ते तक इस्तख़ारा * करें। इस्तख़ारा का तरीका बता कर फ़रमाया इस्तख़ारा आरंभ करने के समय मुझे भी सूचना दें ताकि मैं भी उस समय दुआ करूं। आप ने इस पुस्तक के अंत में दो क़सीदे भी लिखे।

विनीत

जलालुद्दीन शम्स

---

* **मामूरियत-** ख़ुदा की ओर से मानवजाति के सुधार के लिए आदेशित होना- अनुवादक।

* **इस्तख़ारा-** किसी धार्मिक कृति अर्थात नमाज़ या दुआ के माध्यम से यह जानना कि अमुक कार्य शुभ है या अशुभ- अनुवादक।

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله والسلام علىٰ عباده الذين اصطفٰى، وبعد:
فإنى رأيت فى هذه الايام اشتهارا ومكتوبًا أَرسل إلىَّ السيد عبدالرزاق القادرى البغدادى من حيدرآباد دكن۔ فلما قرأت الاشتهار إذا هو من أخ مؤمن يخوّفنى كما يخوّف الملِكُ المقتدرُ المرتدَّ الكافرَ الفجّارَ ويسل لقتلى السيف البتّار وقد صال علىَّ كرجل يهجم على رجل فزفر زفرة القيظ وكاد يتميّز من الغيظ ونظر إلىَّ كالمحملقين۔ ورأيت أنه ما مسَّ وسائل العرفان وما دنا أواصر تحقيق البيان

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसाएँ ख़ुदा के लिए हैं और सलामती हो उसके उन बन्दों पर जिन्हें उसने चुना। (प्रशंसाएँ और सलाम) के पश्चात स्पष्ट हो कि इन दिनों एक विज्ञापन और एक पत्र मेरी नज़र से गुज़रा जिसे सय्यद अब्दुर्रज़्ज़ाक क़ादिरी बग़दादी ने हैदराबाद दक्किन से मुझे भेजा है। जब मैंने वह विज्ञापन पढ़ा तो वह एक ऐसे मोमिन भाई की ओर से था जो मुझे यों डरा धमका रहा है जैसे कोई बहुत शक्तिशाली बादशाह किसी मुर्तद, काफ़िर और दुष्ट चरित्र को धमका रहा हो और मेरे वध के लिए काटने वाली तलवार सूंत रहा हो। और उसने मुझ पर ऐसा आक्रमण किया है जैसे कोई मनुष्य दूसरे पर टूट पड़े। वह क्रोधाग्नि से भड़क उठा और निकट था कि क्रोध की तीव्रता से फूट पड़े। और उसने मुझे टेढ़ी नज़र से देखा और मैंने पाया कि उसे इर्फान (आध्यात्म ज्ञान) के साधनों से कोई भी रुचि नहीं और न वर्णन की छान-बीन से कोई संबंध है। उसने मुझे काफ़िर कहा, मुझे गालियां दीं और मुझे

و كفّـرنى وسـبّنى وحسـبنى مـن الذيـن كفـروا أو ارتـدوا فـأراد أن يكـون أوّلَ اللاعنـين والقاتلـين۔ وإنـه قـد فتـن قلـوب بعـض النـاس وأدناهـم مـن شـر الوسـواس فسـنح لى أن أكتـب فى هـذه الرسـالة مـا ينفعـه وينفـع عـرب الحرمَـين ويسـرّ الناظريـن۔ فـالآن نكتـب أوّلًا اشـتهاره ومكتوبـه ثـم نكتـب جوابـه ونهـذّب أسـلوبه. فأيهـا القـارئ! انظُـرْ فيـه بنظـر الـوداد زادك الله فى الصـلاح والسـداد وهُنِّيـتَ بمـا أُوتيـتَ ومُلِّيـتَ بمـا أُولِيـتَ ومـا توفيقـى إلا بـالله النصـير المعـين.

काफ़िरों और मुर्तदों में से समझा। इस प्रकार उसने चाहा कि वह लानत करने वालों और क़त्ल करने वालों में से पहला हो। उसने कुछ लोगों के दिलों को फित्ने (परीक्षा) में डाला और उन्हें शैतान की बुराई के निकट कर दिया। तब मेरे लिए यह अवसर पैदा हुआ कि मैं इस पुस्तक में वे बातें लिखूं जो उसके लिए भी और हरमैन (मक्का-मदीना) में बसने वाले अरबों के लिए भी लाभप्रद हों और पाठकों को प्रसन्न करें। अत: हम अब आरंभ में उसका विज्ञापन और उसका पत्र दर्ज करते हैं फिर उसका उत्तर लिखेंगे और उसकी शैली का सुधार करेंगे। अत: हे पाठक! अल्लाह तुझे नेकी और सच बोलने में बढ़ाए। तू इस (पुस्तक) को प्रेम की दृष्टि से देख और जो तुझे दिया जा रहा है वह तुझे मुबारक हो और जो दान किया जा रहा है उससे लाभान्वित हो और मेरा जो भी सामर्थ्य है वह अल्लाह तआला का उपकार है जो सर्वोत्तम सहायक और मददगार है।

الاشتهار من السيّد البغدادی
رحمه الله وهداه

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبى بعده، وعلى آله وصحبه وحزبه وبعد: فمما لا يخفى على أساطين الدين المتين وعلماء أئمة المسلمين ما ظهر ظهور الشمس وما بان بيان الامس من خرافات و كفريات المرزا غلام أحمد القادياني الپنجابي وما ادّعاه من أنه المسيح بن مريم وأنه يُلقَى إليه الإلهامات

सैयद बग़दादी साहब का विज्ञापन
अल्लाह उस पर दया करे और उसे हिदायत दे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा एकमात्र ख़ुदा को शोभनीय है और दरूद तथा सलाम हो उस महान अस्तित्व पर जिसके बाद कोई नबी नहीं और आपकी आल, सहाबियों तथा आपकी जमाअत पर। तत्पश्चात जो बात अमाइद-ए-दीन (धर्म के सुदृढ़ स्तंभ) और मुसलमान उलमा के इमामों से छुपी नहीं और जो ऐसी स्पष्ट है जैसे सूर्य का प्रकटन और ऐसी ज़ाहिर है जैसे गुज़रा हुआ दिन, और वह हैं मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी पंजाबी की खुराफात (बेहूदा बातें) और कुफ़रियात और उसका यह दावा कि वह मसीह इब्ने मरियम है और यह कि उसे अल्लाह तआला की ओर से इल्हाम (ईशवाणी) होते हैं और उस पर वह्यी (ईशवाणी) होती है और उससे आमने-सामने बातें करता है और संबोधित होता है और यह कि उसे अल्लाह ने सलीब

من حضرة الحق سبحانه وتعالىٰ ويُوحِي إليه ويُكلّمه كفاحًا ويُخاطبه شفاهًا وأن الله أرسله لكسر الصليب وقتل الخنزير وإقامة الحدود الشرعية والله تعالى يُخاطبه ويُناجيه بقوله: يا عيسى بن مريم إنى أرسلتك للناس كافّةً فاصدَعْ بما تؤمر وأعرِضْ عن الجاهلين وأن بيعته حق وأن عيسى توفّاه الله وليس بحيّ وأنه هو عيسى بذاته وغير ذلك مما ترتجّ منه الاضالع وتستكّ منه المسامع كما رأيته مسطورا فى كتابه المسمى بمرآة كمالات الإسلام الذى عارض به القرآنَ وهتَك به شريعة سيّدِ وُلْدِ عدنان علاوة على ما ذكره فى كتبه السابقة من أساطيره

तोड़ने, खिंज़ीर (सूअर) क़त्ल करने और शरीअत को स्थापित करने के लिए भेजा है और यह कि अल्लाह तआला उससे उन शब्दों के साथ संबोधित होता है और रहस्यात्मक अंदाज़ में कहता है कि हे ईसा इब्ने मरियम! मैंने तुझे समस्त मानवजाति की ओर भेजा है और जिस बात के पहुँचाने का तुझे आदेश दिया जाता है वह लोगों को विस्तृत रूप से बता दे और उन अज्ञानियों की बात से बच और यह कि उसकी बैअत करना फर्ज़ है और यह कि अल्लाह ईसा अलैहिस्सलाम को मृत्यु दे चुका है और वह जीवित नहीं और यह कि वह स्वयं ही ईसा है। और इसके अतिरिक्त ऐसे-ऐसे दावे कि जिसे सुन कर पसलियाँ फड़क उठें तथा कान के पर्दे फट जाएँ। जैसा कि मैंने उसकी पुस्तक "आईना कमालाते इस्लाम" में लिखा हुआ देखा है। जिस (पुस्तक) के द्वारा उसने क़ुरआन का मुक़ाबला किया है और सय्यद वुल्दे अदनान (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की शरीअत का अपमान किया है। इसके अतिरिक्त उसने अपनी पहली पुस्तकों में भी ऐसे झूठे किस्से वर्णन किए हैं कि जिन्हें केवल वही व्यक्ति सहन कर सकता

الكاذبة. وهذا مما لا يطيق الصبر عليه إلا مَن طمس الله بصره وطبع على بصيرته. والعجب العجاب أن في ديار الهند عامّةً وفي رياسة حيدر آباد خاصّة مِن فحول العلماء وأشبال الفضلاء ما يضيق عن كثرتهم نطاق الحصر هذا مع كونهم علموا واطّلعوا على شقاشق ذلك الدّجال المضلّ الضالّ البطّال الذي لا يُطهّره في الدنيا إلا السيف البتّار ولا في الآخرة إلا النّار فلم أر مَن شمّر عن ساعدِ جِدّه وأَرْوى في مجال ميدان الحق فِرَنْدَه و كفَحه بصارمِ همّته وبيانه وطعَنه بسنان قلمه وتبيانه وردَّ أقواله وأوقفَه على شؤم أفعاله وأنقذ عباد الله المؤمنين من شر فتنته ونصر

है जिसकी आँखों को अल्लाह ने अंधा कर दिया हो और जिसकी दृष्टि पर मुहर लगा दी हो। और अत्यंत आश्चर्य की बात तो यह है कि भारत देश में सामान्य रूप से और हैदराबाद रियासत में विशेष रूप से ऐसे-ऐसे प्रकांड और साहसी विद्वान मौजूद हैं जिनकी संख्या गणना से बाहर है, बावजूद इसके कि उनको उस दज्जाल, भटकाने वाले, गुमराह और अत्यंत झूठे व्यक्ति की चापलूसी का ज्ञान था और वे इस से सूचित थे। ऐसे व्यक्ति का संसार में एक तेज़ तलवार और परलोक में नर्क की अग्नि ही किस्सा तमाम कर सकती है। मुझे कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई न दिया जिसने (उसे क़त्ल करने के लिए) अपनी कमर कसी हो और अपनी तेज़ धार तलवार की, सत्य के मैदान की युद्धभूमि में प्यास बुझाई हो और अपने साहस तथा वाणी की तलवार से उस का मुक़ाबला किया हो और अपने लेखन और भाषण के बाण से उसे घायल किया हो और उसके कथनों का खंडन किया हो और उसके मनहूस कार्यों से उसे रोका हो और अल्लाह के मोमिन बन्दों को उसके उपद्रव से बचाया हो और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

دين رسول الله صلعم وشريعته۔ فوا أسفاه! ووا أسفاه! ثم وا أسفاه على أهل همّة البطون إنَّا لله وإنَّا إليه راجعون. وحيث إني اطلعت على كل صفحات كتاب ذلك الضال الممسوخ الدجّال وما هتَك به شريعة سيّد الأنام وما تعدّى بالازدراء على سيدنا عيسٰى عليه السلام ووقفتُ على تمام عباراته التي لا يتفوّه بها إلا كل مخذول أو زنديقًا شاكًّا في رسالة الرسول مع تناقُض أقواله عن بعضها بعض التزمت وبالله أستعين إذ هو الناصر والمعين أن أرُدّ كتابه حرفًا بحرفٍ وصفًّا بصفٍّ بكتاب أسمّيه:

"كشف الضلال والظلام عن مرآة كمالات الإسلام"

धर्म और शरीअत की सहायता की हो। अत: पेट के लिए दौड़-धूप करने वालों पर खेद! खेद! और फिर खेद! इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन। और मैंने जैसे ही उस गुमराह, विकृत रूप वाले दज्जाल की पुस्तक के समस्त पृष्ठों का अध्ययन किया और जो उसने सय्यदुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीअत का अपमान किया और सय्यदना ईसा अलैहिस्सलाम का अपमान करते हुए सीमा पार की। अत: (जैसे ही) मुझे उसकी उन समस्त तहरीरों का ज्ञान हुआ जिन तहरीरों को सिवाए ऐसे व्यक्ति के जो अल्लाह की सहायता से वंचित हो या अधर्मी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत में संदेह करने वाला हो, कोई भी अपनी ज़बान पर नहीं ला सकता। (विशेष रूप से) ऐसी परिस्थिति में कि उसके कथनों में परस्पर विरोधाभास भी पाया जाता हो। तो मैंने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया और मैं अल्लाह की सहायता मांगता हूँ क्योंकि वही वास्तविक सहायता करने वाला है कि एक पुस्तक के माध्यम से जिस का नाम मैं كشف الضلال و الظلام عن مرآة كمالات الاسلام (अर्थात इस्लाम के चमकदार चेहरे

ردًّا یسرّ إن شاء اللّٰہ نظر الناظر ویشرح بفضل اللّٰہ القلب والخاطر. ثم عزمت أن أرسل کتاب المردود علیہ إلی العراق وبغداد لیحکمون العلماء الاعلام علی مُصنفہ کونَہ من أھل الزیغ والإلحاد فأکون إن شاء اللّٰہ السبب الاقوی لحسم مادّۃ ھذا الفساد وجلاء تلک الغُمّۃ المدلھمّۃ عن سائر العباد خدمۃً منی للشریعۃ الاحمدیۃ وغیرۃً علی ناموس المِلّۃ المحمدیۃ۔ وأؤمل والامل باللّٰہ قوی أن یکون إکمال ھذا الردّ علی المردود بظرف ثلاثۃ أشھر فوجب أوّلًا شھرُ الحال بوجہ الاشتھار لکافّۃ مَن وقف علیہ أن یعلموا علمًا یقینًا لا مِریۃ فیہ مِن أن ھذا الممسوخ وأمثالہ یُطلَق

से कुरीतियों को दूर करना-अनुवादक) रखूंगा, मैं उस (मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद) की पुस्तक का एक-एक शब्द और एक-एक पंक्ति के साथ खंडन लिखूं। ऐसा खंडन जो इंशाअल्लाह पाठक की दृष्टि को आनन्द प्रदान करेगा और अल्लाह की कृपा से सीने और दिल खोल देगा। फिर मैंने इरादा किया कि (पहले) इस पुस्तक को जिसका खंडन लिखना उद्देश्य है ईराक़ और बग़दाद भेजूं ताकि (वहां के) प्रसिद्ध उलमा यह निर्णय करें कि इस (आईना कमालाते इस्लाम) का लेखक एक धर्म विमुख और नास्तिक है। अत: (इस प्रकार) मैं इंशाअल्लाह इस उपद्रवी तत्व का उन्मूलन करने और समस्त ख़ुदा के बन्दों से घोर अंधकार को दूर करने का शक्तिशाली कारण बन जाऊंगा और यह मेरी ओर से अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीअत के लिए बहुत बड़ी सेवा और मुहम्मदी उम्मत के सम्मान के लिए स्वाभिमान का (बहुत बड़ा) इज़हार होगा। और मैं आशा रखता हूँ और मुझे अल्लाह से दृढ़ आशा है कि इस (पुस्तक) का खंडन तीन महीने में पूर्णता को पहुंच जाएगा। परन्तु सर्वप्रथम आवश्यक है कि परिस्थिति से अवगत समस्त लोगों

عليهم قول النبي صلى الله عليه وسلم دجّالون كذّابون يأ
تونكم بالاحاديث بما لم تسمعوا أنتم ولا آباؤكم فإياكم
وإياهم لا يُضلّونكم ولا يفتنونكم۔ هذا والله الهادى إلى
سواء السبيل فهو حسبنا ونعم الوكيل فقط.

المشتهر

السيد عبد الرزاق القادرى النقشبندى

الرفاعى البغدادى وارد

حال بلدة حيدر آباد۔

को इसी महीने में विज्ञापन द्वारा बिना किसी संदेह के निश्चित तौर पर यह ज्ञात हो जाए कि इस विकृत रूप वाले व्यक्ति और इस जैसे दूसरे लोगों पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह हदीस चरितार्थ होती है कि बहुत से झूठे दज्जाल तुम्हारे समक्ष ऐसी-ऐसी हदीसें प्रस्तुत करेंगे कि जिन्हें न तो तुमने और न ही तुम्हारे पूर्वजों ने सुना होगा। इसलिए तुम उन से ऐसे बच कर रहना कि वे न तो तुम्हें गुमराह कर सकें और न ही आज़माइश में डाल सकें। यह (मेरा सन्देश है) और अल्लाह ही सद्मार्ग की ओर मार्गदर्शन करने वाला है। अत: वही हमारे लिए पर्याप्त है और वही सबसे अच्छा करसाज़ (काम बनाने वाला) है। इति

प्रकाशक

सय्यद अब्दुर्रज़्ज़ाक क़ादिरी, नक्शबंदी

अर्रिफाई अलबग़दादी

वर्तमान हैदराबाद

مکتوب السّید البغدادی
رحمه الله و هداه

بسم الله الرحمن الرحیم

الحمد لله و الصّلاة و السلام علی رسول الله و آله و صحبه و من والاہ۔ الوصیّة لی و لإخوانی بتقوی الله من العبد المُفتقر إلی رحمة الملِك الحنّان المدعو بالسید عبد الرزاق القادری النقشبندی البغدادی أناله الله شفاعة نبیه الهادی و حفِظه من کید الشیاطین و الاعادی إلی خدمة الاجلّ و المطاع المبجّل العالم الفاضل و المجتهد الکامل حلّالُ رموز المشکلات

बग़दादी साहिब का पत्र
(अल्लाह उस पर दया करे और उसे हिदायत दे)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वास्तविक प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए ही शोभनीय है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम हो और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत पर और समस्त सहाबियों पर और प्रत्येक उस व्यक्ति पर जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम का संबंध रखता है। (यह लेख) अपने और अपने भाइयों के लिए अल्लाह के तक़्वा (संयम) की वसीयत है, इस विनीत की ओर से जो समस्त ब्रह्मांड के मालिक और अत्यंत कृपालु ख़ुदा की दया का मोहताज है जिसे सय्यद अब्दुर्रज़्ज़ाक क़ादरी नक्शबंदी बग़दादी के नाम से पुकारा जाता है अल्लाह उसे सच्ची हिदायत वाले नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की शिफ़ाअत प्रदान करे

بألطف المعانى وأظرف الترصيف والمبانى المولوى مرزا غلام أحمد القادياني حفظه الله من زلة القدم وعثرة اللسان والقلم بحُرمة النبى الاكرم صلى الله عليه وسلم آمين. أما بعد فالسلام عليكم ورحمة الله وبركاته۔ لا يخفى أنه قد اطلعتُ على كتابكم المسمى بمرآة كمالات الإسلام وعلِمت بما فيه وأحطت فهمًا بمعانيه وفحاويه ونكاته ومبانيه والجواب ما نرى لا ما تسمع ولو لم تقسمون على من اطّلع على ذلك الكتاب بأن يردّ خطأه ويوضِّح لفظه لما صرفنا عِنانَ القلم إلى ردّه۔ وقد جرت سُنّة أهل العلم

और उसे समस्त दुष्टों और शत्रुओं की योजनाओं से सुरक्षित रखे। सेवा में महामान्य, सम्माननीय, विद्वान, प्रतिष्ठित, पूर्ण प्रयास करने वाले जो कठिन से कठिन रहस्यों के अत्यंत सूक्ष्म अर्थ और बहुत सुन्दर तथा माहिर तरक़ीब व तरतीब के साथ व्याख्या करने वाले मौलवी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी हैं (अल्लाह उसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए हर प्रकार की कमज़ोरी और ज़बान और कलम की प्रत्येक ठोकर से सुरक्षित रखे) आमीन। तत्पश्चात अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू। यह बात छुपी हुई नहीं कि मैंने आप की पुस्तक "आईना कमालाते इस्लाम" का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और जो कुछ उसमें लिखा गया है उसका मुझे ज्ञान हुआ, और मैंने इसके अर्थ और रहस्यों और इसकी बारीकियों और सिद्धांतों को अच्छी तरह समझ लिया। उत्तर देखने पर दिया जाता है सुनने पर नहीं और यदि तुम ने इस पुस्तक का अध्ययन करने वाले व्यक्ति को यह क़सम न दी होती कि वह इस पुस्तक की प्रत्येक ग़लती का खंडन और इसके प्रत्येक शब्द की व्याख्या करे तो हम अपनी क़लम को इस (पुस्तक) के खंडन की ओर न फेरते। परन्तु पुराने तथा नए

من قديم الزمان وحادثه فى الردّ على الباطل وبالتزييف على العاطل۔ ولعل ورَد كم الاشتهار فى هذا الباب فلا تكونوا بالوجل وارفعوا عنكم نقاب الخجل۔ فلعل أن لا يتيسر طبع كتابنا لقرب سفرنا إلى الوطن لكن أرجو أن تتحفونى بنسخة من مرآتكم فإن النسخة التى هى عندى عارية بشرط أن تُسرعون بإرسالها فى البريد والسلام خير الختام۔

ملتمسه السيّد عبد الرزاق القادرى النقشبندى البغدادى

غفر الله له

مؤرخة ۲۸ ذى الحجة سنة ۱۳۱۰ هجرى

ज़माने से विद्वानों का यही तरीक़ा रहा है कि वे (सदैव) झूठ का खंडन करते और मूर्ख की मूर्खता को प्रदर्शित करते हैं। सम्भवत: आप को इस बारे में हमारा विज्ञापन मिल चुका होगा। अत: आप भयभीत न हों और लज्जा का पर्दा अपने (चेहरे) से उठा दो। अपने देश की ओर वापसी की यात्रा निकट होने के कारण शायद हमारी पुस्तक प्रकाशित न हो सके। परन्तु मुझे आशा है कि आप अपनी पुस्तक "आईना कमालाते इस्लाम" की एक प्रति मुझे उपहार स्वरूप प्रदान करेंगे। क्योंकि जो प्रति मेरे पास है वह उधार के रूप में है इसलिए आप उसे डाक के द्वारा जल्दी भेज दें। वस्सलाम खैरुल खिताम।

निवेदन कर्ता

सय्यद अब्दुर्रज्ज़ाक क़ादरी नक़्शबंदी बग़दादी

अल्लाह उस के पापों को क्षमा करे

दिनांक 28 ज़िल हज्जा 1310 हिज्री

جواب الاشتهار والمكتوب

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله ربّ العالمين والصلاة والسّلام على رسوله محمد سيّد النبيّين وخاتم المرسلين وفخر الاولين والأخرين ومنبع كل فهم وحزم ونور وهدى وسراج منير للسالكين المتّبعين وعلى آله الهادين وأصحابه الذين شادوا الدّين وعلى كل من تبعه من الاولياء والشهداء والصلحاء أجمعين. السّلام عليكم أيها الصلحاء المعزَّزون الموقَّرون المعظَّمون مِن إخوانكم المحقَّرين المكفَّرين المطرودين

विज्ञापन और पत्र का उत्तर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वास्तविक प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए शोभनीय है जो समस्त संसार का रब है और दरूद व सलाम हो उसके रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सय्यदुल अंबिया, ख़ातमुलमुर्सलीन, फ़ख़रुल अव्वलीन वल आखिरीन पर जो प्रत्येक बुद्धि एवं विवेक और नूर एवं हिदायत के स्रोत और समस्त अनुसरण करने वाले सदाचारियों के लिए चमकते हुए सूर्य हैं। और (दरूद व सलाम हो) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ौम पर, जो मार्गदर्शक और रहनुमा हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबियों पर जिन्होंने धर्म को सुदृढ़ और मज़बूत किया। इसी प्रकार वलियों, शहीदों और सुलहा (सदाचारियों) के प्रत्येक व्यक्ति पर (दरूद व सलाम हो) जिन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया। हे प्रतिष्ठित महानुभावो! तुम्हें अपने उन भाइयों की ओर से अस्सलामो अलैकुम जो तिरस्कृत समझे गए, काफ़िर क़रार दिए गए, धुतकारे गए और जिन्हें अलग-

المهجوريــن۔

وبعــد فإنــه قــد بلغــنى مكتوبــك واشــتهارك يــا أخى بقريــتى "قاديــان" فأشــكرك وأدعــو لــك فإنــك ذكرتــنى وذا كرتــنى سُبُــلا تحســبها مســتقيمة ولُمْتَــنى غــيرةً عــلى ديــن الله ورســوله كالمغضبــين فجــزاك الله أحســن الجــزاء وأحســن إليــك وهــو خــير المحســنين۔ وأرى أنّــك رجــل صالــح طيّــب فإنــك مــا صــبرت عــلى مــا حــاك فى صــدرك ولــم تــألُ نُصحًــا ولــم تداهــن قــولا و كذلــك سِــيَرُ الصالحــين. ولكــن أيهــا الخِــلُّ الــودود والحِــبُّ المــودود عفــا الله عنــك قــد اســتعجلتَ وحســبت أخــاك المؤمــن بــالله ورســوله و كتابــه مرتــدًّا ومــن الكافريــن۔ ولوّمتــنى ورمَيتــنى بالسِّــهام

थलग कर दिया गया।

तत्पश्चात् हे मेरे भाई! तुम्हारा पत्र और विज्ञापन मुझे अपनी बस्ती क़ादियान में मिल गए हैं जिसके लिए मैं तुम्हारा धन्यवादी हूँ और तुम्हारे लिए दुआ करता हूँ क्योंकि तुमने मुझे नसीहत की और मुझे वे मार्ग याद दिलाए जिन्हें तुम सच्चा समझते हो। इसी प्रकार तुम ने अल्लाह और उसके रसूल के धर्म के लिए स्वाभिमान दिखाते हुए क्रोधित लोगों के समान मुझे निंदा का निशाना बनाया अल्लाह तुम्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। वह तुझ पर उपकार करे और वह उपकार करने वालों में सबसे बेहतर है। मेरी राय है कि तुम नेक और अच्छे इन्सान हो इसलिए तुम अपने हृदय के दर्द और चुभन को सहन न कर सके और तुमने नसीहत करने में कोई कमी न की और न कथन द्वारा कोई झूठ बोला और यही सदाचारियों का ढंग है। परन्तु हे प्रिय मित्र और प्रिय साथी! (अल्लाह तुम्हें क्षमा करे) तुम ने जल्दबाज़ी से काम लिया और तुमने अल्लाह और उसके रसूल और उसकी किताब पर ईमान लाने वाले अपने भाई को मुर्तद और काफ़िर समझा और वास्तविकता

قبل أن تُفتِّش حقيقة الامر وتفهم سرّ الكلام أو تستفسر مني كدأب المحققين. والعجب منك ومن مثلك رجل صالح تقيّ نقيّ حليم كريم أنك تكتب في اشتهارك أن جزاء هذا الرجل المرتد أن يُقتَل بالسّيف البتّار أو يُلقى في النار كما هو جزاء المرتدين.

أيها الاخ الصالح أسرّك الله ورعاك وحفظك وحماك وفتح عينك وهداك لا تخوّفني من سيفٍ بتّارٍ ولا رُمح ولا نار وقد قُتلنا قبل سيفك بسيفٍ لا تعلمه وذُقنا طعم نارٍ لا تعرفها وإنّا إن شاء الله بعد ذلك من المنعَمين. أيها العزيز إن الذين أخلصوا قلوبهم لله وأسلموا وجوههم لله وشربوا كأسًا

की छान-बीन करने, बात के रहस्य को समझने या शोधकर्ताओं का ढंग अपनाने वालों के समान मुझ से बात-चीत करने से पहले ही तुमने मेरा अपमान किया और मुझ पर तीर बरसा दिए। तुम पर और तुम्हारे जैसे नेक पुरुष, संयमी, पवित्र और साफ़ और विनम्र और कृपालु पर आश्चर्य होता है कि तुम अपने विज्ञापन में लिखते हो कि इस मुर्तद व्यक्ति का दंड यह है कि या तो इसे तेज़ तलवार से मार दिया जाए या इसे आग में डाल दिया जाए जैसा कि मुर्तदों की सज़ा होती है।

हे नेक भाई! अल्लाह तुझे ख़ुश रखे। तेरी देख-भाल करे, तेरी रक्षा और समर्थन करे, तेरी आँखें खोले और तुझे हिदायत दे। तू न तो मुझे काटने वाली तलवार से डरा और न किसी तीर से और न आग से। हम तो तेरी तलवार से पहले ही एक ऐसी तलवार से क़त्ल हो चुके हैं जिसे तू नहीं जानता। और हमने उस आग का स्वाद चखा है जिससे तू अनजान है। हमें इंशाअल्लाह इसके बाद ईनामों से सुशोभित किया जाएगा। मेरे प्रिय! ऐसे लोग जिन्होंने अपने दिलों को अल्लाह के लिए शुद्ध कर लिया हो और अल्लाह के समक्ष सिर झुका चुके हों और अल्लाह के प्रेम का प्याला पी चुके हों, उन्हें उनका

من حُبّ الله فلا يضيّعهم الله ربّهم ولا يتركهم مولاهم ولو عاداهم كلّ ورق الاشجار و كل قطرة البحارِ و كل ذرة الاحجار و كلّ ما فى العالمين۔ بل الذين يطيعونه ولا يبتغون إلا مرضاته هم قوم لا يحزنهم إلا فراقه وإذا وجدوا ما ابتغوا فلا يبقى لهم همٌّ ولا غمٌّ بعد ذلك ولو قُتلوا وأُحرقوا ولا يضرّهم سبُّ قوم ولا لعنُ فرقة ويجعل الله كلَّ لعنةٍ بركةً عليهم و كلَّ سبٍّ رحمةً فى حقهم۔ ألا يعلم ربنا ما فى صدورنا؟ أأنت أعلم منه؟ فلا تكن من المستعجلين۔

يا أخِى ما تركتُ السبيل وما عاصيتُ الرب الجليل۔ وليس كتابنا إلا الفرقان الكريم وليس نبيّنا ومحبوبنا إلا

पालनहार अल्लाह बर्बाद नहीं करता और न उनका मौला उन्हें छोड़ता है चाहे वृक्षों का हर पत्ता, समुद्रों की हर बूँद, पत्थरों का हर कण, और संसार की प्रत्येक वस्तु उनकी दुश्मनी पर उतर आए। अपितु जो लोग उसका आज्ञापालन करते हैं और उसकी इच्छाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहते ऐसे लोगों को उसके वियोग के अतिरिक्त और कोई चीज़ दु:ख नहीं पहुंचाती और फिर जब वे अपना उद्देश्य प्राप्त कर लेते हैं तो उसके बाद उनके लिए कोई दु:ख दर्द शेष नहीं रहता चाहे वे मारे जाएँ या जला दिए जाएँ। किसी क़ौम की गालियां और किसी संप्रदाय की मलामत उन्हें हानि नहीं पहुंचाती। और अल्लाह प्रत्येक लानत को उनके लिए बरकत और प्रत्येक गाली को उनके लिए रहमत बना देता है। क्या हमारा रब हमारे हृदयों की बातों को नहीं जानता? क्या तुम उस से अधिक जानते हो? अत: जल्दबाज़ न बनो।

हे मेरे भाई! मैंने (सच्चाई के) मार्ग को नहीं छोड़ा और न ही मैंने प्रतापी ख़ुदा की अवज्ञा की है। पवित्र क़ुरआन के अतिरिक्त हमारी कोई पुस्तक नहीं और रहीम मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त हमारा कोई नबी और प्रिय नहीं। अल्लाह की लानत हो उन लोगों पर जो आप सल्लल्लाहो अलैहि

المصطفى الرحيم ولعنة الله على الذين يخرجون عن دينه مثقال ذرّة فهم يدخلون جهنم ملعونين. ولكن يا أخى إن فى كتاب الله نِكاتًا ومعارف لا يزاحمها عقيدة ولا يناقضها حكمٌ ولا يُلقّاها من الامم إلا الذى وجد وقت ظهورها وكان من المنقطعين المبعوثين. ولله أسرارٌ وأسرارٌ وراء أسرارٍ لا تطلع نجومها إلا فى وقتها فلا تجادل الله فى أسراره. أتجترء على ربك وتقول لما فعلت كذا ولم ما فعلت كذا؟ يا أخِى فوِّضْ غيب الله إلى الله ولا تدخل فى غيوبه ولا تزِخ دقائق المعارف التى دقّ مأخذها فى ظواهر الشرع ولا تَقْفُ ما ليس لك به علم وثبِّتْ نفسك على سبيل المتقين.

वसल्लम के धर्म से कण भर भी बाहर निकलते हैं। वे लोग अपमानित हो कर नर्क में प्रवेश करेंगे परन्तु हे मेरे भाई! अल्लाह की पुस्तक (पवित्र क़ुरआन) में ऐसे-ऐसे रहस्य और बारीकियाँ हैं कि कोई आस्था उनके मुक़ाबले पर ठहर नहीं सकती और कोई आदेश उसको तोड़ नहीं सकता। उन (रहस्यों और बारीकियों) को क़ौमों में से केवल वही प्राप्त करेगा जिसने उनके प्रकटन का समय पाया और वह अल्लाह में फ़ना होने वाले लोगों और रसूलों में से होगा। अल्लाह के बहुत से रहस्य हैं और ऐसे सूक्ष्म अति सूक्ष्म हैं जिनके सितारे केवल अपने समय पर ही ज़ाहिर होते हैं। अत: अल्लाह से उसके रहस्यों के बारे में झगड़ा न कर। क्या तू अपने रब के सामने निडरता से यह कह सकता है कि तूने ऐसे क्यों किया या तूने ऐसे क्यों नहीं किया? हे मेरे भाई! अल्लाह के रहस्य को अल्लाह के पास ही रहने दे और उसकी रहस्यात्मक बातों में हस्तक्षेप न कर और उन गूढ़ रहस्यों को जिनके उदाहरण शरीअत (पवित्र क़ुरआन) की स्पष्टताओं में से बड़े महान हैं उन्हें अनदेखा न कर। और जिस चीज़ का तुझे ज्ञान नहीं, उसके पीछे न पड़ और अपने आप को संयमियों के मार्ग पर स्थापित रख।

ما كان إيمان الاخيار من الصحابة والتابعين بنُزول المسيح عليه السلام إلا إجماليا وكانوا يؤمنون بالنُزول مجملا ويفوّضون تفاصيلها إلى الله خالق السماوات والارضين۔ وكيف يجوز نزول المسيح عليه السلام على المعنى الحقيقى والله قد أخبر فى كتابه العزيز أنه تُوفِّى ومات؟ وقال:يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ۔ وقال:فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ۔ وقال:فَيُمْسِكُ الَّتِىْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ۔ وقال: وَ حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ۔ وقال:وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ۔

उच्च कोटि के सहाबा और ताबेईन का मसीह अलैहिस्सलाम के अवतरित होने (की आस्था) पर केवल इजमाली (सतही) ईमान था और वह अवतरण पर सतही विश्वास रखते थे और उसका विवरण ज़मीन और आसमान के ख़ुदा के सुपुर्द करते थे। मसीह अलैहिस्सलाम का अवतरण वास्तविक अर्थों में कैसे वैध हो सकता है जबकि अल्लाह ने अपनी पुस्तक पवित्र क़ुरआन में यह बता दिया है कि उनका देहांत हो गया और वह स्वर्गवासी हैं फ़रमाया :

يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ۔ (आले इमरान-56)

(अर्थात - हे ईसा मैं तुझे वफ़ात देने वाला हूँ और फिर सम्मान के साथ अपनी ओर उठाने वाला हूँ।) इसी प्रकार फ़रमाया :

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ۔ (अलमाइद:-118)

(अर्थात - फिर जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो उस समय तो तू ही उनकी देख भाल करने वाला और उनका रक्षक और निगरान था।) इसी प्रकार फ़रमाया :

فَيُمْسِكُ الَّتِىْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ۔ (अज़्ज़ुमर-43)

يعنى ماتوا كلهم كما استدل به الصِّدّيق الاكبر عند وفاة النبى صلى الله عليه وسلم فما بقى شك بعد ذٰلك فى وفاة المسيح وامتناع رجوعه إن كنتم بالله وآياته مؤمنين۔

وقد ختم الله برسولنا النبيين وقد انقطع وحى النبوة فكيف يجىء المسيح ولا نبى بعد رسولنا؟ أيجىء معطَّلا من النبوة كالمعزولين؟ وقد بشّرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم أن المسيح الاٰتى يظهر من أمته وهو أحدٌ من المسلمين۔ وفى الصحاح أحاديث صحيحة مرفوعة متصلة

(अर्थात - फिर वह जिसकी मृत्यु का आदेश जारी कर चुका होता है उसकी रूह को रोके रखता है।) इसी प्रकार फ़रमाया :

وَ حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ۔ (अलअंबिया-96)

(अर्थात - और प्रत्येक बस्ती जिसे हमने नष्ट किया है उसके लिए यह फ़ैसला कर दिया गया है कि उसके बसने वाले लौट कर इस संसार में नहीं आएँगे।) इसी प्रकार फ़रमाया :

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ۔ (आले इमरान-145)

अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम केवल एक रसूल हैं और उनसे पहले सब रसूल मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं।

अर्थात वे सब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं जैसा कि सिद्दीक अकबर (अर्थात हज़रत अबू बकर[रज़ि]) ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के देहांत के समय इस (आयत) से सिद्ध किया है। अत: यदि तुम अल्लाह और उसकी आयतों पर विश्वास रखते हो, तो उसके बाद मसीह की मृत्यु और उनके पुन: संसार में न लौटने के बारे में कोई संदेह न रहा।

अल्लाह ने हमारे रसूल के द्वारा नबियों को समाप्त कर दिया और नुबुव्वत की वह्यी बंद हो गई। तो फिर मसीह कैसे आ सकता है जबकि

شاهدة على وفاة عيسى عليه السلام خصوصًا فى البخارى فيه بيان مصرح فى هذا الامر۔ فالعجب كل العجب على فهم رجل يشكّ فى وفاته بعد كتاب الله ورسوله ويتذبذب كالمرتابين۔ وبأيِّ حديث بعد الله وآياته نترك متواترات القرآن؟ أنُؤْثِر الشكّ على اليقين؟

والقوم لا يتفق على صعود المسيح حيًّا إلى السماء بل لهم آراء شتّى بعضهم يقول بالوفاة وبعضهم بالحياة۔ ولن تجد من النصوص الفرقانية والاحاديث النبوية دليلا على حياته بل تسمع من الاخبار والآثار ومن كل جهة

हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं? क्या वह निलंबित लोगों के समान नुबुव्वत से ख़ाली हो कर आएगा? जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह ख़ुशख़बरी दी है कि आने वाला मसीह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ौम में से प्रकट होगा और वह मुसलमानों का एक व्यक्ति होगा और सिहा-ए-सित्ता (हदीस की छ: प्रमाणित पुस्तकें- अनुवादक) में ऐसी सहीह, मर्फ़ू मुत्तसिल हदीसें* हैं जो ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु की गवाही देती हैं, विशेष रूप से सही बुख़ारी में इस बात के बारे में स्पष्ट वर्णन मौजूद है। इसलिए ऐसे व्यक्ति की समझ पर अत्यंत आश्चर्य होता है जो अल्लाह की किताब और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के बाद भी मसीह की मृत्यु पर संदेह करता है और शक करने वालों के समान इंकार करता है। अल्लाह और उसकी आयतों के बाद किस हदीस के आधार पर हम क़ुरआनी आयतों को छोड़ सकते हैं? क्या हम संदेह को विश्वास पर प्राथमिकता दें?

मसीह के जीवित आसमान पर चले जाने पर सब लोग सहमत नहीं हैं अपितु उनकी राय भिन्न हैं। कुछ उनकी मृत्यु और कुछ उनके जीवित होने

---

* वह हदीस जिस के समस्त रावी सच्चे हों तथा दोष रहित हों और उनमें निरंतरता हो। अनुवादक

نعىَ الموت۔ وقد تُوفّى رسولنا صلى الله عليه وسلم أهو خيرٌ منه أم هو ليس من الفانين؟ ورآه رسول الله صلى الله عليه وسلم فى ليلة المعراج فى الموتى من الانبياء عليهم السلام أفتظن أن رسول الله صلى الله عليه وسلم أخطأ فى رؤيته أو ؔقال ما يُخالف الحق؟ حاشا بل إنه أصدق الصادقين.

فهذا هو السبب الذى ألجأنا إلى اعتراف وفاة المسيح وشهد عليه إلهامى المتواتر المتتابع من الله تعالى۔ وما نرى فى هذه العقيدة مخالفة بقول رسول الله صلى الله عليه

के समर्थक हैं। क़ुरआनी आयतों और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों से उनके जीवित होने पर तुझे एक भी दलील नहीं मिलेगी अपितु हदीसों और घटनाओं तथा प्रत्येक ओर से उनकी मृत्यु की ख़बर पाएगा। हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मृत्यु को प्राप्त हो गए (बताओ) क्या वह (मसीह) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से श्रेष्ठ हैं? या यह कि वह अमर हैं हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें शबे मेराज में मृत्यु प्राप्त नबियों के गिरोह में देखा। क्या तू समझता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखने में ग़लती लगी थी या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सच्चाई के विरुद्ध बात की? कदापि नहीं, अपितु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो सच्चों में से सबसे सच्चे हैं।

अत: यही वह कारण है जिसने हमें मसीह की मृत्यु को मानने पर विवश किया और जिस पर अल्लाह तआला की ओर से मुझ पर निरंतर (उतरने वाले) इल्हामों ने गवाही दी। हमें अपनी इस आस्था में न तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और न ही सहाबा और ताबेईन की आस्था की अवज्ञा दिखाई देती है। समस्त सहाबा मसीह की मृत्यु पर ईमान रखते थे और इसी प्रकार अल्लाह तआला के वे विवेकशील बंदे भी जो

وسلم ولا بعقيدة الصحابة ولا التابعين۔ والصحابة كلهم كانوا يؤمنون بوفاة المسيح و كذلك الذين جاؤوا بعدهم من عباد الله المتبصّرين۔ ألا تنظر صحيح البخارى كيف فسّر فيه عبد الله بن عباس رضى الله عنه آية فقال: متوفّيك : مميتُك۔ و أشار الإمام البخارى إلى صحّة هذا القول بإيراده آية إِنِّي مُتَوَفِّيكَ فى غير محلّه وهذه عادة البخارى عند الاجتهاد و إظهار مذهبه كما لا يخفى على الماهرين.

أيها الاخ الصالح! انظُرْ كيف أشار البخارى رحمه الله إلى مذهبه بجمع الآيتين فى غير المحلّ و إراءة

उनके बाद आए। क्या तू सही बुख़ारी पर विचार नहीं करता कि किस प्रकार अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास[रज़ि॰] ने इस बारे में आयत

يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَيَّ۔

(अर्थात - हे ईसा मैं तुझे वफ़ात देने वाला हूँ और फिर सम्मान के साथ अपनी ओर उठाने वाला हूँ। आले इमरान-56)

की व्याख्या की और उन्होंने "मुतवफ्फीका" (के अर्थ) "मुमीतुका" किए और इमाम बुख़ारी ने आयत "इन्नी मुतवफ्फीका" (अर्थात मैं तुझे मृत्यु दूंगा) को अपने स्थान से दूसरे स्थान पर ला कर (इब्ने अब्बास) के उस कथन की प्रमाणिकता के बारे में संकेत किया है और जैसा कि माहिरों से यह बात छुपी हुई नहीं कि इमाम बुख़ारी इज्तेहाद और अपनी राय के प्रदर्शन के अवसर पर यही तरीक़ा अपनाते हैं।

हे नेक भाई! देख कि किस प्रकार इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने इन दोनों आयतों को अनुचित स्थान पर इकट्ठे कर के और उनका एक दूसरे को दृढ़ता देने का प्रदर्शन करके अपने मस्लक (मत) की ओर संकेत किया है और माना है कि मसीह मृत्यु प्राप्त कर चुके हैं। अत: तू विचार कर क्योंकि अल्लाह विचार करने वालों को पसंद करता है। मुझे अल्लाह

تظاهُرهما۔ واعترف بأن المسيح قد مات فتدبَّرْ فإن اللّٰه يحب المتدبّرين۔ وما كان لی منفعةٌ وراحةٌ فی ترك كتاب اللّٰه وسُنن رسوله وحملِ أوزار خسران الدنيا والآخرة وسماع لعن اللاعنين۔ أيها الاخ الكريم! لَلحقُّ أحقُّ أن يُتّبع والصدق حقيق بأن يُقبَل ويُستمَع ويد الحق تصدع رداء الشك والحق هو الجوهر الذی يظهر عند السبك ويتلألأ فی وقته الذی قدّر اللّٰه له ولكل نبأٍ مستقرٌّ ولكل نجمٍ مَطلعٌ ولا تُعرف الاسرار إلا بعد وقوعها۔ فطوبٰی لمن فهم هذا السر وأدرك الامر كالعاقلين۔ وإنّی أتيقّن أن مثلك مع كمال فضلك وتقواك لو كان مُطّلعًا علی معارف

की पुस्तक (क़ुरआन) और उसके रसूल के तरीकों को छोड़ने में और लोक-परलोक केघाटे का बोझ उठाने और लानत करने वालों की लानत सुनने में कोई लाभ और आराम नहीं है। हे सम्मानित भाई! सच्चाई इस बात की अधिक हक़दार है कि उसका अनुसरण किया जाए और सच्चाई का यह अधिकार है कि उसे स्वीकार किया जाए और उसे ध्यानपूर्वक सुना जाए। सच का हाथ संदेह का पर्दा फाड़ता है और सच वह जौहर है जो जांच-पड़ताल के समय स्पष्ट होता और अपने समय पर जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित किया है, चमकता है। प्रत्येक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी का निर्धारित समय होता है और प्रत्येक सितारे के लिए एक उदय होने का स्थान होता है और रहस्य प्रदर्शित होने के समय ही पहचाने जाते हैं। अत: उसको मुबारक जिसने इस रहस्य को पहचान लिया और उसने बुद्धिमानों के समान इस बात को समझ लिया और मुझे विश्वास है कि आप जैसे विवेक और संयम में निपुणता रखने वाले को यदि इन रहस्यों से वह आगाही होती जो मुझे प्राप्त है तो उसकी ज़बान मुझे लान-तान करने से अवश्य रुक

اطّلعتُ عليها لكفَّ لسانه من لعني وطعني ولَقَبِلَ ما قلتُ من معارف الملّة والدّين ولكني أظنّك ما فهمتَ حقيقة مقالي وما علمتَ صورة محالي وما ظني فيك إلا الخير وأسأل الله لك فضله ورحمته وهو أرحم الرّاحمين.

يا قُرّة أرضٍ مباركةٍ وسُلالةَ أهلها! أنت بحمد الله تقيّ ونقيّ وزكيّ وإني أحبّك وأصافيك كالمخلصين. وأُوتيكَ مُوثقًا من الله على أني أُوافقك وأقبل قولك إن تُرِني آياتِ الفرقان على صحة زعمك وتأتِني بسُلطان مبين. وما أبتغي إلا الحق وقد شققتُ عصا الشِقاق وارتضعتُ أفاويق الوفاق فجادِلْني بالحكمة وآيات كتاب الله السبّاق

जाती और शरीअत और धर्म के रहस्यों के बारे में जो मैंने कहा है वह उसे अवश्य स्वीकार कर लेता। परन्तु तेरे बारे में मेरा यह ख्याल है कि तुम ने मेरी बातों की वास्तविकता को नहीं समझा और मेरी अवस्था से तुम्हे आगाही नहीं। तुम्हारे बारे में मेरा विचार अच्छा है और मैं अल्लाह से तुम्हारे लिए उसका फ़ज़ल और उसकी रहमत मांगता हूँ क्योंकि वह सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाला है।

हे मुबारक ज़मीन की ठंडक और हे वहां के रहने वालों की संतान! तुम अलहम्दुलिल्लाह संयमी, परहेज़गार और नेक हो मुझे तुम से प्रेम है और मैं तुम से श्रद्धावानों के समान निष्ठापूर्वक प्रेम करता हूँ। मैं अल्लाह की पक्की क़सम खा कर तुम से यह वादा करता हूँ कि यदि तुम मुझे अपने दावे के सच होने के बारे में क़ुरआनी आयत दिखा दो और स्पष्ट दलील प्रस्तुत कर दो तो मैं तुम्हारे साथ सहमती कर लूँगा और तुम्हारी बात स्वीकार कर लूँगा मैं तो केवल सच्चाई का इच्छुक हूँ। मैंने तो विरोध और शत्रुता को समाप्त कर दिया है और मित्रता और भाईचारे की शिक्षा से भरा

وستجدنى إن شاء الله من المنصفين. وإن كنت أن تشتهى أن تسبّنى أو تلعننى أو تكذّبنى أو تقتلنى بسيف بتّار أو تلقينى فى نارٍ فاصنع ما شئت وما أرُدّ عليك إلا دعاء الخير والعافية. يا أهل البيت يرحمكم الله فى الدنيا والآخرة وآواكم فى المرحومين.

أيها الشيخ! دعِ النزاع وما ينبغى النزاع فاتّق الله وأدرِكْ فرصة لا تُضاع وارتحلْ إلىّ رحلة الصادق المُعِدّ وسِرْ نحوى سير المُجِدّ وتفضَّلْ وتجشَّمْ إلى بيتى وكُلْ إلى شهرين من قرصى وزيتى سيُريك الله حالًا لا ينكشف عن يد غيرى من أهل البلدان وجَوّابتها ولا من تأليفاتٍ محدودة البيان فتعرفنى بعين اليقين. وإن تقصدنى مُخلِصًا

हुआ हूँ। अत: तुम मुझ से हिकमत (युक्ति) से और अल्लाह की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक (क़ुरआन) की आयतों के साथ बहस करो। इंशाअल्लाह तुम मुझे न्याय करने वालों में से पाओगे। परन्तु यदि तुम यह चाहते हो कि तुम मुझे गालियां दो, मुझ पर लानत डालो या मुझे धारदार तलवार से क़त्ल करो या मुझे आग में डालो या मुझे झुठलाओ, तो फिर तुम्हारी इच्छा जो चाहो करो। इसके उत्तर में (इंशाअल्लाह) मैं तुम्हारे लिए केवल भलाई और सलामती की ही दुआ करूंगा। हे अहले बैअत! अल्लाह तुम पर लोक और परलोक में रहम करे और रहम किए गए लोगों में स्थान दे।

हे शेख़! झगड़ा छोड़, झगड़ा होना भी नहीं चाहिए। अत: अल्लाह से डर और इस समय को हाथ से न जाने दे। एक हमेशा सच बोलने वाले के समान मेरी ओर यात्रा कर और गंभीरता का मार्ग अपनाते हुए मेरी ओर आ कठिनाई उठा कर मेरे घर पधार। दो महीने तक मेरी ओर से रोटी-सालन खा। अल्लाह तआला शीघ्र तुम पर वह बात स्पष्ट कर देगा जिन्हें मेरे अतिरिक्त इन शहरों के निवासियों और यात्रियों में से किसी का हाथ स्पष्ट

فأدعولك فى آناء الليل وأطراف النهار وأرجو أن يطمئن قلبك وأرى آثار الاستجابة وتنجاب غشاوة الاسترابة والله قدير ونصير ومُعين.

أيها الاخ الشريف الصالح! لا تنظُرْ إلى تكفير العلماء وتكذيبهم فإنى أعلم من الله ما لا يعلمون وقد علمتُ حقيقة الامر من ربّى وهم من الغافلين. ولا تنظر إلى ذلّتى وهوانى وحقارتى فى أعين إخوانى فإن لى من الله تعالى فى كل يوم نظرةً. أقلب نحو الشمال ونحو اليمين وأتقلّبُ فى الحالَين بؤس ورَخاء وأنقل مع الريحَين زعزع ورُخاء والعاقبة خير لى إن شاء الله وإنى من المبشَّرين. اليوم يحقّرون ويكذّبون ويكفّرون وأراهم علىَّ حريصين لو كانوا قادرين

नहीं कर सकता और न ही सीमित पुस्तकें (वर्णन) कर सकती हैं। अत: तुम मुझे विश्वास की आँख से पहचान लोगे और यदि तुम ईमानदारी के साथ मेरी ओर आओगे तो मैं रात-दिन तुम्हारे लिए दुआ करूंगा। मुझे आशा है कि तुम्हारे दिल को संतुष्टि मिलेगी और मैं दुआ की स्वीकारिता के चिन्ह देख रहा हूँ। और संदेह तथा शक का पर्दा समाप्त हो जाएगा और अल्लाह सामर्थ्यवान और सहायक है।

हे नेक शरीफ भाई! उलमा की तकफ़ीर (काफ़िर ठहराने) और झुठलाने को न देख, क्योंकि मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो वे नहीं जानते। मैं अपने रब की ओर से वास्तविक बात जानता हूँ और वे नहीं जानते। तू मेरे भाइयों की दृष्टि में पाए जाने वाले मेरे अपमान, असहाय होने और तुच्छ समझे जाने को न देख। क्योंकि अल्लाह तआला की ओर से मुझे प्रतिदिन वह दृष्टि प्राप्त है जिसे मैं बायें और दायें ओर घुमाता हूँ और प्रत्येक अवस्था अर्थात तंगी और आसानी में रहता हूँ। तेज़ और धीमी हवाओं के साथ स्थानांतरित होता रहता हूँ। इंशा-अल्लाह मेरा अंत अच्छा

وسيأتي زمان يظهر صدقي فيه ويُرِي اللهُ عبادَه آيات فضله عليَّ فيجتلون أنوار عناياته ومطارف تفضّلاته فيأتونني مُنكسرين۔

فطوبٰى لعين رأتني قبل وقتي وطوبٰى لسعيد جاءني كالمخلصين۔ أيها الشيخ! الوقت قد دنٰى ومعظم العمر قد فنى فأُتني على شريطة الصبر والتوقّف وقبول الهُدىٰ وعُدْ إلى الحق ودعِ العداء ولا تنس حقك في العُقبى ولا تُبارز المولى وسارِعْ إليَّ مُرتدعًا ليغفر لك الله ما سلف وما مضى وطاوِعِ الحق وكن من المطاوعين۔

وإن كنت لا تقدر على هذا السفر البعيد فلك طريق

होगा और मैं ख़ुशख़बरी दिए जाने वालों में से हूँ। वे आज मुझे तिरस्कृत समझते हैं, झुठलाते हैं और काफ़िर ठहराते हैं। मैं देखता हूँ कि यदि उनको मुझ पर सामर्थ्य प्राप्त हो जाए तो वे मेरे वध पर तत्पर हैं परन्तु वह ज़माना आने वाला है जिस में मेरी सच्चाई प्रकट हो जाएगी और अल्लाह अपने बन्दों को मुझ पर होने वाली अपनी कृपाओं के निशान दिखाएगा तो वे उसके उपकारों के प्रकाश और उसके प्रेम के चमत्कार देखेंगे तब वे मेरे पास विनम्रता पूर्वक आएँगे।

अत: उस आँख को मुबारक हो! जिसने मेरे आने वाले समय से पहले मुझे देख लिया और उस सौभाग्यशाली को बधाई हो! जो निष्ठावानों के समान मेरे पास आया। हे शेख़! निर्धारित समय निकट आ गया है और आयु का अधिकतर भाग गुज़र चुका है। अत: धैर्य और दृढ़ता तथा हिदायत स्वीकार करने की शर्त पर मेरे पास आ, सच्चाई की ओर लौट और शत्रुता को छोड़ दे और परलोक में अपने हक़ को न भूल और अल्लाह से मुक़ाबला न कर। प्रायश्चित करते हुए शीघ्रता से मेरे पास चला आ ताकि अल्लाह तेरे पिछले गुनाह माफ़ कर दे। सच्चाई को मान ले कर और आज्ञाकारियों में से हो जा।

أُخرٰى۔ فإن كنت فاعِلَها فأخرِجْ أوّلًا مِن صدرك كلَّ ما دخل فيه من سوء الظن ثم قُمْ وتوضّأْ وصلِّ ركعتين وصلِّ وسلِّمْ واستغفرْ استغفار التائبين ثم اضطجعْ مستقبلا على مُصلاك وتَخَلَّ بمُناجاة مولاك واسأل الله لاستكشاف حالى وحقيقة مقالى ثم نَمْ قائلا: يا خبير أخبِرْنى فى أمر أحمد بن غُلام مرتضٰى القادياني أهو مردودٌ عندك أو مقبول؟ أهو ملعون عندك أو مقرون؟ إنك تعلم ما فى قلوب عبادك ولا تُخطى عينك وأنت خير الشاهدين۔

ربنا آتنا من لدنك علمًا جاذبًا إلى الحق ونظرًا حافظًا من نقل الخطوات إلى خطط الخطيّات وأدخِلْنا فى

और यदि तू इस लम्बी यात्रा का सामर्थ्य नहीं रखता तो फिर तेरे लिए एक और मार्ग भी है। यदि तू उसे अपनाना चाहता है तो सर्वप्रथम अपने दिल से प्रत्येक वे दुष्ट विचार निकाल दे जो उसमें प्रवेश कर गए हैं। फिर उठ और वुज़ू कर और दो रकाअत नमाज़ पढ़ (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर दरूद व सलाम भेज और प्रायश्चित करने वालों के समान क्षमा मांग, फिर क़िबले की ओर मुख कर के जाए नमाज़ पर लेट जा और एकांत में अपने ख़ुदा से दुआएं मांग और मेरी अवस्था और मेरे दावे की वास्तविकता से पर्दा उठाने के लिए अल्लाह से पूछ फिर यह दुआ करते करते सो जा कि हे सर्वज्ञानी ख़ुदा! मुझे अहमद इब्ने ग़ुलाम मुर्तज़ा क़ादियानी के बारे में यह बता कि क्या वह तेरे निकट मरदूद (निर्वासित) है या स्वीकृत? क्या वह तेरे निकट मलऊन है या प्रिय? तू अपने बन्दों के दिलों की अवस्था भली-भांति जानता है, तेरी दृष्टि कभी ग़लती नहीं करती और तू सबसे अधिक देखने वाला है।

हे हमारे ख़ुदा! अपने पास से हमें ऐसा ज्ञान प्रदान कर जो सच्चाई की ओर खींच कर ले जाने वाला हो और ऐसी दृष्टि प्रदान कर जो गुनाहों

الموفَّقين. ما كان لنا أن نُقدّم بين يديك أو نتصرّف فى سرائر عبادك ربنا اغفر لنا ذنوبنا وإسرافنا فى أمرنا وافتح عيوننا ولا تجعلنا من الذين يُعادون أولياءك أو يحبّون المفسدين. آمين ثم آمين واستخِرْ يا أخى من جمعة إلى جمعةٍ أُخرى وعقِّبْ تهجُّدَك بهذه الركعتين وأخبِرْنى إذا أردت أن تشرع فى هذا لأرافقك فى دُعائك وأدعو لك فى ابتغائك وأرجو أن يسمع ربى ندائى ويقبل دُعائى إنه كان بى حفيًّا وإنه نور عينى وقوة أعضائى والله إنى لمن المقبَّلين. أيها العزيز! أراك فتًى صالحًا فأرجو أن تقبل ما قُلتُ لك وأرجو أن تُدركك رِقّةٌ على دين سيّدى وسيّدك وجدّك صلى الله عليه وسلم وتسلُك

की ओर क़दम उठाने से सुरक्षित रखने वाली हो और हमें सामर्थ्य पाने वालों में से बना! हमारा क्या साहस कि तुझ से आगे बढ़ें या तेरे बन्दों के रहस्यों में परिवर्तन कर सकें। हे हमारे रब! हमारे गुनाह और अपने मामले में हमारे अत्याचारों को क्षमा कर दे। हमारी आँखें खोल! हमें उन लोगों में सम्मिलित न कर जो औलिया से शत्रुता रखते और उपद्रवियों से प्रेम करते हैं। आमीन। मेरे भाई! इस्तिख़ारा कर, एक जुमे से दूसरे जुमे तक। इस्तिखारे की इन दो रकअतों के बाद अपनी तहज्जुद (नमाज़) पढ़। और जब तू इसको आरंभ करने का इरादा करे तो मुझे इसकी सूचना देना ताकि मैं भी तेरी दुआ में तेरा साथ दूं और मैं तेरे इस मक़सद में तेरे लिए दुआ करूं। और मुझे आशा है कि मेरा रब मेरी पुकार सुनेगा और मेरी दुआ स्वीकार करेगा क्योंकि वह मुझ पर बहुत मेहरबान है और वह मेरी आँख का नूर और मेरे अंगों की शक्ति है। ख़ुदा की क़सम मैं स्वीकार किए गए लोगों में से हूँ। हे प्रिय! मेरे निकट तू नेक नौजवान है। अत: मैं उम्मीद रखता हूँ कि मैंने तुम्हें जो कहा है वह तुम स्वीकार करोगे, इसी

مسلك العارفين.

تَذَكَّرْ يا أخى يوم التنادى
وتُبْ قبل الرحيل إلى المعادِ

فأخرِجْ كلَّ حقدك مِن جَنانٍ
وزَكِّ النفس من سمّ العنادِ

وخَفْ قهر المهيمنِ عند ذنبٍ
وقِفْ ثم انتهِجْ سُبُل الرشادِ

وأُقسِم أنى يا ابن الكرامِ
لقد أُرسِلتُ من رب العبادِ

प्रकार मुझे यह भी उम्मीद है कि तुम पर मेरे आक़ा और तुम्हारे आक़ा तथा पूर्वज मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म के लिए भावुकता छा जाएगी और तुम आरिफ़ों (पहचानने वालों) के मार्ग पर चल पड़ोगे।

1) हे मेरे भाई क़यामत के दिन को याद कर और परलोक जाने से पहले तौबा कर ले।

2) अपने हर द्वेष को दिल से निकाल दे और अपने आप को शत्रुता के विष से पवित्र कर।

3) और गुनाह करते समय निगरान ख़ुदा से डर और रुक जा। फिर हिदायत के रास्तों पर चल।

4) और हे शरीफ़ों की सन्तान! मैं क़सम खाता हूँ कि मैं निस्संदेह बन्दों के रब की ओर से भेजा गया हूँ।

وقد أُعطيتُ علمًا بعد علمٍ
و كأسًا بعد كأس مِن جوادى

وحِبّى كل حين يجتبينى
ويُدنينى ويعطينى مرادى

فما أُشقٰى بلعن اللاعنينا
وصدقى سوف يذكر فى البلادِ

و كأسٍ قد شربنا فى وِهادٍ
وأُخرٰى نشربَنّ فوق المصادِ

ولست أخاف من موتى وقتلى
إذا ما كان موتى فى الجهادِ

5) और मुझे अपने उदार ख़ुदा की ओर से ज्ञान पर ज्ञान और जाम पर जाम प्रदान किया गया है।

6) और मेरा महबूब हर समय मुझे प्रतिष्ठित करता है और अपने समीप करता है और मेरी मुराद पूरी करता है।

7) अत: लानत करने वालों की लानत से मैं अभागा नहीं हो सकता और मेरी सच्चाई का देशों में अवश्य वर्णन किया जाएगा।

8) और बहुत से प्याले तो हमने निचली ज़मीन में पिए हैं और दूसरे प्याले हम पहाड़ की चोटी पर पिएंगे।

9) मैं अपनी मौत और क़त्ल से नहीं डरता चाहे मेरी मौत जिहाद में घटित हो।

وآثرُنـــا الحبـــيب عـــلى حيـــاة
وقمنـــا لـلشهـــادة بالعَتَـــادِ

ومـــا الخســـران فى مـــوتٍ بتـــقوى
وخســـرُ المـــرء فى ســـبل الفســـادِ

وإنى قـــد خرجـــت إلى ذُكـــايٍ
ففـــارت عـــينُ نـــورٍ مـــن فـــؤادى

بحمـــد الله إن الحِـــبّ مـعـــنا
ومـــا يرمـــى متـــاعى بالكســـادِ

ويدنيـــنى بحضرتـــه بلـطـــفٍ
ويسقيـــنى مـــدام الاتّـــحادِ

---

10) और हमने अपने महबूब को अपनी ज़िन्दगी पर प्राथमिकता दी है और हम पूरी तैयारी से शहादत पाने के लिए तत्पर हैं।

11) और संयम की अवस्था में मौत आने में कोई घाटा नहीं, इन्सान का घाटा तो फ़साद के मार्गों में होता है।

12) और निस्संदेह मैं एक सूरज की ओर निकल खड़ा हुआ तो मेरे दिल से एक नूर का स्रोत फूट पड़ा।

13) अलहम्दोलिल्लाह कि हमारा महबूब (ख़ुदा) हमारे साथ है और वह मेरी शिक्षाओं के महत्व को कम नहीं होने देगा।

14) और वह मेहरबानी से मुझे अपने निकट करता है और मुझे अपना सामीप्य प्रदान करता है।

وإنّ هـــداية الفرقـــان ديـــنى
وأدعوكـــم إلى نهـــج السَّـــدادِ

فـــقُمْ إن شـــئت كالاحبـــاب طوعًـــا
وإمـــا شـــئت فاجلِـــسْ فى الاعـــادى

وقـــد بـــارا العـــدو بعـــزمِ حـــربٍ
وبارزُنـــا فيـــا قـــومى بـــدادِ

وكان نصيحـــة لله فـــرضـــى
فقـــد بلّغـــتُ فـــرضى بالـــودادِ

أيهـــا الاخ العزيـــز ! مـــا جئـــتُ كطـــارق ليـــل أو غثـــاء ســـيل

---

15) और निस्संदेह क़ुरआन की हिदायत ही मेरा धर्म है और मैं तुम्हें भी सद्मार्ग की ओर बुलाता हूँ।

16) यदि तू चाहे तो मित्रों के समान (अपनी) ख़ुशी से उठ और यदि तू चाहे तो तू शत्रुओं में बैठा रह।

17) और निस्संदेह शत्रु लड़ाई के इरादे से सामने आ गया और हम भी मुक़ाबले में निकले हैं। अत: हे मेरी क़ौम! मेरे प्रतिद्वंदी को सामने ला।

18) और ख़ुदा के लिए नसीहत करना मेरा कर्तव्य था और मैंने अपना कर्तव्य मैत्री भावना के साथ पूर्ण कर दिया है।

हे प्रिय मित्र! मैं रात को (छुप कर) आने वाले व्यक्ति के समान नहीं आया न मैं सैलाब की घास-फूस हूँ। मैं बिलकुल आवश्यकता के समय

إن جئتُ إلا فی وقت الضرورة وعلی رأس المائة وجعلنی اللّٰه لهذه المائة مجدِّدًا لإجدّد الدین۔

وقد جاء فی الاخبار الصحیحة أن اللّٰه یبعث لهذه الإمّة علی رأس کل مائة من یجدد دینها فتحسَّسْ من مجدّد هذه المائة؟ وتفکَّرْ فإن اللّٰه یؤیّد المتفکّرین۔ وقد جاء فی أخبار أُخْرٰی أن رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم لما تُوفی صاحت الإرض فقالت: یا رب بقیت خالیة إلی یوم القیامة من أقدام الإنبیاء صلاة اللّٰه علیهم أجمعین۔ فأوحی اللّٰه تعالی إلیها وقال: إنی أخلق علیك أُناسًا قلوبهم کقلوب الإنبیاء منهم الإقطاب ومنهم الإبدال ومنهم الغوث ومنهم دون ذلك و کل من المکلَّمین الملهَمین

और सदी के आरंभ में आया हूँ और अल्लाह ने मुझे इस सदी का मुजद्दिद (धर्म-सुधारक) बनाया है ताकि धर्म का नवीनीकरण करूं।

और यह (बात) सही हदीसों में भी आई है कि अल्लाह इस उम्मत के लिए हर सदी के आरंभ में एक व्यक्ति को अवतरित करेगा जो उसके धर्म का नवीनीकरण करेगा। अत: इस सदी के मुजद्दिद को तलाश कर और इस पर विचार विमर्श कर क्योंकि अल्लाह विचार विमर्श करने वालों की सहायता करता है। और विभिन्न हदीसों में आया है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलम का देहांत हुआ तो ज़मीन ने चीख कर यह कहा: हे मेरे रब! मैं तो नबियों के आगमन से क़यामत तक ख़ाली रह गई हूँ। इस पर अल्लाह तआला ने उस ज़मीन की ओर वह्यी की और फ़रमाया कि मैं तुझ पर ऐसे लोग पैदा करूंगा जिन के दिल नबियों के दिलों के समान होंगे, उनमें से कुछ क़ुतुब, कुछ अब्दाल और कुछ ग़ौस (विलायत की एक श्रेणी) होंगे और यह सब ऐसे होंगे जिन से अल्लाह बात करेगा और उन्हें इल्हाम करेगा। उन में कुछ ऐसे होंगे जिन का दिल नूह अलैहिस्सलाम, इब्राहीम अलैहिस्सलाम और मूसा अलैहिस्सलाम के दिल जैसा होगा और उन में एक वह भी होगा जिसका

ومنهم من يكون قلبه كقلب نوح وإبراهيم وموسى ومنهم الذى كان قلبه كقلب عيسٰى ويجيئون على أقدام النبيين۔

فانظر يا أخى آثارَ رحمة الله كيف أكرم هذه الامّة وجعلهم بأنبياء بنى إسرائيل مُشابهين۔ وإن تعجَب فعجبٌ قول الذين يقولون: كيف جاء مثيل المسيح وإنّ هذه إلا كلمة الكفر؟ ولا ينظرون إلى ما قال الله ورسوله ولا يتفكرون فى الآيات والآثار ويعيشون كالنائمين۔

يا أخى انظر فى البخارى وغيره من الصحاح كيف بشّر نبيّنا ورسولنا صلى الله عليه وسلم وقال: إنه سيكون فى أمّته قوم يكلَّمون مِن غير أن يكونوا أنبياء ويُسمَّون

दिल ईसा अलैहिस्सलाम के दिल जैसा होगा और यह सब नबियों के पद् चिन्हों पर आएँगे।

अत: हे मेरे भाई! अल्लाह की रहमत के चिन्ह देख कि किस प्रकार उसने इस उम्मत को सम्मान प्रदान किया और उन्हें बनी इस्राईल के नबियों के समान बना दिया। यदि तू आश्चर्य करे तो आश्चर्य तो उन लोगों की बात पर है जो यह कहते हैं कि मसीह का समरूप कैसे आ गया? और यह तो अत्यंत कुफ़्र की बात है। वे न तो अल्लाह और उसकी बात को देखते हैं और न ही वे आयतों और हदीसों पर विचार करते हैं, केवल सोए हुए जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

हे मेरे भाई! बुख़ारी और दूसरी सही हदीसों पर विचार कर कि हमारे नबी और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस प्रकार ख़ुशख़बरी दी और फ़रमाया कि : आप की उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो नबी न होते हुए भी अल्लाह ताआला से बात करने का सौभाग्य पाएंगे और वे मुहद्दिस कहलाएंगे। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

محدَّثين۔ وقال اللّٰہ جلّ شأنہ ۔ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ .ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ۔

وحثَّ عبادہ علی دعاء: اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ ۔فما معنی الدعاء لو کُنّا من المحرومین؟ وأنت تعلم أن الذین أنعم اللّٰہ علیھم أوّلًا ھم الانبیاء والرسل وما کان الإنعام مِن قسمِ درھم ودینار بل من قسم علوم و معارف ونزول برکاتٍ وأنوار کما تَقرّرَ عند العارفین۔

وإذا أُمرنا بھذہ الدعاءِ فی کل صلاۃ فما أمَرَنا ربُّنا إلا لیُستجاب دعاؤنا ونُعطَی ما أُعطِیَ من الإنعامات للمرسلین۔ وقد بشّرنا عزّ اسمہ بعطاء إنعاماتٍ أنعم علی

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ

(अर्थात पहलों में से एक बड़ी जमाअत है और पिछलों में से भी एक बड़ी जमाअत है।) (अलवाक़िया : 40, 41)

اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ.

(अर्थात हमें सीधे मार्ग पर चला उन लोगों के मार्ग पर जिन पर तूने ईनाम किया।) (अलफ़ातिहा-6,7)

की दुआ की ओर ध्यान दिलाया। (बताओ) यदि हमने वंचित ही रहना था तो फिर इस दुआ का क्या अर्थ? तू जानता है कि जिन पर अल्लाह ने सर्वप्रथम इल्हाम किया वे नबी और रसूल ही हैं। और यह ईनाम रुपये पैसे नहीं अपितु ज्ञान और अध्यात्मिक रहस्य और बरकतों और प्रकाश के उतरने के समान ईनाम है जैसा कि जानने वालों के निकट प्रमाणित है।

और जब हर नमाज़ में यह दुआ करने का हमें आदेश है तो हमारे रब ने हमें यह आदेश केवल इसलिए दिया है ताकि हमारी यह दुआ स्वीकार की जाए और हमें भी वे इनाम दिए जाएँ जो उसने रसूलों को प्रदान किए।

الانبياء والرُّسُل من قبلنا وجعلنا لهم وارثين. فكيف نكفر بهذه الإنعامات ونكون كقوم عمين؟ و كيف يمكن أن يُخلِف الله مواعيده بعد توكيدها و يجعلنا من المخيَّبين؟

أنت تعلم يا أخِي أن سراة الْمُنعَمين عليهم هم الانبياء والرسل وقد بشّرنا الله بعطاء هُداهم وبصيرتهم الكاملة التى لا تحصل إلا بعد مكالمة الله تعالى أو رؤية آياته. عفا الله عنك كيف زعمت أن أولياء الله محرومون من مُكالمة الله ومخاطباته وليسوا من المكلَّمين؟

يا أخى أنت تعلم أن كتب القوم مملوّة من ذكر

अल्लाह तआला ने हमें उन इनामों के दिए जाने की ख़ुशख़बरी दी है जो इनाम उसने हम से पहले नबियों और रसूलों पर किए और उसने हमें उन रसूलों का वारिस बनाया। फिर हम उन इनामों का कैसे इंकार कर सकते हैं? और हम कैसे अंधे लोगों के समान हो जाएँ? और यह कैसे संभव है कि अल्लाह अपने वादों को पक्का करने के बाद वादा खिलाफ़ी करे और हमें निराश और घाटा पाने वालों में से बना दे।

हे मेरे भाई! तू जानता है कि इनाम प्राप्त करने वाले गिरोह के सरदार नबी और रसूल ही हैं और अल्लाह ने उनकी हिदायत और उन जैसा पूर्ण ज्ञान प्रदान किए जाने की हमें ख़ुशख़बरी दी है जो केवल अल्लाह तआला से बात करने और उसके निशानों को देखने के बाद ही प्राप्त होती है। अल्लाह तुझे क्षमा करे, तूने यह कैसे समझ लिया कि अल्लाह के वली अल्लाह तआला से बात करने और इल्हाम प्राप्त करने से वंचित होते हैं और अल्लाह उन से संबोधित नहीं होता?

हे मेरे भाई! तू जानता है कि मुस्लिम उम्मत की पुस्तकें अल्लाह के

مكالمات الله بأوليائه ومخاطبات حضرة الحق بعباده المقرّبين وهو الكريم الذى يُلقى الروح على من يشاء من عباده ويزيد من يشاء فى الإيمان واليقين۔ أما قرأت فى ''فتوح الغيب'' الذى لسيدى الشيخ عبد القادر الجيلانى الثالثة كيف ذكر حقيقة المكالمات؟ وقال: إن الله تعالى يكلّم أولياءه بكلام بليغ لذيذ وينبئهم من أسرار ويخبرهم من أخبار ويعطيهم عِلم الانبياء ونور الانبياء وبصيرة الانبياء ومعجزات الانبياء ولكن وراثةً لا أصالة ويجعلهم متصرّفين فى الارض والسماوات وفى جميع ملكوت الله۔ فانظُرْ إلى مراتبهم ولا تتعجب

अपने वलियों से बात करने और अपने सानिध्य प्राप्त बन्दों के साथ इल्हाम-व-कलाम के वर्णन से भरी पड़ी हैं। और वह कृपालु ख़ुदा ही है जो अपने बन्दों में से जिस पर चाहे वह्यी करता है और जिसे चाहे उसे ईमान और यकीन में बढ़ा देती है...क्या तूने फुतूहुल ग़ैब में जो सय्यदी शेख अबदुल क़ादिर जिलानी रज़ीअल्लाह की पुस्तक है, उसमें नहीं पढ़ा कि किस प्रकार उन्होंने ख़ुदा से वार्तालाप की वास्तविकता का वर्णन किया है? वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला अपने वलियों से अत्यंत उत्तम एवं मनमोहक शब्दों द्वारा संबोधन करता है, अपने संकेतों एवं भेदों से उन्हें सूचित करता है और महत्वपूर्ण सूचनाओं से उन्हें अवगत करता है और उन्हें नबियों का ज्ञान, नबियों का नूर, नबियों की दूरदर्शिता और नबियों के चमत्कार प्रदान करता है। परन्तु (यह भेंट) उन्हें (ज़िल्ली रूप से) विरासत में मिलती है न कि वास्तविक रूप से। और वह ख़ुदा उन्हें ज़मीन, आसमानों और समस्त ख़ुदा की बादशाहत में अधिकार प्रदान करता है। अत: तू उनके मर्तबों को देख और आश्चर्य मत कर क्योंकि अल्लाह बड़ा कृपालु है, अपने बन्दों को जो

فـإن الله فيّـاضٌ يعطـى عبـاده مـا يشـاء وليـس بضنـين۔ واللّٰهُ قـصّ علينـا قصـص الملهَمـين فى كتابـه العزيـز وأنبأنـا أنـه كلَّـم أُمَّ مـوسى عليـه السـلام و كلَّـم ذا القرنـين و كلَّـم الحواريّـين۔ ومـا كان أحـدٌ منـهم نبيًّـا ولا رسـولًا ولكـن كانـوا مـن عبـاده المحبوبـين۔ أليـس مـن أعجـب العجائـب أن يكلّـم الله نسـاء بـنى إسـرائيل و يعطـى لهُـنّ عِـزّةَ مكالماتـه وشـرف مخاطباتـه ومـا يعطـى لرجـال هـذه الاٴمّـة نصيبـا منهـا وهـى أمّـة خـير المرسـلين؟ وقـد سـمّاها خـير الاٴمـم وختَـم بهـا الاٴمـم كلهـا وقـال: ثُـلَّةٌ مِّـنَ الآخِرِيـنَ يعـنى فيهـا كثـير مـن المكمّـلات والمكمّلـين۔

وأنـت تـرى يـا أخى عافـاك الله فى الداريـن كيـف اشـتدت

चाहता है प्रदान कर देता है और वह कंजूस नहीं। अल्लाह ने अपनी प्रिय पुस्तक (क़ुरआन) में इल्हाम पाने वालों की घटनाएँ हमारे लिए वर्णन कीं हैं और उसने हमें बताया है कि उसने मूसा अलैहिस्सलाम की मां से बात की। ज़ुलकरनैन से और हवारियों से भी वार्तालाप किया। जबकि उनमें से कोई एक भी न नबी था न रसूल। हाँ यह सब उसके प्रिय बन्दों में से थे। क्या यह विचित्र बात नहीं कि अल्लाह बनी इस्राईल की स्त्रियों से तो वार्तालाप करे और उन्हें अपने इल्हाम और वार्तालाप का सौभाग्य प्रदान करे (परन्तु) वह इस उम्मत के मर्दों को भी इन (इल्हामों और संबोधन) से सुशोभित न करे, हालाँकि यह सर्वश्रेष्ठ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत है और उसने स्वयं इसका नाम खैरुल उमम (सर्वश्रेष्ठ उम्मत) रखा। और समस्त उम्मतों का इस पर समापन किया और फ़रमाया कि ثُـلَّةٌ مِّـنَ الْاٰخِرِيْـنَ अर्थात इस गिरोह में पूर्ण स्त्रियाँ और पूर्ण पुरुष बड़ी अधिकता से होंगे।

हे मेरे भाई! अल्लाह तुझे दोनों लोकों में सकुशल रखे, तुझे ज्ञान

الحاجة فی هذه الایام إلی ظهور مجدّد یؤیّد الدین و یقیم البراهین و یرجم الشیاطین۔ ألا تری أن الضلالة قد غلبت وغارات الکافرین عمّت وأحاطت و کم من أمم تبّت وهلکت؟ ألا تنظر هذه المفاسد؟ ألست من المتألّمین علی مصائب الإسلام؟ ألم تأتك أخبارها أو أنت من الغافلین؟ أما تکاثرت فتن الکفّار؟ أما جاء وقت ظهور الآثار؟ أما عمّت الفتن فی البراری و البلاد و الدیار؟ أما جاء وقت رحمة أرحم الراحمین؟ أما عَنَّ لنا فی زمننا هذا قبل الذیاب فی لیلة فتیّة الشباب غُدافیّة الإهاب و صرنا کالمحصورین؟

أُنظُرْ یا أخی کیف أحاط بالناس ظلام و ظلم و مظلمة

है कि इस ज़माने में एक ऐसे मुजद्दिद के अवतरण की आवश्यकता कितनी अधिक बढ़ गई है जो धर्म की सहायता करे, तर्क और दलीलों को स्थापित करे और शैतानों को रजम (पत्थर मारना) करे। क्या तू नहीं देखता कि गुमराही छा गई है। काफ़िरों के हमले सामान्य हो चुके हैं और प्रत्येक ओर से घेर लिया है। कितनी ही उम्मतों का विनाश हो गया। क्या तू यह उपद्रव नहीं देख रहा? क्या इस्लाम पर आने वाले संकटों से तुझे दु:ख नहीं पहुंचता? क्या यह सूचनाएं तुझ तक नहीं पहुंचती या तू इस से अवगत नहीं है? बता क्या काफ़िरों के उपद्रव बढ़ते ही नहीं जा रहे? क्या निशानों और चिन्हों के प्रकटन का समय नहीं आ गया? क्या अत्यंत दयालु ख़ुदा की दया का समय नहीं आ गया? क्या बियाबानों, शहरों और देशों में उपद्रव सामान्य रूप से नहीं फैल गए? क्या हमारे इस ज़माने में घोर अँधेरी रात में भेड़ियों के झुण्ड के झुण्ड ज़ाहिर नहीं हुए कि हम घिर कर रह गए हों।

हे मेरे भाई देख! अत्याचारों और घोर अंधकारों ने किस प्रकार लोगों

وخُوّفنا من كلّ طرف بأنواع النباح وارتفعت الاصوات بالارنان والنياح وضُربت علينا المسكنة بالاكتساح وصال الكُفار كالحَيْن المجتاح وعفَتْ آثار التقوى والصلاح وصُبَّت علينا مصائب لو صُبّت على الجبال لدكّتها وكسّرتها كالرداح وامتلاءت الارض شِركًا وكذبا وزورًا ومن الافعال القِباح وتراءت صفوف الطالحين.

و كنت أبكى بكاء الماخض على ضعف الإسلام فى تلك الايام وأرى مسالك الهُلْك وأنظر إلى عون الله العلام فإذا العناية تراء ت وهبّتْ نسيم ألطاف الله القسّام وبُشِّرتُ بأعلى مراتب الإلهام وأصفى كأس المُدام كما تُبشَّرُ الحامل عند مخاضها بالغلام

को घेर रखा है। हर ओर से कुत्तों की भिन्न-भिन्न प्रकार की आवाज़ों ने हमें भयभीत किया हुआ है। सिसकियों और रोने-पीटने की आवाज़ें उठ रही हैं। लूट-पाट कर के हम पर लाचारी थोप दी गई है और विनाशकारी मौत के समान काफ़िर हम पर टूट पड़े। और तक़वा और नेकी के चिन्ह समाप्त हो गए हैं और हम पर ऐसे संकट आ पड़े हैं कि यदि वे पहाड़ों पर पड़ते तो वे उन्हें टुकड़े-टुकड़े और प्याले के समान चूर-चूर कर देते। और ज़मीन शिर्क, झूठ और दुष्ट कार्यों से भर गई है और दुष्ट प्रकृति के लोग पंक्तिबद्ध रूप से प्रकट हो गए।

मैं उन दिनों इस्लाम की लाचारी की अवस्था पर प्रसव पीड़ा से ग्रसित स्त्री के समान रोता रहा हूँ। मैं विनाश के मार्गों को देखता रहा हूँ और मैं सर्वज्ञानी ख़ुदा की सहायता की प्रतीक्षा करता रहा तो ख़ुदा तआला की कृपाओं और उपकारों की ठंडी हवा चलने लगी। मुझे उच्च कोटि के इल्हाम और अल्लाह तआला से मिलन के शुद्ध प्याले की ख़ुशख़बरी दी गई जैसे गर्भवती महिला को प्रसव की पीड़ा के समय बेटे की ख़ुशख़बरी दी जाती है

فصرت من المسرورين. فأُمِرتُ أن أُفرِّق خيرى على رِفقتى و كان على الله ثقتى فكفّرونى ولعنوا وسبّوا وأَضْرَوا بى الخطوبَ وألّبوا وأُوذيت من ألسنة القاطنين والمتغرّبين.

ورأيت أكثر العلماء أسارى فى أيدى أنفسهم وأهوائهم ورأيتهم كغلام عليه سملٌ وفى مشيه قزلٌ وفى آذانه وقرٌ وعلى عينه غشاوة وفى قلبه مرض وهو كَلٌّ على مولاه وليس فيه خير يسرّ المشترين. يُظهرون على الإخوان شَبائةَ اعتدائهم وينسون صولة أعدائهم وأرى قلوبهم مائلة إلى الصِّلات لا إلى الصَّلاة ويستعجلون للاستهداء لا للاستهداء ويُؤْثِرون ثوب الخيلاء على ثواب

और मैं प्रसन्न हो गया और मुझे आदेश दिया गया कि मैं अपनी इस भलाई को दोस्तों में वितरित करूं और मेरा भरोसा अल्लाह तआला के अस्तित्व पर था। इस पर उन्होंने मुझे झुठलाया मेरा अपमान किया और गालियाँ दीं और मुझे कठिन संकटों में फंसा दिया और मुझे अपनों और परायों की गालियों से दु:ख दिया गया।

मैंने अधिकतर उलमा को अपने स्वार्थ और अपनी वासनाओं के हाथों बंधा हुआ पाया। और मैंने उन्हें चीथड़ों में लिपटे हुए ऐसे सेवक के समान देखा जिसकी चाल में लंगड़ापन, उसके कानों में बहरापन, उसकी आँख पर पर्दा और उसके दिल में बीमारी हो और वह अपने स्वामी पर बोझ हो और उसमें कोई ऐसी विशेषता न हो जो ख़रीददारों को भाए और वह अपने भाइयों को अत्याचार का निशाना बनाते हैं परन्तु अपने शत्रुओं के वार को भूल जाते हैं। मैं देखता हूँ कि उनके दिल बदला और पुरुस्कार लेने की ओर आकर्षित हैं न कि नमाज़ की ओर। वे लोगों से भेंट लेने में जल्दी करते हैं न कि हिदायत प्राप्त करने में। दोस्तों के दु:ख बाँटने के पुन्य पर

مواساة الاخلاء ويأبرون إخوانهم كالعقارب ولو كانوا من الاقارب لا يخافون رب الارباب ولا يتّقونه فى أساليب الاكتساب ويسعون إلى باب الامراء وينسون حضرة الكبرياء ثم يكفِّرون إخوانهم ويحسبون أنهم من المحسنين۔ والذين يؤثرون الله على نفوسهم وأعراضهم وأموالهم لا يضرّهم إكفار المكفرين ولا تكذيب المكذبين۔ أليس الله بكاف عبده؟ ومن يُصافى مثله بالمصافين؟ سبقت رحمته حسنات العاملين ولا يضيع فضله سعى المجاهدين۔

أيها الاخ المكرّم! ارفقْ فإن الرفق رأس الخيرات ومن علامات

अहंकार को प्राथमिकता देते हैं और अपने भाइयों पर बिच्छुओं के समान डंक मारते हैं चाहे वे निकट संबंधी ही हों। उन्हें अपने रब का कोई भय नहीं और न ही कमाई के माध्यम अपनाने में वे उस से डरते हैं। बड़े लोगों के दरवाज़ों की ओर दौड़ कर जाते हैं परन्तु ख़ुदा की दरबार को भूल जाते हैं। फिर वे अपने भाइयों को झुठलाते हैं और यह समझते हैं कि वे उत्तम काम करने वाले हैं। और वे लोग जो अल्लाह को अपनी जानों, अपने सम्मानों और अपने धन पर प्राथमिकता देते हैं, उन्हें उलमा के कुफ़्र के फ़त्वे और झुठलाने वालों का झुठलाना कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता। क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं? और कौन है जो निष्ठा रखने वालों के साथ उस जैसा शुद्ध प्रेम कर सकता हो? उसकी रहमत कर्म करने वालों की नेकियों पर प्राथमिकता ले गई है और उसका फ़ज़ल प्रयास करने वालों की मेहनत को व्यर्थ नहीं करता।

हे सम्मानित भाई! नर्मी कर क्योंकि नर्मी समस्त भलाइयों का स्रोत है और नेक लोगों के निशानों में से है और तुझ पर आवश्यक है कि अपने संदेहों को मेरे समक्ष प्रस्तुत कर ताकि तुझे खोई हुई चीज़ें प्रदान करूं और

الصالحين۔ وعليك أن تَعرِض علىّ شُبهاتك لكى أعطيك ما فاتك وستجدنى إن شاء الله صديقًا صادقا ورفيق الطريق كالخادمين۔ وقد أعطانى الله من لدنه قوة فأَدرَأُ بها عن قلوب الناس شبهة وفتح علىَّ أبواب تعليم الخلق وإتمام الحجّة وإراءة الحق وإنى من فضله لمن المؤيَّدين۔ ولكن الذين لا يبتغون الحق فهم لا يعرفونى وقد رأوا آياتٍ من الله تعالى ثم هم من المنكرين۔ يصُولون ويسُبّون ويُحَمْلِقون وكادوا يتميَّزون من الغيظ ولا يفكّرون كالمسترشدين۔

و والله إنى صادق و لست من المفترين۔ و والله إنى لست خاطِبَ الدنيا الدنيّة و جيفتِها فيا حسرة على الظّانين ظنّ السوء و يا حسرة على المسرفين!

तू मुझे इंशाअल्लाह सच्चा दोस्त और सेवकों के समान मार्ग का साथी पाएगा और मुझे अल्लाह ने अपनी ओर से ऐसी शक्ति प्रदान की है जिस से मैं लोगों के दिलों से हर प्रकार का संदेह दूर करता हूँ और उसने मुझ पर ख़ुदा की सृष्टि को प्रशिक्षित करने, अकाट्य तर्क प्रस्तुत करने और सच्चाई के प्रदर्शन के दरवाज़े खोल दिए हैं और मैं अल्लाह के फ़ज़ल से निश्चित रूप से सहायता प्राप्त हूँ। परन्तु वे लोग जो सच्चाई की तलाश नहीं करते वे मुझे नहीं पहचानते। उन्होंने अल्लाह तआला के निशानों को देखा परन्तु फिर भी वे इंकार करने वाले हैं। वे (मुझ पर) हमला करते, गालियाँ देते और गहरी तेज़ नज़रों से देखते हैं और निकट है कि वे क्रोध के मारे फट पड़ें। वे सत्याभिलाषियों के समान सोचते समझते नहीं।

ख़ुदा की क़सम मैं सच्चा हूँ, झूठा नहीं। और ख़ुदा की क़सम मैं इस तुच्छ संसार और इसके मुर्दार की इच्छा नहीं रखता। बदगुमानी करने वालों पर खेद और इसी प्रकार सीमा से बढ़ने वालों पर खेद, बहुत खेद!

मेरी अवस्था एक ऐसे व्यक्ति के समान है जिसने अपने महबूब को हर चीज़ पर प्राथमिकता दी हो और उसी का हो गया हो और ख़ुदा से

إنما مثلی کمثل رجل آثَرَ حِبًّا علی کل شیء وتبتّلَ إلیه وسعی فی میادین الاقتراب واقتعد للقائه غارب الاغتراب وترك تراب الوطن وصحبة الاتراب وقصد مدینة حبیبه وذهب وترَك لِحِبّه البیتَ والفضة والذهب وترَك النفس لمحبوبه حتی صار کالفانین۔ وبعزّة الله وجلاله إنی آثرت وجه ربّی علیٰ کل وجه وبابه علی کل باب ورضاءه علی کل رضاء۔ وبعزّته إنه معی فی کل وقتی وأنا معه فی کل حین۔ وآثرت دولة الدین وهی تکفینی ولو لم یکن حبّةٌ لتجهیزی وتکفینی۔ وإنی منعم مع ید الإملاق وفارغٌ من الانفس والآفاق وشغَفنی ربی حُبًّا وأُشرِبَ فی قلبی وجهه وأنا منه بمنزلة لا یعلمها أحد من العالمین۔ أیها العزیز! کان بعض الاسرار فی أوائل الزمان

संबंध स्थापित करने का हर संभव प्रयास किया हो और उस से मिलने के लिए लम्बी यात्रा पर गया हो। और उसने अपने देश की मिट्टी और दोस्तों को छोड़ दिया हो और प्रियतम के घर की ओर जाने का प्रयास किया हो और चल दिया हो और उसने अपने महबूब के लिए सब कुछ, रुपय पैसे को छोड़ दिया हो अपितु इस सीमा तक कि अपने महबूब के लिए स्वयं को भूल गया हो कि उसकी अवस्था फना होने वालों जैसी हो गई हो। मुझे अल्लाह की प्रतिष्ठा और वैभव की क़सम कि मैंने अपने रब के तेजस्व को प्रत्येक चेहरे पर और उसके दरवाज़े को हर दरवाज़े पर और उसकी इच्छा को हर इच्छा पर प्राथमिकता दी है और क़सम है उसके सम्मान की कि वह हर समय मेरे साथ और मैं हर क्षण उसके साथ हूँ। मैंने धर्म की दौलत को प्राथमिकता दी और वही मेरे लिए पर्याप्त है चाहे मुझे दफ़नाने के लिए एक दाना तक न हो। सांसारिक धन संपत्ति से ख़ाली हाथ होने के बावजूद मैं समृद्ध हूँ। मेरे रब का प्रेम मेरी रग रग में समा गया और उसकी कृपा मेरे दिल में घर कर गई है और मेरा पद उसकी बारगाह में वह है जिसे संसार का कोई

مستورًا و كذلك كان قدرا مقدورًا ثم فی زماننا تبيّنَ القضاء وبرِح الخفاء وظهر خطأ العاسفين۔

و كذلك فعل ربنا ليقُمّ المتكبرين من علماء السوء وليُظهر قدرته على رغم أنف المتعصّبين۔ وإن مثل نزول المسيح كمثل نزول إيليا قد وعد الله لنزوله ثم جاء يحيى مقامه إنّ فى ذلك لهُدًى للمتفكرين۔ وإن كنت لا تعلم فاسأل اليهود والنصارى وقد تواترت هذه القصة عندهم وما اختلف فيها اثنان ففتِّشْ ولا تكن من المتقاعسين.

أيها الاخ العزيز! إن قصة إيليا من المتواترات

व्यक्ति नहीं जानता। हे मेरे प्रिय! आरंभिक युग में कुछ रहस्य और चिन्ह पर्दे में थे और ऐसा होना मुक़द्दर था। परन्तु फिर हमारे इस ज़माने में वह तक़दीर खुल कर सामने आ गई, पर्दा हट गया और अत्याचारियों की ग़लती प्रदर्शित हो गई।

हमारे रब ने ऐसा ही किया ताकि वह दुष्ट उलमा में से अहंकारी गिरोह का सफाया करे और नफ़रत करने वाले लोगों की नापसंदीदगी के बावजूद अपनी क़ुदरत को प्रदर्शित करे। मसीह का आगमन का उदाहरण एलिया के आगमन जैसा है कि अल्लाह ने उस एलिया के नुज़ूल (अवतरण) का वादा किया परन्तु उनके स्थान पर यह्या आ गया। इस में विचार विमर्श करने वालों के लिए हिदायत का सामान है। यदि तुझे मालूम नहीं तो यहूदियों और ईसाइयों से पूछ ले। उनके यहाँ यह घटना निरन्तरता से आई है और इस बारे में कोई दोराए नहीं। अत: अच्छी तरह से खोज-बीन कर और अकड़बाज़ न बन।

हे प्रिय भाई! अहले किताब में एलिया की घटना निरंतरता से चली आ रही है और इस वास्तविकता को अल्लाह ने इन (बनी इस्राईल) के नबियों पर

القطعية اليقينية فى أهل الكتاب و كشف الله تلك الحقيقة على أنبيائهم فبهداهم اقْتَدِهْ ولا تكن من المبدعين۔ ثم اعلم أننا قد اعتصمنا وتمسّكنا بمثال قد انجلى من قبل ولا مثال لكم فأى فريق أحقّ بالامن؟ فلا تجترء وا على المحدَثات واسألوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون سنن الله إن كنتم من الطالبين۔ وإنَّا أرينا كم سنّة الله فى الذين خلوا من قبلكم وما بيَّنتم مِن سنّة على دعوا كم ولن تجدوا لسُنن الله تبديلا فلا تُخالفوا كالمجترئين۔

وأنتم تعلمون أن الله قد ردّ على أقوالكم فى كتابه وذكر موت المسيح بلفظ التوفّى كما ذكر موتَ نبيّنا بذلك

प्रकट कर दिया है, अत: तू उनकी हिदायत का अनुसरण कर और अधर्मियों में से न बन। फिर स्पष्ट हो कि हमने इसी उदाहरण को दृढ़ता पूर्वक पकड़ा है जो पहले से स्पष्ट हो चुका था। लेकिन तुम्हारे पास तो कोई उदहारण नहीं फिर बताओ कि हम में से कौन सा पक्ष शांति का ज़्यादा अधिकार रखता है। अत: बिदअतों पर साहस न करो। यदि तुम अल्लाह की सुन्नत से अज्ञान हो तो जानने वालों से पूछ लो यदि वास्तव में तुम्हें सच्चाई की तलाश है। हम ने अल्लाह की उस सुन्नत को जो तुम से पहले लोगों में जारी हो चुकी है तुम पर स्पष्ट कर दिया है। परन्तु तुम ने अपने दावे की सच्चाई में ख़ुदा की कोई सुन्नत वर्णन नहीं की। (सच तो यह है कि) तुम अल्लाह की सुन्नत में कदापि कोई परिवर्तन नहीं पाओगे, अत: बेलगाम लोगों के समान विरोध न करो।

तुम जानते हो कि अल्लाह ने अपनी पुस्तक (क़ुरआन) में तुम्हारे कथन को रद्द किया है और मसीह की मृत्यु का वर्णन उस ने "तवफ़्फ़ी" के शब्द के साथ उसी प्रकार किया है जैसा कि उसने हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु का वर्णन इसी शब्द (तवफ़्फ़ी) से किया है। मसीह के बारे में तो तुम इस शब्द से अर्थ निकालते हो परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि

اللفظ فأنتم تؤوّلون ذلك اللفظ فی المسیح وأما فی سیدنا فلا تؤوّلونه فتلك إذًا قسمة ضیزی وخیانة فی دین الله ولکنکم لا تتّقونه ولا تجیبون تدبّرًا بل تذرِقون کطائر فی وقت طیرانه ولا تنزلون لتصفیةٍ ولا تخافون حَبْضَ قیاس الصادقین۔ وإن کنتم علی حق مبین فلم لا تأتونی بآیة شاهدة علی حیاة المسیح ونزوله وعلی سُنّةٍ خلت من قبل؟ و کیف نقبل بِدَعاتکم التی تُخالف کتاب الله وسُنن رسوله وسُنن الصادقین الذین خلوا من قبل؟ أنقبل قولکم ونذَر قول أصدق المعلمین؟ فأیها الشیخ الصالح! لا تکذّبوا آیات الله ولا تغمِطوا نِعَمَه بعد نزولها ولا تزدهوا المأمورین۔ وإن الذین یُنوَّرون من نور ربهم لا یخافون أحدًا إلا الله فلا تُسمِّ أحدًا منهم وجِلا ولا

वसल्लम के बारे में इसकी व्याख्या नहीं करते तो यह बड़ा अन्यायपूर्ण बंटवारा और अल्लाह के धर्म से धोखा है। परन्तु तुम अल्लाह से नहीं डरते और सोच समझ कर उत्तर नहीं देते। अपितु तुम उड़ने में मस्त पक्षी के समान बीट करते हो और सफ़ाई के लिए नीचे नहीं उतरते और सच्चों के तीर चलाने से नहीं डरते और यदि तुम वास्तव में सच्चाई पर हो तो फिर मसीह के जीवित होने और उसके अवतरण पर और (इस संदर्भ में) पिछली खुदाई सुन्नत पर गवाह कोई आयत प्रस्तुत क्यों नहीं करते? और हम तुम्हारी इन बिदअतों (आडम्बरों) को कैसे स्वीकार कर सकते हैं जो अल्लाह की किताब और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के विरुद्ध हैं। इसी प्रकार उन सत्यनिष्ठों की पद्धति के भी विरुद्ध हैं जो पहले गुज़र चुके हैं? क्या हम तुम्हारे कथन को स्वीकार कर लें और समस्त मार्गदर्शकों में से अधिक सच्चे (रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के कथन को छोड़ दें? अत: हे नेक बुज़ुर्ग! अल्लाह की आयतों को न झुठलाओ और उसकी नेमतों का उनके आने के बाद अपमान न करो। और रसूलों का अपमान न करो। वे लोग जो अपने रब के प्रकाश से प्रकाशित किए जाते हैं वे अल्लाह के अतिरिक्त किसी से नहीं डरते इसलिए तू

خجِلا ولا تبارز اللّٰہ ولا تجترئ علی رب السماوات والارض ولا تقفُ ظنونًا لا تعلم حقیتھا وإن الظن لا یغنی من الحق شیئا فیظھر الحق وتکون من المتندّمین۔ إنّ أکُ کاذبًا فعلیَّ وبال کذبی وإن أکُ صادقا فاللّٰہ یعیننی وینصرنی ویُری الخَلْق صدقی ونوری واللّٰہ لا یضیع عبادہ الصادقین. وقد کُفِّر۔

مثلی کثیر من الاولیاء والاقطاب والائمۃ فبعضھم صُلبوا وقتلوا وبعضھم أُخرجوا من أوطانھم ودیارھم وأُوذوا حتی جاء ھم نصر اللّٰہ فما أُضیعوا وما خُیّبوا وزادھم اللّٰہ برکۃً وعزّۃ وجعل کثیرا من أفئدۃٍ تھوی إلیھم وبلّغ

उनमें से किसी को भी डरपोक और शर्मिंदा के नाम से न पुकार। अल्लाह से मुक़ाबला न कर और आसमानों और ज़मीन के परवर्दिगार के विरुद्ध साहस न दिखा और उन संदेहों के पीछे न लग कि जिन की वास्तविकता का तुझे ज्ञान नहीं और निश्चित रूप से संदेह वास्तविकता के मुक़ाबले पर कुछ भी काम नहीं आता। अत: सच विजयी होगा और तुझे पछतावा होगा। यदि मैं झूठा हूँ तो मेरे झूठ का भार मुझ पर पड़ेगा और यदि मैं सच्चा हुआ तो अल्लाह मेरी मदद तथा सहायता करेगा और समस्त मानवजाति को मेरी सच्चाई और मेरा नूर दिखाएगा और अल्लाह अपने सच्चे बन्दों को कभी नष्ट नहीं करता।

मेरे समान बहुत से वलियों और इमामों को काफ़िर ठहराया गया। उन में से कुछ सूली पर चढ़ाए गए और कुछ क़त्ल किए गए और कुछ को उनके देशों और घरों से निकाल दिया गया और उन्हें कष्ट दिए गए यहाँ तक कि अल्लाह की सहायता उनके पास आ गई। न तो वे नष्ट किए गए न ही असफ़ल हुए। अपितु अल्लाह ने उन्हें बरकत और सम्मान में बढ़ाया और अधिकतर दिलों को उनकी ओर आकर्षित कर दिया और उनकी बरकतों के चिन्ह बाद में आने वाली सदियों तक पहुंचा दिए। इसी प्रकार मेरे रब ने मुझे ख़ुशख़बरी दी और फ़रमाया :

آثـار بركاتـهم إلى قـرن آخريـن و كذلـك بشّـرنى ربّى و قـال: "إنى سـأُوتيكَ ★بَرَكـةً و أُجـلِّى أَنوارَهـا حـتى يتـبرك بثيابـك الملـوكُ و السـلاطينُ." وقـال: "إنى مُهـينٌ مَـن أراد

मैं तुझे बरकत★ दूंगा और इसके प्रकाश को रौशन करूंगा यहाँ तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे। और फ़रमाया मैं उस व्यक्ति का अपमान करूंगा जो तुझे अपमानित करने का इरादा करेगा और वे लोग जो तुझ पर उपहास करते हैं उनके लिए हम काफी हैं। हे अहमद! ख़ुदा ने तुझ में बरकत

★الحاشـية :مـن كان يؤمـن بـالله و آياتـه فقـد وجـب عليـه أن يؤمـن بـأن الله يـوحى إلى مـن يشـاء مـن عبـاده رسـولا كان أو غـير رسـول و يكلّـم مـن يشـاء نبيًّـا كان أو مـن المحدَّثـين ألا تـرى أن الله تعـالى قـد أخـبر فى كتابـه أنـه كلَّـم أُمَّ مـوسى وقـال بقيـة الحاشـية و كذلـك أوحى إلى الحواريـين و كلّـم ذا القرنـين و أخبَرنـا بـه فى كتابـه ثـم بشّـر لنـا وقـال وفى هـذه الآيـة أشـار إلى أن هـذه الامّـة يُكلَّـم كمـا كُلِّمـت الامـم مـن قبـل فمـن كان له صدق رغبـة فى الا تّعاظ بالقـرآن فـلا يـتردد بعـد بيـان كتـاب الله ولا يكـون مـن المرتابـين ومـن لـم يبـال امتثـالَ

★हाशिया :- जो कोई अल्लाह और उसकी आयतों पर ईमान लाता है उस पर अनिवार्य है कि वह इस बात पर भी ईमान लाए कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिस की ओर चाहता है वह्यी करता है, चाहे वह रसूल हो अथवा गैर रसूल और जिस से चाहता है वार्तालाप करता है चाहे वह नबी हो या मुहद्दस। क्या तुम सूक्ष्म दृष्टि से नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक में यह ख़बर दी है कि उसने मूसा की मां से वर्तालाप किया और उसे कहा कि

لَا تَخَافِىْ وَ لَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَ جَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ. (अलकसस-8)

अर्थात कोई भय न कर और कोई दु:ख न कर। हम निस्संदेह उसे तेरी ओर दोबारा लाने वाले हैं और उसे रसूलों में से एक रसूल बनाने वाले हैं।

और इसी प्रकार उस ने हवारियों की ओर वह्यी की और ज़ुलक़रनैन से वार्तालाप की और उसके बारे में उसने अपनी पुस्तक में हमें ख़बर दी फिर हमें ख़ुशख़बरी दी और फ़रमाया:

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿۴۰﴾ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿۴۱﴾ (अलवाकिया-40,41)

إهانتَك وإنّا كفيناك المستهزئين۔ يا أحمدُ بارَكَ اللّٰهُ فيك
ما رميتَ إذ رميتَ ولكن الله رمٰى لتُنذِرَ قومًا ما أُنذِرَ

रख दी है जो कुछ तूने चलाया वह तूने नहीं चलाया अपितु ख़ुदा ने चलाया ताकि तू उन लोगों को डराए जिनके बाप-दादा डराए नहीं गए और ताकि

أوامره وانتهاء نواهيه فما آمن به وما كان من المؤمنين وقد اتفق الاولياء كلّهم على أن لله تعالى مخاطباتٍ ومكالماتٍ بالمحدَّثين كما قال سيدى وحبيبى الشيخ عبد القادر الجيلانى رضى الله عنه فى كتابه الفتوح تعليما للسالكين ومن ملخصات كلامه أنه قال إن لاهل الله علاماتٍ يُعرَفون بها فمنها الخوارق والكشوف ومكالمات الله تعالى بقية الحاشية وخوف الله وخشيته وإيثاره على غيره وكلما يجب للمتقين وقال إذا مِتَّ عن الخَلْق قيل لك رحمك الله وأَمَاتَك عن إرادتك ومُناك وإذا مِتَّ عن الإرادة ومُناك قيل لك رحمك الله وأَحْيَاك فكنت من المرحومين فحينئذ تُحيٰى حياة لا موت بعدها وتُغنَىٰ غناءً لا فَقْرَ بعده وتُعطى عطاءً لا منع بعده وتُراحُ براحةٍ لا شقاء بعدها وتنعم بنعيم لا بؤس بعده وتُعلَّم علمًا لا جهل

अर्थात पहलों में से एक बड़ी जमाअत है और पिछलों में से भी एक बड़ी जमाअत है।

और इस आयत में उसने वह संकेत दिया कि जिस प्रकार पहली उम्मतों से इल्हाम-कलाम किया गया उसी प्रकार इस उम्मत से भी इल्हाम-कलाम किया जाएगा। अत: जिस व्यक्ति को कुरआन से नसीहत प्राप्त करने के लिए सच्चा आकर्षण होगा तो उसे अल्लाह की पुस्तक (कुरआन) की व्याख्या के बाद कोई संदेह न होगा और न वह संदेह करने वालों में से होगा। जो व्यक्ति कुरआन के आदेशों का पालन और उस की निषेध चीज़ों से बचे रहने का ध्यान नहीं रखता तो वह न उस पर ईमान लाया और न वह मोमिनों में से है और समस्त वलियों ने इस बात पर सहमती प्रकट की है कि अल्लाह तआला के मुहद्दसों के साथ इल्हाम-कलाम और संबोधन होते हैं, जैसा कि मेरे स्वामी और मेरे प्रिय शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी[रज़ि] ने अपनी पुस्तक "फुतूहुल ग़ैब" में साधकों को शिक्षा देते हुए फ़रमाया। आप के लेखन का सारांश यह है कि आप ने फ़रमाया कि अल्लाह वाले लोगों के कुछ चिन्ह होते हैं जिन से वे पहचाने जाते हैं। उन चिन्हों में चमत्कार और कश्फ़ और अल्लाह तआला के इल्हाम-कलाम और अल्लाह का भय और उस (ख़ुदा) को दूसरों पर प्राथमिकता देना है और जो भी संयमियों के लिए आवश्यक है। इसी प्रकार आप फ़रमाते

آباؤهم ولِتستبينَ سبيل المجرمين۔ قُلْ إني أُمِرتُ وأنا أوّلُ المؤمنين۔ قُلْ جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان

मुजरिमों का मार्ग प्रकट हो जाए अर्थात मालूम हो जाए कि कौन तुझ से अलग होता है। कह मैं ख़ुदा की ओर से भेजा गया हूँ और मैं सबसे पहले

بعده وتُؤَمَّن أمنًا لا تخاف بعده وتسعد فلا تشقى وتُعَزّ فلا تُذلّ وتُقرَّب فلا تُبعَد وتُرفَع فلا تُوضَع وتُعظَّم فلا تُحقَّر وتُطهَّر فلا تُدنَّس ونجّاك الله وطهّرك من أدناس طرق الفاسقين فيتحقق فيك الإماني وتصدُق فيك الأقاويل فتكون كِبْريتًا أحمرَ فلا تكاد تُرى وعزيزًا فلا تُماثَل وفريدًا فلا تُشارَك ووحيدًا فلا تُجانَس وتكون عند ربك من أهل بقية الحاشية السماء لا من أهل الأرضين فردُ الفردِ وترُ الوتر غيب الغيب سرّ السرّ فحينئذٍ تكون وارثَ كل رسول ونبيّ وصِدّيق فتُعطَى كلَّ ما أُعْطُوا من الأنوار والأسرار والبركات والمخاطبات والوحي والمكالمات وغيرها من آيات رب العالمين وبِكَ تُختَم الولاية وإليك تصدُر الأبدال وبك تنكشف الكروب وبك تُسقَى الغيوث وبك تنبت الزروع وبك تُدفَع البلايا والمحن

हैं जब तू संसार वालों से पृथक हो जाएगा तो तुझे कहा जाएगा कि "अल्लाह तुझ पर रहम करे और तुझ से तेरे इरादे और तेरी इच्छाओं को समाप्त कर दे और जब तू अपने इरादे और इच्छाओं से पृथक हो जाएगा तो तुझे कहा जाएगा कि "अल्लाह तुझ पर रहम करे और तुझे ज़िन्दगी प्रदान करे।" इस प्रकार तू मरहूम लोगों में से हो जाएगा। तब तुझे वह ज़िन्दगी प्राप्त होगी जिसके बाद कोई मौत नहीं और तुझे ऐसी दौलत प्राप्त होगी जिसके बाद कोई चिंता नहीं। और तुझे वह दिया जाएगा कि जिस के बाद वंचित नहीं किया जाएगा और ऐसा आराम मिलेगा जिस के बाद कोई दु:ख नहीं और ऐसी नेमत प्रदान की जाएगी जिस के बाद कोई तंगी नहीं और ऐसा ज्ञान दिया जाएगा जिसके बाद कोई मूर्खता नहीं और ऐसी शांति प्रदान की जाएगी जिसके बाद कोई भय नहीं और तुझे सौभाग्य प्राप्त होगा न कि कोई कष्ट और तुझे सम्मान प्राप्त होगा न कि अपमान। और तुझे निकटता प्राप्त होगी न कि दूरी और तुझे ऊँचाई प्राप्त होगी न कि पतन और तेरी प्रतिष्ठा होगी न कि अपमान और तू पवित्र और साफ किया जाएगा और तुझ पर कोई मलिनता नहीं रहेगी। अल्लाह तुझे मुक्ति प्रदान करे! और पापियों के मार्गों के मेल मिलाप से पवित्र करे! तब जो आशाएं तेरे बारे में हैं वे सच हो जाएंगी और जो बातें तेरी सच्चाई में कही जाती हैं वे सच्ची हो जाएंगी और तू ऐसा किब्रियते अहमर

زهوقا۔ كلُّ بركة مِن محمد صلى الله عليه وسلم فتَبارَكَ مَن علَّم وتعلَّمَ۔ وقل إنِ افتريتُه فعليّ إجرامي ويمكُرون

ईमान लाने वाला हूँ। कह सच्चाई आई और झूठ भाग गया और झूठ भागने वाला ही था। हर एक बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर

من الخاص والعام وأهل الثغور والراعي والرعايا والائمة والائمّة وسائر البرايا فتكون شِحْنةَ البلاد والعباد ومن المأمورين فينطلق إليك الارجلُ بالسعي والترحال والايدى بالبذل والعطاء والخدمة بإذن خالقِ الاشياء فى سائر الاحوال والالسنُ بالذكر الطيّب والحمد والثناء فى جميع المحال ولا يختلف إليك اثنان من أهل الإيمان وتهوى إليك بقية الحاشية أفئدة من العُلماء والائمّيّين ويدعوك لسانُ الازل ويُعلّمك ربُّ المُلك ويكسوك أنوارًا منه والحُلل ويُنزِلك منازلَ مَن سلَف من أولى العلم الاوّل من الانبياء والصدّيقين فحينئذٍ يُضاف إليك التكوين وخرق العادات فيُرَى ذلك منك فى ظاهر العقل والحكم وهو فعل الله وإرادته حقًّا فى العلم فتدخل حينئذٍ

(सूफ़ियों का एक स्तर) बन जाएगा कि देखा न जाएगा। और तू ऐसा सम्माननीय हो जाएगा जिसका कोई उदाहरण न हो और ऐसा अद्वितीय कि जिसके समान कोई न हो और तू अल्लाह के निकट आसमानी वजूद हो जाएगा न कि ज़मीनी बल्कि तू अकेला और एक (अद्वितीय वजूद) ग़ैब में फ़ना और सूक्ष्म से सूक्ष्म हो जाएगा। तब तू प्रत्येक रसूल, नबी और सिद्दीक़ का वारिस हो जाएगा और जो जो प्रकाश और रहस्य, बरकतें और इल्हाम-कलाम, वह्यी और संबोधन इत्यादि समस्त ब्रह्मांड के रब के निशान उन्हें प्रदान किए गए वे तुझे भी प्रदान किए जाएंगे और तुझ पर विलायत समाप्त होगी और तू (नेक लोगों) का केंद्र बन जाएगा। तेरे कारण कठिनाइयां दूर होंगी और बारिशें तृप्त करेंगी और फसलें उगेंगी और तेरे कारण ही विशेष तथा सामान्य लोगों की समस्याएँ और कष्ट और सरहदों में बसने वालों, राजा और प्रजा, इमामों और उम्मत इसी प्रकार समस्त संसार के दुखों का निवारण होगा और तू इलाकों और वहां के लोगों का रक्षक होगा और मामूरों में से होगा। तेरी ओर पैदल और सवार तेज़ कदमों से चल कर आएँगे। इसी प्रकार समस्त वस्तुओं के बनाने वाले ख़ुदा के आदेश से उदारता और सेवा के लिए हर समय हाथ तेरी ओर बढ़ेंगे और ज़बानें पवित्र चर्चा करते हुए और हर स्थान पर ख़ुदा की प्रशंसा के गीत गाते हुए तेरे पास आएँगी, और ईमान वालों में से कोई दो व्यक्ति भी तेरे बारे में मतभेद नहीं करेंगे। और विद्वानों तथा अनपढ़ों के दिल

ويمكُر الله والله خير الماكرين۔ هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليُظهِره على الدين كله۔ لا مبدِّلَ لكلمات

से है। अत: बड़ा मुबारक वह है जिसने शिक्षा दी और जिसने शिक्षा प्राप्त की। और कह यदि मैंने झूठ बोला है तो मेरी गर्दन पर मेरा गुनाह है। वे लोग

فى قومٍ مُوجَعٍ وفى زمرة المنكسرين الذين انكسرت قلوبهم وكُسرت إراداتهم البشرية وأُزيلت شهواتهم الطبيعية فاستُؤنفتْ لهم إرادة ربّانية وشهوات وظيفية وكانوا من المبدَّلين ويُكشَف للاولياء والابدال من أفعال الله ما يبهر العقول ويخرِق العادات والرسوم ويكلّمهم الله تعالى بالكلام اللذيذ والحديث الانيس والبشارة بالمواهب الجِسام والمنازل العالية والقُرب منه مما بقية الحاشية سيؤول أمرُهم إليه وجفَّ به القلمُ من أقسامهم فى سابق الدهور فضلا منه ورحمة وإثباتًا منه لهم فى الدنيا إلى بلوغ الاجل وهو الوقت المقدَّر لهم من أرحم الراحمين وقال الله تعالى فى بعض كتبه يابن آدم أنا الله لا إله إلا أنا أقول لشىء كُن فيكون أَطِعْنى

तेरी ओर आकर्षित हो जाएंगे ख़ुदा तुझे पुकारेगा और रब्बुल मुल्क तुझे शिक्षा देगा और अपनी ओर से नूर के वस्त्र तुझे पहनाएगा और तुझे नबियों तथा सिद्दीक़ों में से गुज़रे हुए प्रथम श्रेणी के विद्वानों के पदों पर सुशोभित करेगा। तब अम्रे तक्वीन* और विलक्षण निशान तुझे प्रदान किए जाएंगे अत: यह बुद्धि और विवेक के ज़ाहिरी काम तेरे द्वारा होंगे और वास्तविक ज्ञान में वे ख़ुदा का इरादा और कार्य होंगे तब तू ऐसे दर्दमंद लोगों और विनम्र स्वभाव वाले गिरोह में सम्मिलित हो जाएगा कि जिन के दिलों में विनम्रता है और जिन की मानवीय इच्छाएं समाप्त हो चुकी हैं और उनकी प्राकृतिक इच्छाएं उन से पृथक कर दी गईं हैं जिसके परिणामस्वरूप ख़ुदा की इच्छा और प्रतिदिन की आवश्यक इच्छाएं उनके लिए एक नए रंग में प्रदर्शित हो जाती हैं जिन से वे बिलकुल परिवर्तित हो जाते हैं और अल्लाह के कार्य वलियों और अब्दाल (अर्थात अल्लाह के प्रिय लोगों) पर कुछ इस प्रकार खुलते हैं कि बुद्धि को आश्चर्यचकित कर देते हैं और वे विलक्षण होते हैं और अल्लाह तआला उन से वार्तालाप करता है और प्रेमपूर्वक बातें करता है और उन्हें महान पुरुस्कार और उच्च पद और अपनी निकटता की ऐसी ख़ुशख़बरी देता है कि जिस से उनका प्रत्येक मामला अल्लाह की ओर पलट जाता है। गुज़रे हुए ज़मानो में उन जैसे (उच्च श्रेणी वाले बुज़ुर्गों के कारनामों) का

*** अम्रे तक्वीन**- सानिध्य की वह श्रेणी कि जब बंदा कुछ कहे तो अल्लाह उसे पूरा कर दे- अनु.

اللهِ۔ إني معك فكُنْ معي أينما كنتُ۔ كُنْ مع الله حيثما كنتَ۔ أينما تُولّوا فثَمَّ وجهُ الله۔ كنتم خيرَ أُمّة أُخْرِجتْ

भी उपाय कर रहे हैं और अल्लाह तआला भी उपाय कर रहा है और अल्लाह का उपाय सब से श्रेष्ठ होता है। उसी ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि इस धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे। ख़ुदा की

أجعَلُك تقول للشيء كُنْ فيكون قد جعل الله أولياء ه أوتادَ الارض وجعل الدنيا لهم جنّةَ المأوى فلهم جنّتان الدنيا والآخرة وهم كالجبل الذى رسا تفرّدوا فى الصدق والوفاء والتقوى فتَنَحَّ عن طريقهم ولا تُزاحِمْ يا مسكين الرجال الذين ما قيّدهم أحد عن قصد الحق من الآباء والامهات والبنات والبنين فهم خيرُ مَن خلَق ربّى وبَثَّ فى الارض وذرَأ فعليهم سلام الله وتحياته وبركاته أجمعين أيها السالك إذا قوِى علمك و بقية الحاشية يقينك وشرح صدرك وقوى نور قلبك وزاد قربُك من مولاك ومكانُك لديه وأمانتُك عنده وأهليّتُك لحفظ الاسرار فعُلِّمتَ من لدنه ويأتيك قِسْمُك قبل حين

इतना वर्णन है कि जिसके लिखने से क़लम की सियाही सूख गई और (यह सब कुछ) अल्लाह की कृपा और दया और उसकी ओर से उन्हें (जरीद-ए-आलम में) अंतिम सांस तक दृढ़ता प्रदान करने के कारण हुआ और यही उनकी ओर से दया करने वालों में सबसे अधिक दयालु ख़ुदा की ओर से निर्धारित समय था और अल्लाह तआला ने अपनी किसी किताब में फ़रमाया है कि हे आदम के बेटे! मैं अल्लाह हूँ और मेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं (जब) मैं किसी चीज़ के बारे में कहता हूँ कि हो जा, तो वह होने लगती है और हो कर रहती है। तू मेरी आज्ञा का पालन कर। मैं तुझे भी ऐसा बना दूंगा कि (यदि) तू किसी वस्तु के बारे में यह कहेगा कि हो जा तो वह होने लगेगी। अल्लाह ने वास्तव में अपने वलियों को ज़मीन के लिए बतौर पहाड़ और मीनार बनाया है और संसार को उनके लिए स्वर्ग बना दिया है। उनके लिए दो स्वर्ग हैं दुनिया और आख़िरत। और वे उस पहाड़ के समान हैं जो ज़मीन में दृढ़ता से गड़ा हुआ हो, वे (औलिया) सच्चाई और ईमानदारी और संयम में विशिष्ट हो गए। अत: बेहतरी यही है कि हे असहाय! तू उनके मार्ग से हट जा और रुकावट न बन यह वली वे लोग हैं कि उनके बापों, माओं, बेटियों और बेटों में से कोई भी उन्हें ख़ुदा के मार्ग से रोक न सका। इसलिए ये लोग, मेरे रब ने जो पैदा किया और ज़मीन में फैलाया उस में से सर्वश्रेष्ठ हैं। अत: उन सब पर अल्लाह की सलामती और उसकी इनायतें और बरकतें नाज़िल हों।

للنــاس وفخـرًا للمؤمنـين۔ ولا تيـأَسْ مِـن رَوحِ الله۔ ألا إن روحَ الله قريـب۔ ألا إن نصـر الله قريـب۔ يأتيـك مِـن كلّ فَـجٍّ عميـقٍ۔

बातों को कोई परिवर्तित नहीं कर सकता। मैं तेरे साथ हूँ अत: तू हर एक स्थान पर मेरे साथ रह, तू जहाँ भी हो अल्लाह तआला के साथ रह। जिस ओर तुम मुख करोगे उसी ओर अल्लाह तआला का ध्यान होगा। तुम सर्वश्रेष्ठ

وتلـك كرامـةٌ لـك وإجلالٌ لحرمتـك فضـلا منـه ومنّـةً وموهبـةً ثـم يَـرِدُ عليـك التكويـن فتُكَـون بـالإذن الصريـح الذى لا غُبـار عليـه والدلالات اللائحـة كالشـمس المنـيرة وبـكلامٍ لذيـذ ألذّ مـن كل لذيـذٍ وإلهـامٍ صـدقٍ مِـن غـير تلبُّسٍ مُصفًّـى مـن هواجس النفس ووسـاوس الشـيطان اللعين تـمَّ كلام السـيّد الجليل قُطب الوقـت إمـام الزمـان رضـى الله عنـه وقـد كتبنـاه بتلخيـصٍ منّـا فارجـع إلى كتابـه فتـوح الغيـب إن كنـتَ مـن المرتابـين وقـد ظهـر مـن كلام الإمـام الموصـوف أن الـوحى كمـا ينـزل عـلى الانبيـاء كذلـك ينـزل عـلى الاولياء بقيـة الحاشـية ولا فـرّق فى نـزول الـوحى بـين أن يكـون إلى نـبيٍّ أو ولِيٍّ ولـكلٍّ حـظٌّ مـن

हे सद्मार्ग पर चलने वाले! जब तेरा ज्ञान और तेरा विश्वास दृढ़ हो जाए और तुझे हार्दिक संतुष्टि प्राप्त हो जाए और जब तेरे दिल का नूर शक्तिशाली हो जाए और अपने मौला से निकटता और उसके दरबार में तेरा स्थान, और उसके पास तेरी अमानत और भेदों की सुरक्षा के लिए तेरा सामर्थ्य बढ़ जाए तो तुझे उसके पास से ज्ञान प्रदान किया जाएगा और मौत से पहले ही तुझे तेरा नसीब मिल जाएगा और यह उसकी कृपा और उपकार और उसकी इनायत से तेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान होगा और तेरी प्रतिष्ठा और गरिमा के लिए गर्व का कारण। अत: ख़ुदा के ऐसे स्पष्ट आदेश से जिस में कोई मलिनता नहीं और प्रकाशमान सूर्य जैसे स्पष्ट तर्क और प्रत्येक स्वादिष्ट चीज़ से अधिक स्वादिष्ट बात से और ऐसे सच्चे इल्हाम से जो संदेहों तथा स्वाभाविक विचारों से पवित्र और धिक्कार योग्य शैतान के हमलों से पवित्र हो, तू साहिबे तक्वीन हो जाएगा। यहाँ अत्यंत सम्माननीय, युग के क़ुतुब और समय के इमाम[रज़ि] की बात समाप्त हुई। हम ने यहाँ जो लिखा है वह हमारी ओर से उनके (लेखों) का केवल सार है। इसलिए यदि तुम्हें कोई संदेह हो तो उनकी पुस्तक फुतूहुल ग़ैब की ओर ध्यान करें। इमाम साहिब (हज़रत शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी) के लेख से यह प्रदर्शित हो गया है कि जिस तरह नबियों पर वह्यी होती है वैसे ही वलियों पर भी होती है और वह्यी के उतरने में कोई अंतर नहीं चाहे नबी की ओर हो या वली की ओर। उनमें से हर एक को अल्लाह से इल्हाम-कलाम से श्रेणी अनुसार भाग

ينصرك الله مِن عنده۔ ينصرك رجالٌ نوحى إليهم من السماء ۔ لا مبدِّلَ لكلمات الله و إنك اليوم لدينا مَكينٌ أمين۔ وقالوا

उम्मत हो जो लोगों के लाभ के लिए और मोमिनों के लिए गर्व का कारण बना कर पैदा की गई है। और तू ख़ुदा की रहमत से निराश न हो। ख़बरदार हो कि ख़ुदा की रहमत निकट है। ख़बरदार हो कि ख़ुदा की सहायता निकट

مكالمات الله تعالى و مخاطباته على حسب المدارج نعم لوحى الانبياء شأنٌ أتمّ و أكملّ و أقوى أقسامِ الوحى وحيُ رسولنا خاتم النبيين وقال المجدّد الإمام السرهندى الشيخ أحمد رضى الله عنه فى مكتوب يكتب فيه بعض الوصايا إلى مريده محمد صدّيق اعلم أيها الصديق أن كلامه سبحانه مع البشر قد يكون شفاهًا و ذلك الافراد من الانبياء و قد يكون ذلك لبعض الكُمَّلِ مِن متابعيهم و إذا كثُر هذا القسم من الكلام مع واحد منهم يُسمّى مُحدَّثًا و هذا غير الإلهام و غير الإلقاء فى الروع و غير الكلام الذى مع المَلَك إنما يُخاطَب بهذا الكلام الإنسانُ الكامل و الله يختص برحمته

मिलता है। हां नबियों की वह्यी शान में संपूर्ण तथा परिपूर्ण होती है और वह्यी के समस्त प्रकारों में से शक्तिशाली वह्यी हमारे रसूल ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह्यी है। (हज़रत) मुजद्दिद इमाम सरहिंदी शेख अहमदरज़ि के एक पत्र में जिसमें उन्होंने अपने एक मुरीद मुहम्मद सिद्दीक को कुछ वसीयतें लिखी हैं यह फ़रमाया है : मियां सिद्दीक़! याद रखो कि अल्लाह तआला का एक मनुष्य से वार्तालाप भी तो आमने सामने होता है और यह नबियों से होता है और कभी-कभी उनके कुछ परम मुरीदों से होता है और जब इस प्रकार का वार्तालाप उनमें से किसी के साथ अधिकता से हो तो ऐसे व्यक्ति को मुहद्दस के नाम से नामित किया जाता है। यह न ही इल्हाम होता है और न ही हृदय में डाला जाने वाला इल्क़ा होता है और न ही ऐसा वार्तालाप होता है जो फ़रिश्ते के द्वारा हो अपितु यह वह वार्तालाप है जिससे एक संपूर्ण व्यक्ति संबोधित किया जाता है और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी दया के लिए विशेष कर लेता है। यहां अहमद सरहिंदी की बात समाप्त होती है। यदि तू इंकार करने वालों में से है तो उन की बात की ओर लौट जा और उस व्यक्ति की घटना को याद कर जिस ने यह कहा था कि وَ مَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِیْ अर्थात मैंने ऐसा अपनी इच्छा से नहीं किया (अल कहफ़:- 82) यद्यपि वह रसूलों में से नहीं था इसी प्रकार अल्लाह तआला के उस आदेश को याद कर-

إنْ هـذا إلا اختـلاق۔ قُـل اللّٰه ثـم ذَرْهـم فی خوضـهم یلعبـون۔ ومَـن أظلـم ممـن افـتری عـلی اللّٰه کذبـا۔ وإنّ علیـك رحمـتی فی الدنیـا

है। वह सहायता हर एक दूर के मार्ग से तुझे पहुंचेगी। ख़ुदा अपनी ओर से तेरी सहायता करेगा। तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके दिलों में हम अपनी ओर से इल्हाम करेंगे। ख़ुदा की बातें टल नहीं सकतीं। और तू हमारे निकट

من یشـاء تـمَّ کلامـه فارجـعْ إلی کلامـه إن کنـت مـن المنکریـن واذکُـرْ قصـة مـن قـال بقیـة الحاشـیة۔وما کان مـن المرسـلین واذکُرْ مـا قـال اللّٰه تعـالی فانظُـرْ کیـف کلَّـم مَلَـكُ اللّٰه مریـمَ ومـا کانـت نبیّـةً فاتّـقِ اللّٰه ولا تکـن مـن المعتدیـن

وقـد جـاء فی الحدیـث الصحیـح عـن عمـرو بـن الحـارث قـال بینمـا عمـرُ یخطـب یـوم الجمعـة إذا تـرك الخُطبـة ونـادی یـا سـاریةُ الجبـل مرتـین أو ثـلا ثـا ثـم أقبـلَ عـلی خطبتـه فقـال نـاسٌ مـن أصحـاب رسـول اللّٰه صـلی اللّٰه علیـه وسـلم إنـه لمجنـون تـرَك خطبـة ونـادی بقیـة الحاشـیة یـا سـاریة الجبـل فدخـل علیـه عبـد الرحمـن بـن عـوف وکان ینبسـط علیـه فقـال یـا أمـیر المؤمنـین تجعـل

فَاَرْسَـلْنَآ اِلَیْهَـا رُوْحَنَـا فَتَمَثَّـلَ لَهَـا بَشَـرًا سَـوِیًّا. قَالَـتْ اِنِّیْٓ اَعُـوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْـكَ اِنْ کُنْـتَ تَقِیًّـا. قَـالَ اِنَّمَـآ اَنَـا رَسُـوْلُ رَبِّـكِ ۖ لِاَهَـبَ لَـكِ غُلٰمًـا زَکِیًّـا۔
(सूर: मरयम 18 से 20)

अर्थात तब हमने उसकी ओर अपना फ़रिश्ता भेजा और उसने उसके लिए एक मनुष्य का रूप धारण किया। उसने कहा मैं तुझसे रहमान की पनाह में आती हूं यदि तू संयम धारण करे। उस (मरियम) ने कहा मैं तो तेरे रब का केवल एक संदेश वाहक हूं ताकि तुझे एक पवित्र सुंदर रूप वाला लड़का प्रदान करूं। अत: विचार करो कि अल्लाह के फ़रिश्ते ने मरियम से किस प्रकार वार्तालाप किया यद्यपि वह नबी न थी। अत: अल्लाह से डर और अन्याय करने वाला न बन।

एक सही हदीस में अमर बिन हारिसरज़ि से रिवायत है कि जुमे के दिन हज़रत उमररज़ि ख़ुत्बा दे रहे थे कि अचानक ख़ुतबा रोक कर दो या तीन बार (हे सारिया! पहाड़ की ओर) पुकारा और फिर से ख़ुत्बा देने लगे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से कुछ लोगों ने कहा कि उमर दीवाना है कि ख़ुत्बा छोड़कर "या सरिया अलजबल" कह रहा है। इसके बाद अब्दुर्रहमान बिन औफ़रज़ि हज़रत उमररज़ि की सेवा में उपस्थित हुए और बिना किसी झिझक के आप से कहा कि अमीरुल मोमिनीन आपने अपने विरुद्ध लोगों को बातें बनाने का अवसर दिया

والدین و إنک لمن المنصورین۔ بُشریٰ لک یا أحمدی أنت مرادی و معی غرستُ کرامتک بیدی۔ أکان للناس عجبًا قُلْ ھو اللّٰہ عجیب۔ یجتبی من یشاء من عبادہ لا یُسأل عما یفعل و ھم یُسألون۔ و تلک الایام نداولھا بین الناس۔ و إذا

पद योग्य है और अमानतदार है। और वे कहेंगे कि यह वह्यी नहीं है यह बातें तो अपनी ओर से बनाई गईं हैं। उनको कह कि वह ख़ुदा है कि जिसने यह बातें उतारीं हैं फिर उन को खेल कूद के विचारों में छोड़ दे और उस से अधिक अत्याचारी और कौन है जो ख़ुदा तआला पर झूठ बांधे। और तुम पर मेरी रहमत संसार और धर्म में है और तू निस्संदेह उन लोगों में से है जिनके

للناس علیک مقالا؟ بینما أنت فی خطبتک إذ نادیتَ یا ساریةُ الجبلَ أیُّ شیء ھذا؟ قال و اللّٰہ ما ملکتُ ذٰلک حین رأیتُ ساریةَ و أصحابہ یقاتلون عند جبل و یُؤتَون مِن بین أیدیھم و من خلفھم فلم أملِکْ أن قلتُ یا ساریةُ الجبلَ لیلحقوا بالجبل فلم تمض الایام حتی جاء رسولُ ساریة بکتابہ أن القوم لقُونا یوم الجمعة فقاتلناھم مِن حین صلّینا الصبح إلی أن حضرت الجمعةُ فسمعنا صوتَ منادٍ یُنادی الجبلَ مرتین فلحقنا بالجبل فلم نزل لعدوّنا قاھرین حتی ھزمھم اللّٰہ تعالی و ترای فتح مبین۔۱۲ المؤلف

है इसलिए कि आपने अपने ख़ुत्बे के बीच उच्च स्वर में "या सरिया अलजबल" के शब्द कहे। यह मामला क्या है? आप[रज़ि] ने कहा कि ख़ुदा की क़सम मुझे अपने ऊपर काबू न रहा कि जब मैंने सारिया और उसके साथियों को पहाड़ के निकट शत्रु से लड़ते हुए देखा कि शत्रु उन पर सामने से भी और पीछे से भी आक्रमण कर रहा है तो यह देख कर मुझे अपने आप पर काबू न रहा और मैंने सहसा "या सरिया अलजबल" के शब्द कहे ताकि वह पहाड़ के साथ हो जाएं और अपने आप को सुरक्षित कर लें। अभी कुछ दिन ही गुज़रे थे कि सारिया का संदेश वाहक उसका पत्र लेकर आया जिसमें यह लिखा था कि जुमे के दिन शत्रु से हमारा सामना हुआ तो हमने सुबह की नमाज़ से लेकर जुमे के समय तक उनसे युद्ध किया तो ठीक उसी समय हमने एक पुकारने वाले की आवाज़ सुनी जो उच्च स्वर से कह रहा था कि पहाड़-पहाड़ जिस पर हम पहाड़ के साथ हो गए। और ऐसा आक्रमण किया कि हम अपने शत्रु पर विजयी होने लगे यहां तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपमानित कर दिया और हमने स्पष्ट विजय प्राप्त की। 12 लेखक।

نصر الله المؤمنَ جعَل له الحاسدين۔ تَلطَّفْ بالناس وتَرحَّمْ عليهم أنت فيهم بمنزلة موسى فاصبر على جور الجائرين۔ أحسِب الناس أن يُترَكوا أن يقولوا آمنّا وهم لا يُفتَنون۔ الفتنة هنا فاصبر كما صبر أولوا العزم۔ ألا إنها فتنة من الله ليحبّ حبًّا جَمًّا۔ وفى الله أجرك ويرضى عنك ربك ويتم اسمك۔ وإن يتخذونك إلا هُزوًا قل: إنى من الصادقين فانتظِروا آياتى حتى حين۔ الحمد لله الذى جعَلك المسيحَ ابن مريم۔ قل هذا فضل ربى وإنى أجرّد نفسى من ضروب الخطاب وإنى أحد من المسلمين۔ يريدون أن يطفئوا نور الله بأفواههم والله يُتمّ نوره ويحيى الدين۔ نريد أن نُنزِّل عليك

साथ ख़ुदा की सहायता होती है। तुझे ख़ुशख़बरी हो हे मेरे अहमद! तू मेरी मुराद और मेरे साथ है। मैंने तेरे सम्मान का वृक्ष स्वयं अपने हाथ से लगाया। क्या उन लोगों को आश्चर्य है? तू कह ख़ुदा चमत्कारों वाला है वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है चुन लेता है। वह अपने कामों के बारे में पुछा नहीं जाता और लोग पूछे जाते हैं और इन दिनों को हम लोगों में फेरते रहते हैं और जब ख़ुदा मोमिन की सहायता करता है तो उसके कई ईर्ष्यालु निर्धारित कर देता है। लोगों के साथ नर्मी का व्यवहार कर और उन पर रहम कर तू उनमें मूसा के समान है इसलिए अत्याचारियों के अत्याचार पर सब्र कर। क्या लोग यह विचार कर बैठे हैं कि यह कहने पर कि हम ईमान ले आए वे छोड़ दिए जाएंगे और आज़माए नहीं जाएंगे। इस स्थान पर एक आज़माइश है अत: सब्र कर जैसा कि साहसी नबियों ने सब्र किया। ख़बरदार वह आज़माइश ख़ुदा तआला की ओर से है ताकि वह तुझ से मुहब्बत करे। अल्लाह तआला तुझे तेरा बदला पूरा पूरा देगा और तेरा रब तुझ से राज़ी होगा और तेरे नाम को पूर्णता देगा और ये लोग तो केवल तुझे व्यंग्य का निशाना बनाते हैं। तू कह कि मैं निस्संदेह सच्चा हूँ। अत: तुम एक समय तक मेरे निशानों की प्रतीक्षा

آیات من السماء و نمزّق الاعداء کل ممزَّق۔ حُکم اللّٰہِ الرحمن لخلیفۃ اللّٰہ السلطان۔ فتوکّل علی اللّٰہ و اصنَعِ الفُلکَ بأعیننا و وحینا إن الذین یبایعونک إنما یبایعون اللّٰہ یدُ اللّٰہ فوق أیدیھم و أممٌ حَقَّ علیھم العذاب۔ و یمکرون و اللّٰہ خیر الماکرین۔ قُلْ عندی شھادۃ من اللّٰہ فھل أنتم مؤمنون۔ قل عندی شھادۃ من اللّٰہ فھل أنتم مسلمون۔ إن معی ربی سیھدین۔ رب أَرِنی کیف تحیی الموتٰی۔ رب اغفر وارحم من السماء۔ رب لا تذَرْنی فردًا و أنت خیر الوارثین۔ رب أَصْلِحْ أمّۃ محمد۔ ربنا افتح بیننا و بین قومنا بالحق و أنت خیر الفاتحین۔

करो। समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं जिसने तुझे मसीह इब्ने मरियम बनाया। तू कह कि यह मेरे रब का फ़ज़ल है और मैं तो अपने आप को समस्त प्रकार के नामों से पृथक रखता हूँ, और मैं तो मुसलमानों में से एक हूँ। वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मूंह की फूंकों से बुझा दें परन्तु अल्लाह तआला अपने नूर को पूर्णता तक पहुंचाएगा और धर्म को जीवित करेगा। हम तुझ पर आसमान से निशान भेजना चाहते हैं और शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहते हैं। रहमान ख़ुदा का आदेश है उसके ख़लीफ़ा के लिए जिसकी बादशाहत आसमानी है। अत: अल्लाह पर भरोसा रख। हमारी आँखों के सामने और हमारे आदेश से नांव बना जो तेरी बैअत करते हैं, वह तेरी नहीं बल्कि ख़ुदा की बैअत करते हैं अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर होता है और कई गिरोह ऐसे हैं जिन पर अज़ाब अनिवार्य हो चुका और वे उपाय कर रहे हैं और अल्लाह तआला सबसे अच्छा उपाय करने वाला है। उनको कह कि मेरे पास अल्लाह की गवाही है अत: क्या तुम ईमान लाओगे या नहीं? फिर उनको कह कि मेरे पास ख़ुदा की गवाही है अत: क्या तुम स्वीकार करोगे या नहीं? मेरे साथ मेरा रब है शीघ्र ही वह मेरा मार्ग खोल

و يخوّفونك مِن دونه إنك بأعيننا۔ سمّيتُك المتوكّل۔ يحمدك اللّٰه مِن عرشه۔ نحمدك و نصلّی۔ يا أحمد يتمّ اسمك ولا يتمّ اسمی۔ كن فی الدنيا كأنك غريب أو عابرُ سبيل و كن من الصالحين الصدّيقين۔ أنا اخترتُك و ألقيت عليك محبّة منی۔ خذوا التوحيدَ التوحيدَ يا أبناء الفارس۔ وبَشِّرِ الذين آمنوا أن لهم قدمَ صدقٍ عند ربهم۔ ولا تصعِّرْ لخَلْقِ اللّٰه ولا تسأَمْ من الناس واخفِضْ جناحك للمسلمين۔ أصحاب الصفّةِ وما أدراك ما أصحاب الصفّة؟ ترى أعينَهم تفيض من الدمع يصلّون عليك ربنا إننا سمعنا مناديًا ينادی

देगा। हे मेरे रब! मुझे दिखा कि तू कैसे मुर्दों को जीवित करता है। हे मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और आकाश से दया कर। हे मेरे रब! मुझे अकेला न छोड़ और तू सबसे बेहतर वारिस है। हे मेरे रब! मुहम्मद की उम्मत का सुधार कर। हे हमारे रब! हम में और हमारी क़ौम में सच्चा फ़ैसला कर दे और तू सब फ़ैसला करने वालों में से बेहतर है। और वे अल्लाह के अतिरिक्त तुझे औरों से डराते हैं। तू हमारी आँखों के सामने है मैंने तेरा नाम मुतवक्किल (ख़ुदा पर भरोसा करने वाला-अनुवादक) रखा। ख़ुदा अर्श से तेरी प्रशंसा कर रहा है। हम तेरी प्रशंसा करते हैं और तुझ पर दरूद भेजते हैं। हे अहमद! तेरा नाम पूर्ण हो जाएगा और मेरा नाम पूरा नहीं होगा। तू संसार में इस प्रकार रह कि जैसे तू एक प्रवासी अपितु एक यात्री है और नेक और सच्चे लोगों में से हो। मैंने तुझे चुन लिया और अपना प्रेम तुझ पर डाल दिया। तौहीद (एकेश्वरवाद) को पकड़ो, तौहीद को पकड़ो हे फ़ारस के बेटो! और तू उन लोगों को जो ईमान लाए यह ख़ुशख़बरी सुना कि उनका क़दम ख़ुदा के निकट सच्चाई का क़दम है और अल्लाह तआला की सृष्टि से अन्याय न कर और लोगों की मुलाक़ात से न थक और आज्ञापालन करने वालों के लिए अपने बाज़ू झुका जो सुफ़्फ़ा

للإيمان ربنا آمنا فاكتبنا مع الشاهدين۔ شأنك عجيب وأجرك قريب ومعك جند السماوات والارضين۔ أنت منى بمنزلة توحيدى وتفريدى فحان أن تُعانَ وتُعرَف بين الناس۔ بوركت يا أحمد و كان ما بارك الله فيك حقًّا فيك۔ أنت وجيهٌ فى حضرتى۔ اخترتُك لنفسى وأنت منى بمنزلة لا يعلمها الخلق۔ وما كان الله ليتركك حتى يميز الخبيثَ من الطيّب۔ انظُرْ إلى يوسف وإقباله والله غالب على أمره ولكن أكثر الناس لا يعلمون۔ أردتُ أن أَستخلِفَ فخلقتُ آدمَ ليقيم

में रहने वाले हैं और तू क्या जानता है कि सुफ़्फ़ा में रहने वाले क्या हैं? तू देखेगा कि उनकी आँखों से आंसू बहेंगे, वे तुझ पर दरूद भेजेंगे और कहेंगे कि हे हमारे ख़ुदा! हम ने एक पुकारने वाले की आवाज़ सुनी जो ईमान की ओर बुलाता है। हे हमारे रब! हम ईमान लाए। अत: हमें भी गवाहों में लिख। तेरी प्रतिष्ठा अद्भुत है और तेरा प्रतिफ़ल निकट है और आसमानों और ज़मीनों की एक सेना तेरे साथ है। तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरी तौहीद (एकेश्वरवाद) और तफ़रीद (एकत्व)। अत: वह समय आता है कि तू सहायता दिया जाएगा और संसार में प्रसिद्ध किया जाएगा। हे अहमद! तू बरकत दिया गया और जो कुछ अल्लाह ने तुझे बरकत दी वह तेरा ही अधिकार था। तू मेरी दरगाह में वजीह (दृढ़ मज़बूत जिसका चेहरा रोबदार हो) है मैंने तुझे अपने लिए चुना। तू मेरे समक्ष वह पद रखता है जिसको दुनिया नहीं जानती और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुझे छोड़ दे जब तक कि पवित्र और अपवित्र में अंतर करके न दिखा दे। युसूफ और उसकी स्वीकार्यता की ओर देख। अल्लाह तआला अपनी बात पर सामर्थ्यवान है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। मैंने चाहा कि मैं ख़लीफ़ा बनाऊं अत: मैंने आदम को पैदा किया ताकि वह शरीअत को स्थापित करे। मेरे वली की किताब अली की ज़ुलफ़िक़ार (तलवार) है। और यदि ईमान सुरय्या सितारे पर लटका होता तो फ़ारस के बेटों में से एक व्यक्ति उसे वहां

الشـــريعة ويحيـى الديـن۔ كتـاب الـولىّ ذوالفقـار عـلى ولـو كان
الإيمـان معلقـا بالثريـا لنـاله رجـل مـن أبنـاء الفـارس۔ يـكاد
زيتـه يضـىء ولـو لـم تمسسْـه نـار۔ جَـرِىُّ اللّٰهِ فى حُـلـل المرسـلين۔
قـل إن كنتـم تحبّـون الله فاتبعـونى يحببكـم الله۔ وصـلِّ عـلى
محمـد وآل محمـد سـيِّدِ وُلْدِ آدم وخاتَـمِ النبيـين۔ يرحمـك
ربـك ويعصمـك مـن عنـده وإن لـم يعصمـك النـاس۔ يعصمـك الله
مِـن عنـده وإن لـم يعصمـك أحـد مـن أهـل الارضـين۔ تبّتْ يـدا
أبى لهـب وتـبّ مـا كان له أن يدخـل فيهـا إلا خائفـا۔ ومـا أصابـك
فمـن الله واعلـم أن العاقبـة للمتقـين۔ وأَنـذِرْ عشـيرتك الاقربـين

से भी ले आता। संभव है कि उसका तेल रौशन हो जाए यद्यपि अग्नि ने उसे छुआ भी न हो। अल्लाह का रसूल समस्त रसूलों के लिबास में। कह कि यदि तुम ख़ुदा से प्रेम करते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम करे और मुहम्मद पर और मुहम्मद की क़ौम पर दरूद भेज जो समस्त मनुष्यों का सरदार और ख़ातमुन्नबिय्यीन है। तेरा रब तुझ पर दया करेगा और अपने पास से तेरी सुरक्षा का प्रबंध करेगा यद्यपि लोग तेरी रक्षा न करें। अल्लाह तआला अपने पास से तेरी रक्षा करेगा यद्यपि समस्त संसार के लोगों में से कोई भी तेरी रक्षा न करे। अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और उसका विनाश हो गया। उसको नहीं चाहिए था कि वह इस कार्य में (अर्थात कुफ्र करने और झुठलाने में) भाग लेता, परन्तु डरते हुए। जो तुझ पर आए वह अल्लाह की ओर से है और जान ले कि शुभ अंत संयमियों का होता है। और अपने निकट संबंधियों को आने वाले अज़ाब से डरा। हम उन्हें एक विधवा के बारे में भी अपना एक निशान दिखाएंगे और उसे तेरी ओर लौटाएंगे। यह बात हमारी ओर से निर्धारित हो चुकी है और हम ही करने वाले हैं। यह लोग मेरे निशानों को झुठलाते थे और मुझ पर व्यंग्य करते थे। अत: तुझे निकाह के बारे में खुशख़बरी हो यह बात तेरे रब की ओर से सच है। अत: तू संदेह

إنا سنُريهم آية من آياتنا فى الثيِّبة ونردّها إليك أمرٌ من لدنا إنا كنا فاعلين۔ إنهم كانوا يكذّبون بآياتى و كانوا بى من المستهزئين۔ فبشرى لك فى النكاح الحقُّ من ربك فلا تكوننّ من الممترين۔ إنا زوّجنا كَها لا مبدِّلَ لكلمات الله و إنا رادُّوها إليك إن ربك فعّالٌ لما يريد فضلٌ من لدنا ليكون آية للناظرين۔ شاتانِ تُذبَحان و كل من عليها فان۔ ونريهم آياتنا فى الآفاق وفى أنفسهم ونريهم جزاء الفاسقين۔ إذا جاء نصر الله والفتح وانتهى أمر الزمان إلينا أليس هذا بالحق بل الذين كفروا فى ضلال مبين۔ كنتُ كنزًا مخفيًّا فأحببتُ أن أُعرَف۔ إن السماوات والارض كانتا رَتْقًا ففتَقْنا

करने वालों में से न हो। हम ने उसको तेरे साथ मिला दिया है। अल्लाह तआला की बातें टल नहीं सकतीं और हम उसे तेरी ओर वापस लाएंगे। तेरा रब जो चाहता है करता है। यह हमारी कृपा है ताकि देखने वालों के लिए एक निशान हो। दो बकरियां ज़िबह की जाएंगी और धरती के समस्त लोग फ़ना होने वाले हैं। और हम उन्हें इर्द गिर्द तथा स्वयं उनके अस्तित्व में निशान दिखाएंगे और इन्हें हम अवज्ञाकारियों के दंड (का उदहारण) दिखाएँगे। जब अल्लाह तआला की सहायता और विजय आएगी और युग हमारी ओर लौटेगा (उस दिन कहा जाएगा कि) क्या यह सच्चाई नहीं थी? अपितु वे लोग जिन्होंने कुफ्र किया स्पष्ट गुमराही में हैं। मैं एक छुपा हुआ खज़ाना था अत: मैंने चाहा कि पहचाना जाऊं। आकाश और पृथ्वी बंद गठरी के समान थे अत: हम ने उनको खोल दिया। कह मैं केवल एक मनुष्य हूँ जिस पर वह्यी (ईशवाणी) की जाती है कि तुम्हारा उपास्य केवल एक है और समस्त भलाई और नेकी क़ुरआन में है और उसके रहस्यों तक केवल वही पहुँच सकते हैं जिनका हृदय पवित्र है। और मैंने इस से पहले एक आयु तुम में बिताई है अत: क्या तुम सोचते नहीं। कहो अल्लाह के आदेश ही वास्तविक आदेश हैं

همـا۔ قـل إنمـا أنـا بشـرٌ يـوحٰى إلیّ أنمـا إلهكـم إلهٌ واحـدٌ والخـير كله فی القـرآن لا يمسّـه إلا المطهَّـرون۔ ولقـد لبثـتُ فيكـم عمـرًا مِـن قبـله أفـلا تعقلـون۔ قـل إن هـدى الله هـو الهـدى وإن معـى ربى سـيهدين۔ رب اغفـر وارحـم مـن السـماء ۔ رب إنى مغلـوب فانتصِـرْ۔ إيـلى إيـلى لمـا سـبقتانى۔ يـا عبـد القـادر إنى معـك أسـمع وأرى۔ غرسـتُ لـك بيـدى رحمـتى وقـدرتى وإنـك اليـوم لدينـا مَكـينٌ أمـين۔ أنـا بُـدُّك الـلازم أنـا محييـك نفخـتُ فيـك مـن لدنى روحَ الصّـدق۔ وألقيـت عليـك محبـة مـنى ولتُصنَـع عـلى عيـنى كـزرعٍ أخـرجَ شَـطْأَه فـآزَرَه فاسـتغلظ فاسـتوى عـلى سـوقه۔ إنـا فتحنـا لـك فتحـا مبينـا ليغفـر لـك الله

और मेरा रब मेरे साथ है और वह अवश्य मेरे लिए मार्ग निकालेगा। हे मेरे रब! क्षमा कर और आकाश से कृपा भेज। हे मेरे रब! मैं पराजित हूँ तू मेरे शत्रू से बदला ले। हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ख़ुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? हे अब्दुल क़ादिर! मैं तेरे साथ हूँ, सुनता हूँ और देखता हूँ। मैंने अपने हाथ से अपनी कृपा और शक्ति का वृक्ष तेरे लिए लगाया और तू आज हमारे निकट प्रतिष्ठित और ईमानदार है। मैं तेरे लिए आवश्यक हूँ। मैं तुझे जीवित करने वाला हूँ। मैंने अपनी ओर से सच्चाई को तुझ में डाला। और मैंने तुझ पर अपनी ओर से प्रेम डाल दिया और ऐसा किया कि तू मेरी आँखों के सामने तैयार किया जाए उस खेती के समान जो अपनी कोंपल निकाले फिर उसे मज़बूत करे फिर वह मोटी हो जाए और अपने डंठल पर खड़ी हो जाए। हम ने तुझे स्पष्ट विजय दी ताकि अल्लाह तेरी ओर संबद्ध की जाने वाली ग़लतियों को, चाहे पहले की हों या पिछली मिटा दे। अत: तू शुक्र करने वालों में से हो जा। क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए पर्याप्त नहीं है? क्या अल्लाह तआला शुक्र करने वालों को जानने वाला नहीं है? अत: अल्लाह तआला ने अपने बंदे को स्वीकार कर लिया और लोगों के झूठे आरोपों से बरी साबित किया और

مـا تقـدَّمَ مـن ذنبـك و مـا تأخـر فكـنْ مـن الشـاكرين۔ أليـس الله بـكاف عبـده۔ أليـس الله عليمًـا بالشـاكرين۔ فقبِـل الله عبـدَه و بـرّأه ممـا قالـوا و كان عنـد الله وجيهـا۔ فلمـا تجـلّٰى ربـه للجبـل جعـله دَكًّا و الله مُوهِـنُ كيـد الكافريـن۔ و لنجعـله آيـة للنـاس و رحمـة منـا و لنعطيـه مَجْـدًا مـن لدنـا كذلـك نجـزى المحسـنين۔ أنـت معـى و أنـا معـك۔ سـرُّك سـرّى۔ لا تحـاط أسـرار الاولياء إنـك عـلى حـق مبـين۔ وجيهًـا فى الدنيـا و الآخـرة و مـن المقربـين۔ لا يصـدِّق السـفيه إلا ضربـة الإهـلاك۔ عـدوٌّ لى و عـدو لـك عجـلٌ جسـدٌ له خُـوار۔ قـل أتى أمـر الله فـلا تكـن مـن المسـتعجلين۔ يأتيـك قمـرُ الانبيـاء و أمـرُك يتـأتّى و كان حقـا علينـا نصـر المؤمنـين۔ يـوم يـجىء الحـق و ينكشـف الصـدق

वे अपने अल्लाह के निकट वजीह (रोबदार) हैं और जब ख़ुदा कठिनाइयों के पहाड़ पर प्रकटन करेगा तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा और अल्लाह काफ़िरों के उपायों को सुस्त कर देगा और ताकि हम उसे लोगों के लिए निशान और अपनी ओर से रहमत बनाएं और ताकि हम उसे अपनी ओर से प्रतिष्ठा प्रदान करें और हम इसी प्रकार उपकार करने वालों को बदला दिया करते हैं। तू मेरे साथ है और मैं तेरे साथ। तेरा भेद मेरा भेद है। वलियों के रहस्यों की गणना नहीं की जा सकती। तू खुले-खुले सच पर है। लोक-परलोक में प्रतिष्ठित तथा सानिध्य प्राप्त लोगों में से है। मूर्ख व्यक्ति हलाकत की मार को ही मानता है वह मेरा भी शत्रू है और तेरा भी। वह केवल एक मृत गाय का बछड़ा है जिसके अंदर से एक घृणित आवाज़ आ रही है। कह अल्लाह का आदेश आया समझो, इसलिए तुम जल्दबाज़ी न करो। तेरे पास नबियों का चांद आएगा और तेरा उद्देश्य आसानी से प्राप्त हो जाएगा और मोमिनों की सहायता करना हमारा दायित्व हो चुका है। उस दिन सच्चाई आएगी और स्पष्ट हो जाएगी और हानि उठाने वाले हानि उठाएंगे। और तुम उन पथ भ्रष्टों को देखोगे कि वे

ويخسر الخاسرون۔ وترى الغافلين يخرّون على المساجد ربنا اغفر لنا إنا كنا خاطئين۔ لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم وهو أرحم الراحمين۔ تموت وأنا راض منك۔ سلام عليكم طِبتم فادخلوها آمنين۔"

وأمّا عقائدنا التى ثبّتنا الله عليها فاعلم يا أخى أنّا آمنّا بالله ربًّا وبمحمدٍ صلى الله عليه وسلم نبيًّا وآمنّا بأنه خاتم النبيين۔ وآمنَّا بالفرقان أنه من الله الرحمن ولا نقبل كل ما يُعارض الفرقان ويُخالف بيّناته ومُحكماته وقصصه ولو كان أمرًا عقليًّا أو كان من الآثار التى سمّاها أهلُ الحديثِ حديثًا أو كان من أقوال الصحابة أو التابعين؛ لان الفرقان الكريم كتابٌ قد ثبت تواترُه لفظًا لفظًا وهو وَحْيٌ مَتلُوٌّ

सज्दागाहों पर गिर कर कह रहे होंगे कि हे हमारे रब! हमें क्षमा कर कि हम ग़लती पर थे। (उन्हें कहा जाएगा) आज तुम पर कोई दोष नहीं अल्लाह तुम्हें क्षमा कर देगा और वह सब से बढ़ कर दया करने वाला है। तू इस अवस्था में वफ़ात पाएगा कि मैं तुझ से राज़ी हूँगा। तुम्हारे लिए सलामती है और ख़ुशहाली है। अत: तुम इस में शांति के साथ प्रवेश करो।

और रहीं हमारी वे आस्थाएँ कि जिन पर अल्लाह ने हमें दृढ़ता पूर्वक स्थापित किया है तो मेरे भाई तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि हमारा यह ईमान है कि अल्लाह (हमारा) रब और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे नबी हैं और इस पर भी ईमान है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और हम ईमान लाते हैं कि पवित्र क़ुरआन रहमान ख़ुदा की ओर से है और हम प्रत्येक उस चीज़ को जो पवित्र क़ुरआन के विरुद्ध है, और उसके स्पष्ट निशानों, आदेशों और उसकी वर्णित की हुई घटनाओं के विरुद्ध है, स्वीकार नहीं करते चाहे वह मामला बौद्धिक हो या उसका संबंध उन चिन्हों से हो जिन्हें "अहले हदीस" हदीस के नाम से नामांकित करते हैं। या

قطعیّ یقینیّ و مَن شكّ فی قطعیته فهو كافر مردود عندنا و من الفاسقین۔ و القرآن مخصوص بالقطعیة التامّة و له مرتبة فوق مرتبة كل كتاب و كل وحی ما مسّه أیدی الناس و أما غیره من الكتب و الآثار فلا یبلغ هذا المقام و مَن آثرَ غیره علیه فقد آثرَ الشك علی الیقین۔

و كم مِن فِرق الإسلام یُخالف بعضهم بعضا فی أخذ بعض الاحادیث أو تركها فالاحادیث التی یقبلها الشافعیة لا یقبل أكثرها الحنفیةُ و التی یقبلها الحنفیة لا یقبلها الشافعیة و كذلك حال فِرق أُخری من المسلمین۔ و كم من حدیث ذكره الإمام البخاری فی صحیحه. و هو أصحُّ الكتب

उनका संबंध सहाबा या ताबईन के कथनों से हो क्योंकि पवित्र क़ुरआन ऐसी किताब है जिसकी निरंतरता एक-एक शब्द से सिद्ध है और वह अकाट्य तथा विश्वसनीय मतलू वह्यी (अर्थात क़ुरआनी वह्यी- अनुवादक) है और जो उसकी विश्वसनीयता में संदेह करे तो वह हमारे निकट काफ़िर, धुतकारा हुआ है और झूठों में से है और क़ुरआन पूर्ण विश्वसनीयता से विशिष्ठ है और उसकी श्रेणी प्रत्येक पुस्तक और वह्यी से उत्तम है। उसमें मनुष्य का कोई हस्तक्षेप नहीं और जो इसके अतिरिक्त पुस्तकें और चिन्ह हैं तो उनकी पहुँच इस स्तर तक नहीं और यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरी पुस्तक को क़ुरआन पर प्राथमिकता दे तो उसने संदेह को विश्वास पर प्राथमिकता दी।

इस्लाम के कितने ही सम्प्रदाय हैं जो हदीसों का अध्ययन करने और उन्हें छोड़ने में एक-दूसरे से मतभेद रखते हैं। अत: वे हदीसें जिन्हें "शाफी" स्वीकार करते हैं उनमें से अधिकतर हदीसों को "हनफी" स्वीकार नहीं करते और जिन्हें "हनफी" स्वीकार करते हैं उन्हें "शाफी" स्वीकार नहीं करते और यही अवस्था मुसलमानों के अन्य सम्प्रदायों की है और कितनी ही ऐसी हदीसें हैं जिनका इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह बुख़ारी में वर्णन किया है और वह अहले हदीस के निकट अल्लाह की किताब (अर्थात पवित्र

عند أهل الحديث بعد كتاب الله ولكن لا يقبل الفرقة الحنفية أكثر أحاديثه كحديث قراءة الفاتحة خلف الإمام والتأمينِ بالجَهر وغيره ولا يكونون إلى تلك الاحاديث من الملتفتين. ولكن ما كان لاحد أن يسمّيهم كافرين أو يحسبهم من الذين أضاعوا الصلاة ومن المبتدعين.

فالحق أن الاحاديث أكثرها آحادٌ ولو كانت فى البخارى أو فى غيره ولا يجب قبولها إلا بعدَ التحقيق والتنقيد وشهادةِ كتاب الله بأن لا يُخالفها فى بيّناته ومُحكماته وبعدَ النظرِ إلى تعامُل القوم وعِدّة العاملين. فإذا كان الامر كذلك فكيف يُكفَّرُ أحدٌ لترك حديثٍ يعارِض القرآنَ أو لاجل

क़ुरआन) के बाद सबसे प्रमाणित पुस्तक है। परन्तु हनफी सम्प्रदाय उसकी अधिकतर हदीसों को स्वीकार नहीं करता जैसे इमाम के पीछे फ़ातिहा पढ़ने और आमीन ऊंचे स्वर में पढ़ने वाली हदीस इत्यादि। वे इन हदीसों की ओर ध्यान नहीं देते परन्तु फिर भी किसी को यह अधिकार नहीं कि वह उन्हें काफ़िर कहे या उनके बारे में यह विचार करे कि उनकी नमाज़ व्यर्थ हो गई और यह कि वे अधर्मी हैं।

अत: सच यह है कि अधिकतर हदीसें अहाद (एकांकी) हैं चाहे वे बुख़ारी में हों या उसके अतिरिक्त किसी और पुस्तक में। ऐसी (हदीसों) को छान-बीन, जांच-पड़ताल और अल्लाह की पुस्तक की उस गवाही के बाद कि वे (हदीसें) स्पष्ट क़ुरआनी आयतों और आदेशों के विरुद्ध नहीं, उन्हें स्वीकार करना अनिवार्य है। इसी प्रकार क़ौम के निरंतर अनुपालन और उनकी अधिकता को देखने के पश्चात ही उन (हदीसों) को स्वीकार किया जा सकता है। अत: जब परिस्थिति यह है तो किसी व्यक्ति को इस कारण कि उसने क़ुरआन के विरुद्ध हदीसों को छोड़ दिया है या उस अर्थ के कारण जो हदीसों को पवित्र क़ुरआन के अनुसार बना कर मुसलमानों को आपत्तिकर्ताओं से मुक्ति दिला दे, क्योंकर काफ़िर कहा जा सकता है

تأويلٍ يجعل الحديث مطابقًا بالقرآن و يُنجّى المسلمين من أيدى المعترضين؟ و كيف تكفِّرون المؤمن بالله و رسوله و كتابه لاجل حديث من الآحاد الذى يُحتمل فيه شائبة كذب الكاذبين؟ فانظر مثلا إلى مسألة وفاة المسيح عليه السلام فإنها قد ثبت ببيّنات كتاب الله المتواتر الصحيح و تشهد على وفاته قريبًا من ثلاثين آية بالتصريح قد كتبناها فى كتابنا: "إزالة الاوهام" إفادةً للطالبين۔ فإن تذكرتَ بعد ذلك حديثًا دمشقيًّا الذى ذُكر فى "مسلم" فاعلم أنه فُسّر على ظاهره و لا شك أنه يُعارض الفرقان على تفسيره الظاهر و يُخالف بيّناته و يخالف أحاديث أُخرى قد

तुम अल्लाह, उसके रसूल और उसकी किताब पर ईमान लाने वालों को "अहाद" हदीसों में से एक ऐसी हदीस के कारण कैसे काफ़िर ठहरा सकते हो? जिस में झूठों के झूठ की मिलावट का अनुमान भी हो। उदाहरण स्वरूप आप मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के मामले पर दृष्टि डालो कि वह क़ुरआन की निरंतर स्पष्ट आयतों से सिद्ध हो चुकी है और उनकी मृत्यु पर लगभग तीस आयतें स्पष्ट रूप से गवाही दे रही हैं जिन्हें हम ने अपनी पुस्तक "इज़ाला औहाम" में सत्याभिलाषियों के लाभार्थ लिख दिया है। परन्तु इसके बाद भी यदि तुम दमिश्क़ वाली उस हदीस का वर्णन करो जो सही मुस्लिम में दर्ज है तो जान लो कि उसकी व्याख्या ज़ाहिर पर (अनुमान करते हुए) की गई है और इसमें कोई संदेह नहीं कि वह हदीस ज़ाहिरी व्याख्या के अनुसार पवित्र क़ुरआन और उसकी आयतों के विरुद्ध है इसी प्रकार उन दूसरी हदीसों के भी विरुद्ध है जिनका वर्णन हम "इज़ाला औहाम" में कर चुके हैं और कोई मुसलमान इस पर राज़ी नहीं होगा कि वह क़ुरआन को जो विश्सनीय है एक ऐसी हदीस के लिए छोड़ दे जो विश्वास की श्रेणी तक नहीं पहुंचती। यदि हम ऐसा करें और "अहाद" हदीसों को क़ुरआन पर

ذكرناها فى "الإزالة" ولا يرضى مسلم أن يترك القرآن اليقينى القطعى بحديث واحد لا يبلغ إلى مرتبة اليقين۔ ولو فعلنا كذلك وآثرنا الآحاد على كتاب الله لفسد الدين وبطلت الملة ورُفع الإمان وتزلزل الإيمان واشتد علينا صولة الكافرين۔ نعم نؤمن بالقدر المشترك الذى لا يُخالف القرآن وهو أنه يجيء المسيح الموعود مجدّدًا على رأس المائة عند غلبة النصارى على ظهر الارض ويخرج فى أرض أفسدوها وجعلوا مسلمى أهلها متنصّرين فيكسر صليبهم ويقتل خنازيرهم ويُدخل السعادة فى الباقين۔ وإن حاكَ فى صدرك شيء من لفظ نزولٍ عند منارة دمشق فقد أثبتنا أن النزول من

प्राथमिकता दें तो निस्संदेह धर्म में बिगाड़ उत्पन्न हो जाएगा, शरीअत झूठी हो जाएगी, ईमान उठ जाएगा और धर्म भ्रष्ट हो जाएगा और काफ़िरों का हम पर आक्रमण तीव्र हो जाएगा। हाँ (यह ठीक है) कि हम प्रत्येक उस सांझी बात पर विश्वास रखते हैं जो क़ुरआन के विरुद्ध न हो और वह यह है कि ईसाइयों की समस्त संसार पर विजय के समय मसीह मौऊद युग के आरंभ में मुजद्दिद के रूप में आएगा और ऐसे भू-भाग से प्रकट होगा जिसमें ईसाइयों ने उपद्रव फैलाया होगा और वहां के मुसलमानों को ईसाई बना लिया होगा। अत: वह (मसीह मौऊद) उनकी सलीब को तोड़ेगा और उनके सूअरों को क़त्ल करेगा और शेष लोगों को पवित्र करेगा और यदि तेरे दिल में "दमिश्क़ के मिनारे के निकट अवतरण" के शब्दों से कोई संदेह उत्पन्न हो तो हम यह (पहले) सिद्ध कर चुके हैं कि आकाश से अवतरण ऐसा असंभव और झूठी (बात) है जिसका पवित्र क़ुरआन सत्यापन नहीं करता अपितु स्पष्ट शब्दों से उसका खंडन करता है।

अत: यदि तू पवित्र क़ुरआन पर ईमान रखता है और उसे उसके अतिरिक्त अन्य (पुस्तकों) पर प्राथमिकता देता है तो फिर तू मसीह की मृत्यु

السماء محال باطل لا يصدّقه الفرقان بل يكذّبه بقول مبين۔
فإن كنت تؤمن بالفرقان وتؤثره على غيره فآمِنْ بوفاة المسيح وعدم نزوله من السماء كما تقرأ فى كلام رب العالمين۔ والعجب أن لفظ النزول من السماء لا يوجد فى حديثٍ وإن هو إلا فِرْية المفترين۔ والاحاديث كلها قد اتفقت على أن المسيح الموعود من هذه الامة فإن النبوة قد خُتِمَت وإن رسولنا خاتم النبيين. والنزول فى الحديث بمعنى نزول المسافر من مكان إلى مكان فإن النَزيل هو المسافر فلو سلم صحة الحديث فيثبت أن المسيح الموعود أو أحدٌ من خلفائه يسافر من أرض وينزل بدمشق فى وقتٍ من الاوقات فلم يبكون الناس

पर और उसके आकाश से न आने पर भी ईमान ला जैसा कि तू रब्बुल आलमीन की वाणी (क़ुरआन) में पढ़ता है। और विचित्र बात तो यह है कि "आकाश से अवतरण" के शब्द किसी हदीस में मौजूद नहीं और यह केवल झूठ गढ़ने वालों का झूठ है। समस्त हदीसें इस बात पर सहमत हैं कि मसीह मौऊद इस उम्मत में से होगा। क्योंकि शरीअत वाली नबूवत तो समाप्त हो चुकी। और यह विश्वसनीय बात है कि हमारे रसूल ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। हदीस में शब्द "नुज़ूल" यात्री के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर ठहरने के अर्थों में आया है क्योंकि "नज़ील" यात्री को कहते हैं। अत: यदि हदीस की प्रमाणिकता को माना जाए तो इस से यह सिद्ध हो जाता है कि मसीह मौऊद या स्वयं उसके ख़लीफ़ाओं में से कोई एक अपने देश से यात्रा करेगा और किसी समय दमिश्क़ में नज़ूल करेगा। फिर न जाने क्यों यह लोग दमिश्क़ के शब्द पर रोना-पीटना करते हैं? अपितु दमिश्क़ के मिनारे के पास नुज़ूल के शब्द से तो यह सिद्ध होता है कि मसीह मौऊद का वह देश जिस में आप का प्रकटन होगा, कोई दूसरा देश है और दमिश्क़ में आप केवल यात्रियों के समान प्रवेश करेंगे। यह भावार्थ तब लिया जाएगा

على لفظ دمشق؟ بل يثبت من لفظ النزول عند منارة دمشق أن وطن المسيح الموعود الذى يخرج فيه هو مُلكٌ آخر وإنما ينزل بدمشق بطريق المسافرين۔ هذا إذا سلّمنا الحديث بألفاظه وفيه كلام لإن الاحاديث من الظنيات إلا الحصة التى ثبتت من تعامل المؤمنين۔ ولو كانت الآثار المدونة فى البخارى وغيره من اليقينيات كالقرآن الكريم للزم مِن إنكارها الكفرُ كلزوم الكفر من إنكار آيات القرآن كما لا يخفى على الماهرين فى الشرع المتين۔ فحينئذٍ يلزم أن يكون المسلمون كلهم كافرين ويلزم أن لا ينجو من ورطة الكفر أحد من أكابر المسلمين وأصاغرهم بل من الائمة السابقين

जब हम हदीस को उसके शब्दों के साथ मानें और इस भावार्थ में मतभेद है क्योंकि हदीसें अनुमानित हैं सिवाए उस भाग के जो मोमिनों के निरंतर अनुपालन से सिद्ध हो गईं हों। और यदि वे रिवायतें जो बुख़ारी इत्यादि में लिखीं हैं वे पवित्र क़ुरआन के समान विश्वसनीय बातों में से होतीं तो उनके इंकार से उसी प्रकार कुफ़्र अनिवार्य होता जैसे क़ुरआन की आयतों के इंकार से कुफ़्र अनिवार्य होता है जैसा कि यह बात शरीअत के विद्वानों से छुपी हुई नहीं, तो ऐसी अवस्था में समस्त मुसलमानों का काफ़िर होना अनिवार्य ठहरता और यह भी अनिवार्य ठहरता कि मुसलमानों के बड़े और छोटों अपितु पूर्व इमामों में से कोई भी कुफ़्र के चक्कर से सुरक्षित न रहे। क्योंकि कुछ हदीसों को छोड़ना और कुछ दूसरी हदीसों का इंकार करना एक ऐसी सामान्य कठिनाई है जिसने समस्त फ़ुक़हा, विद्वानों और मुहद्दिसों को अपने घेरे में लिया हुआ है।

इसी के साथ जब हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबिया हैं तो फिर इस में कोई संदेह नहीं कि जो व्यक्ति भी इस मसीह के नुज़ूल पर ईमान लाता है जो बनी इस्राईल का नबी है तो उसने ख़ातमुन्नबिय्यीन

المتقدمين؛ لأن ترك بعض الأحاديث وإنكار بعضها بلاءٌ عام أحاطت الفقهاء والأئمة والمحدثين أجمعين.

ومع ذلك. إذا كان نبيّنا صلى الله عليه وسلم خاتم الأنبياء فلا شك أنه مَن آمنَ بنزول المسيح الذى هو نبى من بنى إسرائيل فقد كفَر بخاتم النبيين. فيا حسرة على قومٍ يقولون إن المسيح عيسى بن مريم نازلٌ بعد وفاة رسول الله ويقولون إنه يجيء وينسخ من بعض أحكام الفرقان ويزيد عليها وينزل عليه الوحى أربعين سنة وهو خاتم المرسلين. وقد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "لا نبى بعدى" وسمّاه الله تعالى خاتم الأنبياء فمِن أين يظهر نبى

का इंकार किया। अत: ऐसे लोगों पर अफ़सोस जो यह कहते हैं कि मसीह ईसा इब्ने मरियम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद अवतरित होंगे। इसी प्रकार वे यह भी कहते हैं कि वह आ कर पवित्र क़ुरआन के कुछ आदेशों को निरस्त कर देंगे और उन (आदेशों) में वृद्धि भी करेंगे और यह कि उन पर चालीस साल वह्यी अवतरित होगी और वह ख़ातमुल मुरसलीन होंगे। यद्यपि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं और यह कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम ख़ातमुल अंबिया रखा है तो फिर बताओ कि उनके बाद नबी कहाँ से प्रकट होगा? हे मुसलमानों की जमाअत! तुम क्यों विचार नहीं करते? तुम अत्याचार और झूठ के मार्ग से भ्रमों के पीछे चलते हो और क़ुरआन को त्याग रहे हो और स्वयं झूठ का अनुसरण कर रहे हो।

हम अल्लाह के फ़रिश्तों पर और उनके पदों और श्रेणीबद्ध होने पर ईमान रखते हैं और यह हमारा ईमान है कि उनका अवतरण नूर (प्रकाशों)

بعده؟ ألا تتفكرون يا معشر المسلمين؟ تتبعون الأوهام ظلما وزورًا وتتخذون القرآن مهجورًا وصرتم من البطّالين۔

وإنَّا نؤمن بملائكة الله ومقاماتهم وصفوفهم ونؤمن أن نزولهم كنزول الأنوار لا كترحُّل الإنسان من الديار إلى الديار لا يبرحون مقاماتهم ومع ذلك كانوا نازلين وصاعدين۔ وهم جند الله وجِيرةُ السماوات وخلطاؤها لا يُفارقون مقاماتهم وإنَّ منهم إلا له مقام معلوم يفعلون ما يؤمرون ولا يشغلهم شأن عن شأن ويؤدّون طاعة رب العالمين۔ ولو كان مدار انصرام مهماتهم تباعُدَهم من مقاماتهم لما جاز أن تُتوفَّى الأنفس فى آنٍ واحد بل وجب أن لا يموت ميّت فى

के अवतरण के समान होता है न कि मनुष्य के एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाने के समान। वे अपने निर्धारित स्थानों को नहीं छोड़ते। इसी प्रकार वे उतरते भी हैं और चढ़ते भी हैं। वे अल्लाह के लश्कर और आकाशों के रहने वाले और उनके हमनशीन हैं। वे अपने ठिकानों से पृथक नहीं होते और उन में से हर एक का एक निर्धारित स्थान है। वे वही कुछ करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है। उनका एक कार्य दूसरे कार्य में रुकावट नहीं बनता और वे समस्त संसारों के प्रतिपालक ख़ुदा के आदेशों का पालन करते हैं। और यदि फ़रिश्तों को अपनी मुहिम के प्रबंध के लिए अपने स्थानों से पृथक होना पड़ता तो बहुत से लोगों का एक समय में मृत्यु पाना संभव न होता। अपितु यह अनिवार्य होता कि पूर्व दिशा में मरने वाला कोई व्यक्ति उस क्षण में जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित किया हुआ था उस समय तक न मरता जब तक मौत का फ़रिश्ता पश्चिम में किसी दूसरे ऐसे ही व्यक्ति की रूह निकालने से फ़ारिग़ न हो जाता जो पहले मरने वाले व्यक्ति का उसी बताए गए क्षण में

المشرق فی الآن الذی قدّر اللّٰہ لہ قبل أن یفرغ مَلَکُ الموت مِن قبض نفس رجلٍ فی المغرب الذی ھو شریك بالمائت الاوّل فی الآن المذکور وقبل أن یرحل إلی المشرق وإنّ ھذا إلا کذب مبین۔ إنما أمرھم إذا أرادوا شیئا بِحُکْمِ اللّٰہ أن یقولوا لہ کن فیکون وما کان لھم أن ینزلوا بشِقّ الانفس وصرف الوقت ونقل الخطوات وترکِ مکان کسکّان الارضین.

ونؤمن بأن حشر الاجساد حق والجنۃ حق والنار حق وکل ما جاء فی القرآن حق وکلّ ما علّمَنا رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم حق وھو خیر الانبیاء وختم المرسلین۔ ومن عزا إلینا ما یُخالف الشرع والفرقان مثقال ذرۃ فقد افتری

भागीदार था और फिर पूर्व की ओर यात्रा करके वहां न पहुँचता। और यह स्पष्ट झूठ है। उन फ़रिश्तों का तो केवल यह कार्य है कि जब वे अल्लाह के आदेश से किसी बात का संकल्प कर लेते हैं तो उसे कहते हैं कि हो जा, तो वह हो कर रहता है। उन्हें उतरने के लिए जान को जोखिम में डालने, समय व्यय करने, भाग दौड़ करने और ज़मीन पर बसने वाले लोगों के समान स्थानांतरण की आवश्यकता नहीं पड़ती।

और हमारा ईमान है कि क़यामत के दिन हश्र-ए-अजसाद (अर्थात क़यामत के दिन सबको इकट्ठा किया जाना-अनुवादक) सत्य है और जन्नत सत्य और नर्क सत्य है और जो कुछ क़ुरआन में लिखा है वह सब का सब सत्य है और जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सिखाया है वह सब सत्य है। और आप ख़ैरुल अंबिया और ख़तमुल मुर्सलीन हैं। और जो कोई हमारी ओर ऐसी चीज़ संबद्ध करता है जो तनिक भर भी शरीअत और पवित्र क़ुरआन के विरुद्ध है तो निस्संदेह उसने हम पर झूठ बाँधा और झूठ बोलने वालों के समान स्पष्ट झूठा आरोप लगाया। सुनो कि हम हर उस बात से घृणा करते हैं जो हमारे रसूलुल्लाह

علينا وأتى ببهتان صريح كالمفترين. ألا إنّا بريئون من كل أمرٍ يُنافي قول رسولنا صلى الله عليه وسلم وإنّا مؤمنون بجميع أمورٍ أخبر بها سيّدنا ونبيُّنا وإن لم نعلم حقيقتها أو نُودَع معارفها بإلهام مبين.

وإنّا بريئون من كل حقيقة لا يشهدها الشرع واعتصمنا بحبل الله بجميع قلبنا وجميع قوتنا وجميع فهمنا وأسلمنا الوجهَ لك ربَّنا فاجعلْنا من المحسنين. ربنا أفرِغْ علينا صبرًا على ما نُؤذَى وتوفَّنا مسلمين. وما أُفَضِّلُ روحي على أرواح إخواني ولكن الله قد منَّ عليَّ وجعلني من المنعمين. فمن آلائه أنه أنعم عليَّ بالمكالمات

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन के विरुद्ध हो। और हमारा उन समस्त बातों पर ईमान है जो हमारे सय्यद व मौला और हमारे नबी ने हमें बताईं चाहे हम उन बातों की वास्तविकता को न भी जानते हों या उनके रहस्य स्पष्ट इल्हाम के द्वारा हमें बताए गए हों।

हम हर उस वास्तविकता से विमुख हैं जिसकी शरीअत (पवित्र कुरआन) गवाही न दे। और हम ने अल्लाह की रस्सी को दिलो जान से और अपनी पूरी शक्ति से और अपने पूर्ण विवेक और दूरदर्शिता से दृढ़ता पूर्वक पकड़ लिया है। हे हमारे रब! हम ने अपने आप को पूर्णरूपेण तेरे सुपुर्द कर दिया है अत: तू हमें मुहसनीन (जिन पर उपकार किया गया - अनुवादक) में सम्मिलित कर! हे हमारे रब! जो कष्ट हमें दिए जाते हैं तू हमें उस पर पूर्ण संयम प्रदान कर और मुसलमान रहते हुए हमें मृत्यु दे। मैं अपने प्राणों को अपने भाइयों के प्राणों पर प्राथमिकता नहीं देता। हाँ अल्लाह ने मुझ पर उपकार किया और मुझे पुरुस्कृत लोगों में सम्मिलित किया। अत: उस के उपकारों में से एक यह है कि उसने मुझ पर वह्यी और इल्हाम किया और ऐसे-ऐसे रहस्यों का ज्ञान प्रदान किया कि यदि

والمخاطبات وعلّمنی من أسرارٍ ما كنت أن أعلمها لو لا أن يعلّمنی الله وجعلنی للإنبياء من الوارثين. ومِن آلائه علیَّ أنه وجد قوم النصاری يفسدون فی الارض ويتّخذون العبد إلهًا بغير الحق ويُضلّون عباد الله فبعثنی لاكسر صليبهم وأمزّق بعيدهم وقريبهم وأَجُذّ هامَ المجرمين. ومن آلائه أنه آتانی آياتٍ من السماء وأتمّ الحجّة علی الاعداء وخجّل كل بخيل وضنين. فوعِزّتِه وجلالِه إنی علی حق مبين. وتری كالوابل آياتِ صدقی إن تصاحبنی كالطالبين. ووالله ثم تالله إن جاءنی أحد علی قدم الصدق والطلب لرأی شيئا من آيات ربی إلی أربعين. وأكفَرَنی الحسداء قبل أن

स्वयं अल्लाह इन (रहस्यों) का ज्ञान मुझे प्रदान न करता तो मुझे कभी इन का ज्ञान नहीं हो सकता था। और उसने मुझे नबियों का उत्तराधिकारी बनाया। इसी प्रकार मुझ पर यह भी उसका उपकार है कि जब उसने नसारा (ईसाइयों) की क़ौम को ज़मीन में उपद्रव करते हुए और एक कमज़ोर व्यक्ति को अकारण ख़ुदा बना कर अल्लाह के बन्दों को गुमराह करते हुए पाया तो उसने उनकी सलीबों को तोड़ने और उनके निकट और दूर के लोगों को चूर-चूर करने और मुजरिमों की खोपड़ियाँ तोड़ने के लिए मुझे अवतरित किया। और उसके इन्हीं उपकारों में से एक यह भी है कि उसने मुझे आसमानी निशान दिए और शत्रुओं पर हुज्जत पूरी की और यों हर कंजूस को शर्मिंदा किया। अत: उसकी प्रतिष्ठा और सम्मान की सौगंध! निस्संदेह मैं स्पष्ट सच्चाई पर हूँ। और यदि तू सत्य के अभिलाषियों के समान मेरी संगत में आए तो तू मेरी सच्चाई के निशान मूसलाधार बारिश के समान देखेगा। ख़ुदा की सौगंध हाँ ख़ुदा की सौगंध। यदि कोई व्यक्ति सच्ची नीयत और सत्याभिलाषी बन कर मेरे पास आएगा तो वह चालीस दिन तक मेरे रब के निशानों में से कोई निशान अवश्य देख लेगा। खेद

يبـارونى للنضـال و يتوازنـوا فى الكمـال و يتحـاذوا فى الفعـال وعـيّرونى طاغـين۔ ولمـا رأوا الآيـات قالـوا إنّ هـذا إلا سـحرٌ مبـين أو جَفْـرٌ ونجـومٌ فمشـوا خبـطَ عشـواء و كانـوا قومًـا عمـين۔ أشـرقت الشـمس ومـا كان معهـا غيـمٌ ولكـن لا ينفـع العُمْـىَ نـورٌ ولا ضـوء واسـتخلصهم الشـيطان لنفسـه فهـو لـهم قريـن۔

يـا أخى تحسـبنى كافـرًا وإنى مؤمـنٌ موحِّـدٌ أتبـع رسـولى وسـيدى صـلى الله عليـه وسـلم وجعلـنى الله وارثًـا لعلومـه وباعِـه وبَعاعِـه وأرجـو أن يشـيّع نعشـى فى اتّباعـه ومـع ذلـك أخضـع لـك بالـكلام وأستنـزل منـك

कि ईर्ष्या के कारण उन्होंने मुझे झुठलाया इस से पहले कि मुक़ाबले के लिए मैदान में आते और कमाल (गुणों) में मेरा मुक़ाबला करते और अच्छे कर्मों में मेरी बराबरी करते परन्तु उन्होंने सरकशी (उद्दंडता) करते हुए मेरी बुराई की और जब उन्होंने निशानों को देखा तो कहने लगे कि यह तो स्पष्ट रूप से जादू या ज्योतिष का ज्ञान है। फिर वे बिना सोच विचार किए अन्धाधुंद चलने लगे और वास्तव में वे अंधे लोग हैं। सूर्य अपनी पूरी चमक के साथ चमका और उसके साथ कोई बादल न था। परन्तु अंधों को न तो कोई नूर लाभ दे सकता है और न कोई रौशनी। शैतान ने उन लोगों को अपने लिए चुन लिया है और वह उन का साथी है।

हे मेरे भाई! तू मुझे काफ़िर समझता है जबकि मैं एकेश्वरवादी मोमिन हूँ। मैं अपने रसूल और सय्यद व मौला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुयायी हूँ। अल्लाह ने मुझे आप के ज्ञान, शिष्टाचार और आदतों और आध्यात्मिक रहस्यों का वारिस बनाया है और मैं आशा रखता हूँ कि मेरा जनाज़ा भी आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण में उठेगा। इन सब बातों के होते हुए भी मैं तेरे साथ बात करने में नरमी

رفــق الكــرام فــلا تغلُــظْ عــلىَّ ولا تُشـمِتْ بى الكُفّــارَ ولا تُــرِنى النــارَ ولا تســلُلْ سـيفك البتّــارَ والمؤمــن هَــيِّنٌ لَــيِّنٌ والصالحــون يحملــون أوزار إخوانــهم ويســارعون إلى تسـلية قلوبــهم وتســرية كروبــهم ولا يريــدون أن يقتلوهــم تقتيــلاً وأن يجعلوهــم عضــين۔

والاختــلاف فى فِـرق الإســلام كثـيرة ولكــن لا تنهــضُ فرقــة لقتــل فرقــة وقــد قــال رســول الله صــلى الله عليــه وســلم : إن اختــلاف أمّــتى رحمــة۔ فأَطْفِــئْ يــا أخى نــارَك وأَغْمِــدْ بتّــارَك واقتــدِ بســنن الصالحــين۔ لِــمَ تــؤذى مــن يحــبُّ خــير الــورى؟ أَتَسُــرُّ بــه روحَ المصطفٰــى؟ أو تُرضــى بــه ربَّنــا

अपनाता हूँ और तुझ से भी सम्मानित लोगों जैसी नरमी की आशा रखता हूँ। अत: तू मुझ से कठोरता का व्यवहार न कर और काफ़िरों को मुझ पर उपहास का अवसर न दे और मुझे आग न दिखा और अपनी तेज़ तलवार न निकाल। मोमिन तो विनम्र और नर्म स्वभाव का होता है और नेक लोग अपने भाइयों के बोझ उठाते हैं और उनके दिलों को सांत्वना देने के लिए और उनके दुखों का निवारण करने के लिए तीव्रता से आगे आते हैं और कदापि उन्हें क़त्ल करना नहीं चाहते और न वे उन्हें टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हैं।

इस्लामी संप्रदायों में बहुत से मतभेद हैं परन्तु कोई संप्रदाय दूसरे संप्रदाय को क़त्ल करने के लिए नहीं उठता और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरी क़ौम का मतभेद रहमत है। इसलिए हे मेरे भाई! अपनी क्रोधाग्नि को शांत कर और अपनी तेज़ तलवार को मियान में रख और जो तरीक़े सालिहों (सद्‌पुरुषों) के हैं उन्हें अपना। तू ऐसे व्यक्ति को जो ख़ैरुल वरा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रेमी है क्यों कष्ट देता है? क्या तू मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह

الاعلى؟ فاعلم أن الله ورسوله بريّانِ من الذين يُعادون أولياء هما فإن كنت ترجو شفاعة رسولنا فلا تؤذ المحبّين المصافين واتق الله ثم اتق الله ثم اتق الله ليغفر ذنوبك ويُحِلَّك مقعد المنعَمين. أيها الإنسان الضعيف المحتاج إنّ مَقْتَ الله أكبر من مقتك

هَدَاك الله هَل قَتْلى يُباحُ
وهَل مِثْلى يُدمَّرُ أو يُجاحُ

وهل فى مذهب الإسلام أنى
أرى خزيًا ولم يَثبُتْ جُناحُ

को प्रसन्न कर रहा है? या इस से हमारे महान ख़ुदा को राज़ी कर रहा है? अत: स्मरण रख कि अल्लाह और उसका रसूल ऐसे लोगों से विमुख हैं जो उनके वलियों से शत्रुता रखते हैं। यदि तू हमारे रसूल की शिफ़ाअत (समर्थन) का इच्छुक है तो श्रद्धापूर्वक प्रेम करने वालों को कष्ट न दे। अल्लाह से डर (मैं फिर कहता हूँ कि) अल्लाह से डर, (फिर कहता हूँ कि) अल्लाह से डर ताकि वह तेरे पाप क्षमा करे और तुझे पुरुस्कृत लोगों के पदों पर बिठाए। हे मोहताज और असहाय मनुष्य! निस्संदेह अल्लाह की नाराज़गी तेरी नाराज़गी से बहुत बढ़ कर है अत: उसकी कुल्हाड़ी से डर और बहुत डरने वाले लोगों में सम्मिलित हो जा।

अनुवाद:-

1) अल्लाह तुझे हिदायत दे। क्या मेरा क़त्ल वैध है? और क्या मुझ जैसा व्यक्ति तबाह और बर्बाद किया जाएगा?

2) और क्या इस्लाम धर्म में ऐसा है कि मैं अपमानित किया जाऊं जबकि गुनाह भी सिद्ध न हुआ हो?

وصـــدقى بَـيّنٌ للناظـــرينا
كتـــابُ الله يشهـــدُ والصِّحـــاحُ

ومـــا كان الاذى خُلـــقَ الكـــرامِ
ولكـــن هكـــذا هبّـــتْ ريـــاحُ

وإنّ الحُـــرَّ يفـــهمِ قـــولَ حُـــرّ
وتشـــفى صـــدرَه الكَلِـــمُ الفِصَـــاحُ

ولا أخشـــى العـــدا فى سُـــبل ربى
وأرض الله واسعـــة بَـــدَاحُ

لنـــا عنـــد المصائـــب يـــا حبيـــبى
رضـــاءُ ثـــم ذوقٌ وارتيـــاحُ

---

3) और मेरी सच्चाई देखने वालों के लिए स्पष्ट है। अल्लाह की किताब भी गवाही देती है और हदीस की प्रमाणित छः पुस्तकें भी।

4) और दुख देना शरीफों की आदत नहीं परंतु इसी प्रकार से हवाएं चल पड़ी हैं।

5) और निस्संदेह शरीफ़ आदमी शरीफ़ की बात को समझ जाता है और सरल एवं सुबोध बातें उसके दिल को संतुष्टि प्रदान करती हैं।

6) और मैं अपने रब की राहों में दुश्मनों से नहीं डरता और अल्लाह की धरती व्यापक है अत्यंत व्यापक।

7) हे मेरे प्यारे! हमें संकटों के समय (पहले) ख़ुदा की इच्छा पर प्रसन्न रहना फिर आनंद और आराम प्राप्त होता है।

فـلاَ تقـفُ الهـوى وانظُـرْ
مـآلى وربّـى إنّـه نُصـحُ قَـراحُ

ومِـن عجـب أُشـرّفكم وأدعـو
ومنـك المَشْـرفيّـةُ والرِّمـاحُ

وبَلْدتُكـم حديقـةُ كلّ خـير
فمنكـم سيّـدى يُـرجى الصـلاحُ

كمثلـك سـيّدٌ يؤذيـنِ عجـبٌ!
وفى بـغدادَ خـيراتٌ كِفـاحُ

أرى يـا حِـبِّ تذكُـرنى بسـبٍّ
فمـا هـذا؟ وسِـيرتكم سـماحُ

8) तू इच्छाओं के पीछे न पड़ और मेरे अंजाम को देख और मेरे रब की क़सम! निस्संदेह यह शुद्ध रूप से भलाई चाहना है।

9) और यह विचित्र बात है कि मैं तुम्हारा सम्मान करता हूं और तुम्हें बुलाता हूं परन्तु तेरी ओर से तलवारें और भाले (दिखाए जाते) हैं।

10) और तुम्हारा शहर (बग़दाद) तो हर भलाई का बागीचा है। हे श्रीमान! तुमसे तो अच्छाई की आशा की जाती है।

11) तेरे जैसा सरदार मुझे कष्ट दे तो आश्चर्य है हालांकि बग़दाद में बहुत सी भलाइयां मौजूद हैं।

12) हे मेरे दोस्त! मैं देखता हूं कि तू मुझे गालियों से याद करता है यह कैसा शिष्टाचार है हालांकि तुम्हारा जीवन चरित्र तो क्षमा करने का है।

أخذْنـا كلَّ مـا أعطيـتَ تحفًـا
وصـافينا و زاد الاِنشـراحُ

فخُـذْ مـنى جـوابى كالهدايـا
ولكـن كان منـك الا فـتتاحُ

إذا اعتلقَـتْ أظافـيرى بخصـمٍ
فمرجِـعهُ نَـكالٌ أو طُـلاحُ

وإنْ وافيـتنى حبًّـا وسـلمًا
فلِلـزُّوّارِ بُشـرى والـنجاحُ

وإن لـم تقرَبَـنْ أنهـارَ مـاءٍ
فـلا تعطيـك مِـن مـاءٍ ريـاحُ

---

13) जो कुछ तूने दिया उसे हमने उपहार के रूप में ले लिया है और हमने दोस्ती करनी चाही और दिल की प्रफुलता बढ़ गई।

14) अत: मुझसे मेरा उत्तर उपहार के तौर पर ही ले। किंतु प्रारंभ तेरी ओर से ही हुआ है।

15) जब मेरे नाखून किसी दुश्मन के शरीर में गढ़ जाते हैं तो उसका अंजाम भयभीत करने वाला दंड और बर्बादी होता है।

16) और यदि तू प्रेम और मित्रता से मेरे पास आए तो दर्शन करने वालों के लिए खुशख़बरी और सफ़लता है।

17) और यदि तू पानी की लहरों के नीचे न जाए तो हवाएं तुझे कुछ भी पानी नहीं देंगी।

ورشحُ الصلد سهلٌ عند جهدٍ
و يوبقكم قُعودٌ و انسطاحُ

وما نألوك نصحًا يا حَبِيبِي
وجاهَدْنا ليرتبط النَصاحُ

ونُصحى خالص لا نوعَ هزلٍ
وجِدٌّ لا يخالِطُه المُزاحُ

فيا حِبّى تَفكَّرْ فى كلامى
فإن الفكر للتقوى وِشاحُ

ولى وجدٌ لقومى فوق وجدٍ
وما وجدُ الثواكل والنِّياحُ

---

18) और प्रयास करने पर चट्टान का टपक पड़ना तो आसान है और साहस की कमी और ज़मीन से लगे रहना तुम्हें मार रहा है।

19) और हे मेरे दोस्त! हम तेरे शुभचिंतन में कमी नहीं करते और हमने तो कोशिश की है कि शुभचिन्ता के संबंध सुदृढ़ हों।

20) और मेरी शुभचिंता निष्ठापूर्ण है व्यर्थ प्रकार की नहीं और गंभीर है जिसमें कोई हंसी ठट्ठा सम्मिलित नहीं।

21) अत: हे मेरे दोस्त मेरी बातों पर सोच-विचार से काम ले क्योंकि सोच विचार तो संयम का अलंकृत हार है।

22) और मुझे अपनी क़ौम के लिए हर दर्द से बड़ा दर्द है। और उन औरतों के दर्द को, जिनके बच्चे मर जाएं और उनके रोने चिल्लाने की मेरे दर्द से क्या तुलना।

إليكم يا أولى مجدٍ إليكمْ
وإن لم تنتهوا فالوقت لاحُ

ولى قدرٌ عظيم عند ربّى
وسُؤلى لا يُرَدُّ ولا يُزاحُ

ومثلى حين يبكى فى دعايٍ
فيسعى نحوه فضلٌ مُتاحُ

وكادت تلمَعَنْ أنوارُ شمسى
فيَتْبَعها الورى إلا الوَقاحُ

ويأتى يومُ ربّى مِثلَ بَرْقٍ
فلا تبقى الكِلا بُ ولا النُباحُ

---

23) रुक जाओ! हे बुज़ुर्गों! रुक जाओ। यदि तुम न रुको तो समय मलामत (निंदा) करेगा।

24) और मेरे रब के समक्ष मेरा बड़ा पद है और मेरी दुआ रद्द नहीं की जाती और न ही टाली जाती है।

25) और मेरे जैसा आदमी जब दुआ में रोता है तो उसकी ओर अटल कृपा दौड़कर आती है।

26) और निकट है कि मेरे सूर्य के प्रकाश चमकें और फिर सिवाए बेशर्म के सारा संसार उसके पीछे चलेगा।

27) और मेरे रब का दिन बिजली के समान आएगा। फिर न कुत्ते शेष रहेंगे न ही उनका भौंकना।

ولی مِن لُطف ربی کل یومٍ
مراتبُ للعدا فیها افتضاحُ

ونورٌ کامل کالبدر تامٌ
ووجهٌ یستنیر ولا یُلاحُ

ونحن الیوم نُسقَی مِن غَبوقٍ
وبعد اللیل عیدٌ واصطباحُ

وأعطانی المهیمن کل نورٍ
ولی مِن فضله رَوحٌ وراحُ

أتقتلنی بغیر ثبوت جرمٍ
فقُلْ ما یصدُرَنْ منی جُناحُ؟

28) और मेरे लिए मेरे रब की कृपा से प्रतिदिन ऐसे पद हैं कि शत्रुओं के लिए उनमें अपमान ही अपमान है।

29) और मुझे चौदहवीं के चंद्रमा के समान पूर्ण प्रकाश प्राप्त है और ऐसा चेहरा प्राप्त है जो चमकता है और परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

30) और आज तो हम शाम की शराब (अर्थात अध्यात्म ज्ञान) पी रहे हैं और रात गुज़र जाने के बाद ईद होगी और फिर सुबह की शराब।

31) और मुहैमिन (निगरान) ख़ुदा ने मुझे प्रत्येक नूर (अध्यात्म प्रकाश) प्रदान किया है और मुझे उसकी कृपा से आराम और चैन प्राप्त है।

32) क्या तू मुझे अपराध के सबूत के बिना क़त्ल करेगा? अत: बता तो सही मुझसे कौन सा गुनाह हो रहा है।

قتلنـــا الكافريـــن بســـيف حُجـــجٍ
فـــلا يُـــرجى لـــقاتِلنا فـــلاحُ

وليـــس لنـــا ســـوى البـــارى مـــلاذٌ
ولا تُـــرْسٌ يصـــون ولا السِّـــلاحُ

أتعلـــم كيـــف يَســـفَعُ بالنواصـــى
مليـــكٌ لا يناوحـــه الطِّـــماحُ

يَهُـــدُّ الـــربّ ذروةَ كلّ طَـــودٍ
وتتبَعـــه الاسنّـــة والصِّـــفاحُ

أتقتلـــنى بســـيف يـــا خصيمـــى؟
وقتـــلى عنـــدكم أمـــرٌ مُبـــاحُ

---

33) हमने काफ़िरों को तर्कों की तलवार से क़त्ल कर दिया है। इसलिए हमारे क़त्ल का इरादा करने वाले के लिए कोई सफ़लता की आशा नहीं हो सकती।

34) और हमारे लिए ख़ुदा के अतिरिक्त कोई शरण स्थल नहीं और न उसके अतिरिक्त कोई ढाल है जो बचाए और न हथियार।

35) क्या तू जानता है कि वह बादशाह किस प्रकार मस्तकों से पकड़कर खींचेगा जिसके सामने घमंड ठहर नहीं सकता।

36) (मेरा) रब हर टीले की चोटी को ढाह देगा और भाले एवं तलवारें उसका अनुसरण करेंगे।

37) हे मेरे दुश्मन क्या तू मुझे तलवार से क़त्ल करता है? और मेरा क़त्ल तुम्हारे निकट एक वैध बात है?

وقـد مِتْنـا بسـيف مـن حبيـبٍ
عـلى ذرّاتـنا تسـفى الـرِّياحُ

وأَيْـن سـيوفكم يـا شـيخَ قـومٍ
وحـلَّ بقـاعكم حـزبٌ شِـحاحُ

وصـال الحـزب واختلسـوا كذئـبٍ
ولـم يـكُ أمـرهم إلا اكتـساحُ

وقـد صُبّـتْ عليكـم كلُّ رُزْءٍ
فمـا فى بيتـكم إلا الـرَّداحُ

وكـم مِـن مسـلمٍ ذَابُـوا بجـوعٍ
وعاشـوا جائعيـن ومـا اسـتراحوا

---

38) हालांकि हम तो पहले ही प्रियतम की एक तलवार से मर चुके हैं और हमारे कणों पर हवाएं चल रही हैं।

39) हे क़ौम के शेख़! तुम्हारी तलवारें कहां हैं हालांकि तुम्हारे आंगनों में एक लालची गिरोह उतर चुका है।

40) और उस गिरोह ने आक्रमण कर दिया है और वे भेड़िए की तरह झपट पड़े हैं और उनका काम सब कुछ लूट लेने के अतिरिक्त कुछ न था।

41) और तुम पर हर संकट डाला गया है फिर तुम्हारे घरों में अंधकार के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रहा।

42) और कितने ही मुसलमान भूख से पिघल गए और भूखे ही रहे और आराम न पाया।

وبحـــر العلـــم يعـــرِف مـــوج بحـــرى
ولكـــن عنـــدكم مـــاء وَجـــاحُ

نظمـــت قصيـــدتى مـــن ارتجـــالٍ
وأيـــن الفضـــل لـــولا الاِقـــتراحُ

فخُـــذْ مـــنى بعفـــوٍ كالكـــرامِ
ودونـــك مـــا هـــو الحـــقّ الصُّـــراحُ

و إن بارزتـــنى مـــن بعـــد نُصـــحى
فـــتعلم أنـــنى بـــطلٌ شَنـــاحُ

يـا أخى حفظـك الله ! إنى قـد كتبـت هـذا المكتـوب

43) और ज्ञान का सागर ही मेरे सागर की मौज को पहचानता है परंतु तुम्हारे पास तो केवल सतही पानी है।

44) मैंने अपना क़सीदा फिलबदिया लिखा है और यदि फिलबदिया (बिना तैयारी के कही हुई कोई बात - अनुवादक) कहना न होता तो श्रेष्ठता कैसे (सिद्ध) हो सकती थी।

45) अत: इसे मुझसे क्षमा के साथ सुशील लोगों की तरह ले ले और जो खुली सच्चाई है उसे प्राप्त कर।

46) और यदि तू मेरी नसीहत के बाद भी मुझसे मुकाबला करे तो तू जान लेगा कि निस्संदेह मैं बहादुर जवांमर्द हूं।

हे मेरे भाई! अल्लाह आपकी रक्षा करे। मैंने आपको यह पत्र आप की

ترحّمًا على حالك وإصلاحًا لخيالك فاستشِفَّ لآلِيَه وَالْمَحِ السرّ المودَع فيه وقد أسمع أن أخلاقك تُحَبُّ و بِعَقْوَتِك يُلَبُّ وأنت باذلٌ خِرْقٌ ذو سماحةٍ وفتوّة من المحسنين. فلا أظن فيك أن تَرِدَ موردَ مأثمة وتَقِفَ موقفَ مندمة وتتَّبِعَ سبلَ تبعةٍ ومعتبةٍ بل أظن أن تميل إلى معذرةٍ عن بادرة. وظنى فيك جليل فحَقِّقْ حسن ظنى واتق الله إنى أراك مِن وُلْدِ الصالحين.

وإن كنت فى شك مما كتبنا فى كُتُبِنا فأىُّ حرج عليك من أن تسألنى كل ما لا تعرف حقيقته ولا تفهم ماهيته وعسى أن تحسب كلمةً من الكفر وهو من

हालत पर दया करते हुए और आपके दृष्टिकोण के सुधार के लिए लिखा है। इसलिए आप इस (पत्र) के मोतियों पर विचार करें और उसमें गुप्त भेदों एवं रहस्यों पर दृष्टि करें। मैं सुनता हूं कि आपके शिष्टाचार बहुत पसंद किए जाते हैं और आपके आंगन में बसेरा किया जाता है और आप अनुभवी, दानशील, वदान्य तथा उपकारियों में से एक जवांमर्द हैं। आपके बारे में मैं नहीं समझता कि आप गुनाह के घाट पर उतरेंगे और शर्मिंदगी के स्थान पर खड़े होंगे और गुनाह तथा ख़ुदा की अप्रसन्नता के मार्गों का अनुकरण करेंगे अपितु मैं विश्वास रखता हूं कि आप अपनी ग़लती से अफ़सोस की ओर झुकेंगे। मैं आपसे बड़ी आशा रखता हूं। अत: आप मेरी इस सुधारणा को सिद्ध कर दिखाएंगे। ख़ुदा से डरें। मैं आपको नेक लोगों की संतान समझता हूं।

यदि आपको वास्तव में उन लेखों के बारे में जो हमने अपनी पुस्तकों में लिखे हैं कोई संदेह है, तो इसमें क्या हानि है कि आप जिस वास्तविकता से अपरिचित हैं और उसके मर्म को नहीं समझते वह सब कुछ मुझसे पूछ लें।

معارف كتاب الله وحقائق الدين. والعاقل يتأهّب دائما لمزايلة مركزه عند وجدان الحق المبين. فقُمْ وأَفْعِم لك سَجْلا من مائنا المَعين. وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين.

* * *

बिल्कुल संभव है कि जिसे आप कुफ्र का कलिमा समझते हैं वह अल्लाह की किताब (क़ुरआन) के अध्यात्म ज्ञान और (इस्लाम) धर्म की सच्चाई हों, एक बुद्धिमान को जब स्पष्ट सच्चाई का ज्ञान प्राप्त हो जाए तो वह अपनी विचारधारा से हट जाने पर हमेशा तैयार रहता है। अत: उठ और हमारे इस पवित्र और बहते पानी से अपना डोल भर ले। हमारी अंतिम पुकार यह है कि समस्त प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए हैं जो समस्त लोकों का प्रतिपालक है।

* * *